सुबह सवेरे

A Daily News Magazine
भोपाल
शुक्रवार, 05 दिसंबर, 2025

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 95, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

'लो अर्थ ऑर्बिट' में कैसे ले जा रहे हैं छह भारतीय युवा

उदित हिंदुजा

एक अस्थायी लैब के बीचोंबीच, जहां सर्किट बोर्ड, उलझी हुई तारें और डक्ट टेप के रोल इधर-उधर पड़े हैं, वहां एक अधूरी मशीन रखी है, जिस पर अभी काम होना बाकी है। नीले लेबल उसके ऑनबोर्ड कंप्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक पावर सिस्टम और बैटरी पैक को दिखाते हैं।

यह मशीन ऐसे होरिजॉन की ओर जा रही है जिन्हें देखा नहीं जा सकता है। यह एक सैटेलाइट है, जो जल्द ही लो अर्थ ऑर्बिट (LEO) में भेजा जाएगा, जहां भारतीय इनोवेटर्स की एक नई पीढ़ी वैश्विक दौड़ में हिस्सा ले रही है। LEO अब अंतरिक्ष में सबसे महत्वपूर्ण जगह बन गया है। यह हैदराबाद का सैटेलाइट TakeMewSpace है, जो इस तक पहुंच को आसान बनाना चाहता है। TakeMewSpace के फाउंडर रौनक कुमार सामंत्रे ने कहा-'हम एक ऐसा प्लेटफॉर्म बना रहे हैं, जहां कोई भी आइडिया ऑर्बिट में भेजा जा सके। उनकी योजना आसमान में डेटा सेंटर बनाने की है, जहां कंप्यूटिंग जमीन की बजाय ऑर्बिट में होगी।'

IIT, BITS पिलानी और अन्य इंजीनियरिंग कॉलेजों के करीब आधा दर्जन ग्रैजुएट भारत को आधुनिक स्पेसफ्लाइट के अगले चरण–LEO सैटेलाइट्स–की ओर ले जा रहे हैं। हैदराबाद एक हब बन रहा है, जहां स्काईरूट लॉन्च व्हीकल (रॉकेट) बना रहा है और ध्रुव स्पेस सैटेलाइट प्लेटफॉर्म से लेकर ग्राउंड स्टेशन तक फुल-स्टैक सॉल्यूशंस दे रहा है। वहीं बेंगलुरु में पिक्सेल पृथ्वी की निगरानी के लिए सैटेलाइट्स की सीरीज बना रहा है। धरती से लगभग 400 से 1000 किमी ऊपर स्थित LEO तक पहुंचना सबसे आसान है और यह तेज़ रेडिएशन से प्राकृतिक रूप से सुरक्षित रहता है। इसलिए यह आधुनिक सैटेलाइट एप्लिकेशन के लिए एक बेहतरीन जगह है। यूजर बिना किसी देरी के सैटेलाइट इंटरनेट पा सकते हैं, संस्थान जलवायु डेटा जुटा सकते हैं और वैज्ञानिक कृषि भूमि की हाई-रेजोल्यूशन तस्वीरें ले सकते हैं।

SpaceX के स्टारलिंक ने साबित कर दिया कि LEO सबसे फायदेमंद क्षेत्र है। स्काईरूट एयरोस्पेस के को-फाउंडर और CEO पवन कुमार चंदना ने कहा, जो अपने पहले रॉकेट विक्रम 1 को LEO तक पहुंचाने की तैयारी में लगे हैं। तीन अरब लोगों के पास हाई-स्पीड इंटरनेट नहीं है। सभी को जोड़ने के लिए अंतरिक्ष सबसे अच्छा तरीका है। यह ग्लोबल है।

हैदराबाद के बेगमपेट में अपने ऑफिस की ऊपरी मंजिल पर ध्रुव स्पेस 300 से ज्यादा सैटेलाइट्स से मिलने वाला डेटा ट्रैक करता है। यह P-DoT है, ध्रुव का सबसे छोटा सैटेलाइट प्लेटफॉर्म। कंपनी किसी भी सैटेलाइट मिशन के तीनों स्तंभ–स्पेस, लॉन्च, और ग्राउंड–को कवर करना चाहती है। 'हमें एहसास हुआ कि दुनिया हजारों सैटेलाइट्स की तरफ जा रही है,' ध्रुव के फाउंडर और CEO संजय नेकांति ने कहा। 'अगर भारत को 1000 सैटेलाइट बनाने हैं, तो इसके लिए इन्फ्रास्ट्रक्चर भी होना चाहिए।'

स्पेस सेगमेंट में, ध्रुव पहले ही अलग-अलग वज़न श्रेणियों में प्लेटफॉर्म बना रहा है और '500 किलो वर्ग प्लेटफॉर्म' की ओर बढ़ रहा है। हर एक की अपनी अलग भूमिका होती है।

नेकांति ने कहा, 'सैटेलाइट 96 मिनट में पृथ्वी का चक्कर लगा लेते हैं–इसलिए वे बहुत सारा डेटा इकट्ठा करते हैं। और उनसे संपर्क करने का अधिकतम समय सिर्फ 14 मिनट होता है। हमारा लक्ष्य हमेशा भारत के लक्ष्य के साथ जुड़ा रहा है। सरकार चाहती है कि वैश्विक स्पेस टेक मार्केट में भारत की हिस्सेदारी बढ़े। यहीं भारतीय निजी स्पेस टेक कंपनियों को बड़ी सफलता मिली है–दुनिया भर में स्वदेशी बनाए गए सबसिस्टम बेचने में।

TakeMewSpace में रौनक कुमार सामंत्रे इसे अपनी 'कैश काउ' कहते हैं। उनकी वेबसाइट सैटेलाइट उपकरणों की ई-कॉमर्स साइट जैसी दिखती है, जिसमें कीमतें और 'add to cart' (कार्ट में जोड़ें) बटन होते हैं। एक बैटरी पैक 1,04,900 रुपये में मिलता है और एक ऑनबोर्ड कंप्यूटर 8,20,190 रुपये में। एक 16 CubeSat Bus (क्यूबसैट बस) की कीमत 2.8 करोड़ रुपये से ज्यादा है। अन्य भारतीय स्पेस स्टार्टअप्स, जैसे Gala&Eye Space (गैलेक्सीआई स्पेस) और N Space Tech (एन स्पेस टेक), उनके उत्पाद खरीदते हैं। हमारे साइज का सैटेलाइट आसानी से 6 से 7 करोड़ रुपये में बनता है, जिसे हमने घटाकर 1 करोड़ रुपये से भी कम कर दिया है,'फाउंडर सामंत्रे ने अपनी टीम की ओर गर्व से देखते हुए कहा। TakeMewSpace कोई स्पेस-ग्रेड पार्ट नहीं इस्तेमाल करता। अपनी खुद की रकम के अलावा कंपनी ने 5 करोड़ रुपये बाहरी निवेशकों से जुटाए हैं। 'अगले साल हम छह सैटेलाइट भेजेंगे।'

पवन कुमार चंदना ने टॉप फ्लोर के कैफेटेरिया में जल्दी से खाना खाकर कहा, 'एक बड़े जियोस्टेशनरी सैटेलाइट की जगह अब आप LEO में हजारों सैटेलाइट का नेटवर्क रख सकते हैं। स्थानीय और विदेशी निवेशकों से लगभग 100 मिलियन डॉलर जुटाने के बाद स्काईरूट का लक्ष्य पहला भारतीय प्राइवेट रॉकेट LEO में भेजना है। चंदना का कहना है कि लो अर्थ ऑर्बिट तक पहुंचने के लिए ऊर्जा कई गुना ज्यादा लगती है। 'LEO में सैटेलाइट डालने के लिए लगभग 8 किलोमीटर प्रति सेकंड की स्पीड चाहिए।'

स्काईरूट को एक रॉकेट स्पेस में भेजने में लगभग 2 मिलियन डॉलर खर्च होता है, लेकिन चंदना कहते हैं कि एक लॉन्च से 10 मिलियन डॉलर तक कमाई हो सकती है, ग्राहक और उनकी कक्षा की जरूरतों के आधार पर। और कंपनी SpaceX से अलग मॉडल पेश करती है।

ISRO में इंजीनियर रहे चंदना IIT खड़गपुर के पूर्व छात्र हैं। उन्होंने 2018 में स्काईरूट की शुरुआत पूर्व ISRO इंजीनियर और IIT मद्रास के पूर्व छात्र नागा भारत डाका के साथ की।

वह निजी क्षेत्र की ज्यादातर तरक्की का श्रेय इसरो को देते हैं। 2020 में भारत सरकार ने IN-SPACe (इंडियन नेशनल स्पेस प्रमोशन एंड ऑथराइजेशन सेंटर) बनाया ताकि निजी क्षेत्र की भागीदारी बढ़ सके। अहमदाबाद में इसका मुख्यालय विक्रम-एस लॉन्च से सिर्फ पांच महीने पहले बना। 'भारत में पहला प्राइवेट रॉकेट लॉन्च हमारा था। 2017 से 2019 के बीच नेकांति के साथ उनके पुराने दोस्त चैतन्य डोरा सुरपरेड्डी, अभय एगो़र और कृष्ण तेज पेनामाकुरु जुड़े – सभी BITS पिलानी के ग्रेजुएट। चारों और उनके परिवार काम के बाहर भी साथ समय बिताते हैं।' मैं हमेशा फुल-स्टैक सॉल्यूशन करना चाहता था, लेकिन 2017 में निवेशकों को मनाना मुश्किल था,'नेकांति ने कहा। 'हम 163वें निवेशक पर जाकर सफल हुए।'

रौनक कुमार सामंत्रे ने भुवनेश्वर के कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी से कंप्यूटर साइंस की पढ़ाई की और माइक्रोसॉफ्ट में भी काम किया। 2019 में रिलायंस इंडस्ट्रीज ने NowFloats को खरीद लिया। इसके बाद सामंत्रे ने ऐसे सेक्टर की तलाश शुरू की जो अगले दस सालों में महत्वपूर्ण हो।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

एयरपोर्ट में हाहाकार, स्टाफ की कमी से अटकी इंडिगो

● इंडिगो की 300 फ्लाइट्स कैंसिल, जयपुर व इंदौर, सब जगह हाहाकार

दिल्ली में हजारों यात्री परेशान, पुणे में 8 घंटे का इंतजार, 3 यात्री बेहोश

नई दिल्ली (एजेंसी)। एविशन सेक्टर के नए सुरक्षा नियमों की वजह से देश की सबसे बड़ी एयरलाइन कंपनी इंडिगो लगातार तीसरे दिन क्रू की कमी से जूझ रही है। इससे इंडिगो के ऑपरेशन पर बुरा असर पड़ा है। न्यूज एजेंसी के अनुसार, गुरुवार को सिर्फ मुंबई, दिल्ली और बेंगलुरु एयरपोर्ट पर ही इंडिगो की 300 से ज्यादा फ्लाइट्स कैंसिल हुई हैं। पुणे एयरपोर्ट पर एक पैसेंजर ने बताया कि आठ घंटे से ज्यादा का इंतजार करना पड़ रहा है। एयरपोर्ट के दोनों फ्लोर यात्रियों से भरे हैं। तीन पैसेंजर्स बेहोश भी हो गए। एयरलाइन की तरफ से फ्लाइट कैंसिलेशन का कोई मैसेज भी नहीं आ रहा है। दिल्ली एयरपोर्ट पर आज इंडिगो की कुल 95 उड़ानें रद्द हुई हैं। इनमें 48 दिल्ली से जाने और

47 आने वाली घरेलू और इंटरनेशनल फ्लाइट्स थीं। वहीं मुंबई में 86, बेंगलुरु में 50, हैदराबाद में 70 फ्लाइट रद्द हुई हैं।

● **इंडिगो के पास सबसे ज्यादा प्लेन, इसलिए ज्यादा असर**– एयरलाइन दिन भर में लगभग 2,300 घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय उड़ानें ऑपरेट करती है। यह संख्या एयर इंडिया के एक दिन में संचालित उड़ानों की तुलना में लगभग दोगुनी है। इतने बड़े पैमाने पर, यदि 10–20 प्रतिशत उड़ानें भी देर से चलें या रद्द हों, तो इसका मतलब होता है 200–400 उड़ानें प्रभावित होना। हजारों यात्रियों के लिए बड़ी मुश्किलें आना। बुधवार को भी इंडिगो की 200 से ज्यादा उड़ानों पर असर पड़ा था। डीजीसीए ने 1 नवंबर से काम से जुड़े नियमों में बदलाव किए हैं।

भारत पहुंचे पुतिन से गले मिले पीएम मोदी

एयरपोर्ट पर रिसीव किया, रेड कार्पेट वेलकम दिया

एक ही गाड़ी में रवाना हुए दोनों, प्राइवेट डिनर दिया

नई दिल्ली (एजेंसी)। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन भारत पहुंच गए हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने एयरपोर्ट पर उन्हें रिसीव किया। दोनों नेताओं ने एक दूसरे को गले लगाया। मोदी और पुतिन एक ही गाड़ी में बैठकर एयरपोर्ट से रवाना हुए। रूस-यूक्रेन जंग शुरू होने के बाद पुतिन का यह पहला भारत दौरा है। पीएम मोदी ने उनके सम्मान में एक प्राइवेट डिनर की मेजबानी की। पुतिन करीब 30 घंटे तक भारत में रहेंगे। पुतिन के भारत पहुंचने से पहले रूस के कई मंत्री दिल्ली पहुंच चुके हैं। इनमें डिप्टी प्रधानमंत्री डेनिस मांतुरोव, रक्षा मंत्री सर्गेई शोइगु और कृषि मंत्री दिमित्री पेट्रोव शामिल हैं। पुतिन की इस यात्रा का मकसद खासकर ऐसे समय में भारत-रूस सामरिक और आर्थिक साझेदारी को मजबूत करना है, जब भारत के अमेरिका के साथ संबंधों में तेज गिरावट आई है। शुक्रवार को होने वाली शिखर वार्ता में रक्षा सहयोग को बढ़ाने, द्विपक्षीय व्यापार को बाहरी दबावों से सुरक्षित रखने और छोटे 'मॉड्यूलर रिएक्टर' में संभावित सहयोग पर विशेष ध्यान दिए जाने की संभावना है।

प्रदेश में जल-पर्यटन का केंद्र बनेगी शिकारा सेवा : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

सीएम ने किया बड़े तालाब के बोट क्लब पर 20 नवीन शिकारा नाव सेवा का शुभारंभ, साड़ी और जैकेट खरीदी

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि राजा भोज की नगरी भोपाल में लगभग एक हजार साल पहले बने बड़े तालाब में 'शिकारा नाव' सेवा का शुभारंभ ऐतिहासिक अवसर है। इन नवीन 20 शिकारों के माध्यम से पर्यटकों को कश्मीर की प्रसिद्ध डल झील का आनंद, झीलों की नगरी भोपाल में ही मिल जाएगा। शिकारों में पर्यटकों के लिए खान-पान एवं आरामदायक बैठक व्यवस्था की गई है। ये शिकारे प्रदेश के जल-पर्यटन (वॉटर टूरिज्म) को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान दिलवाएंगे। प्रदेशवासी पर्यटन सेवा का लाभ उठाने के लिए आगे आएं। एम.पी. टूरिज्म, वॉटर स्पोर्ट्स गतिविधियों को भी आगे बढ़ा रहा है। शिकारा सेवा का आनंद उठाते हुए पर्यटक स्वदेशी उत्पादों की खरीद भी कर पाएंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश ने वन्य जीवों के पुनर्वास में भी इतिहास रचा है। आज अंतर्राष्ट्रीय चीता दिवस पर कूनो में विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने गुरुवार को बोट क्लब भोपाल पर 'शिकारा नाव' सेवा को झंडी दिखाने के बाद यह विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में विधानसभा अध्यक्ष श्री नरेन्द्र सिंह तोमर, हरियाणा के विधानसभा अध्यक्ष श्री हरविंदर कल्याण, नगरीय विकास एवं आवास मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय, नेता प्रतिपक्ष श्री उमंग सिंघार, विधायक एवं अध्यक्ष श्री हेमंत खंडेलवाल विशेष रूप से उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में वन्य जीव पर्यटन को लेकर आपार संभावनाएं विद्यमान हैं। नर्मदा वैली सहित प्रदेश की बड़ी-बड़ी जल परियानाओं के माध्यम से पर्यटकों को आकर्षित करने वाली गतिविधियां को बढ़ाया जा रहा है। राज्य सरकार पर्यटन क्षेत्र में विकास के नए कीर्तिमान स्थापित कर रही है। पिछले एक साल में उज्जैन आने वाले पर्यटकों की संख्या 7 करोड़ के पार पहुंच गई।

शिकारे की सैर का लिया आनंद– मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शिकारों को फ्लेगऑफ करने के बाद बड़े तालाब में शिकारे की सैर का आनंद लिया और उपलब्ध सुविधाओं की सराहना की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव और गणमान्य नागरिकों ने शिकारा बोट रेस्टोरेंट से चाय, पोहा, समोसे एवं फलों का जायका लिया। साथ ही फ्लोटिंग बोट मार्केट से मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश की पारम्परिक कला बाघ और बटिक वस्त्रों, जैविक उत्पादों आदि की खरीदारी भी की।

पर्यटन विकास से स्थानीय स्तर पर बढ़ेंगे रोजगार के अवसर : तोमर

विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा कि राजधानी की इतनी बड़ी झील में शिकारा सेवा की शुरुआत बहुत आकर्षक है। इससे प्रदेश में पर्यटन के अवसर बढ़ेंगे, पर्यटकों की संख्या बढ़ेगी तो स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर भी उपलब्ध होंगे।

शरद की सुबह

जितना तेरा हुक्म था
उतनी सँवारी ज़िंदगी
अपनी मर्ज़ी से कहाँ
हम ने गुज़ारी ज़िंदगी
मेरे अंदर इक नया ग़म
रोज़ रख जाता है कौन
रफ़्ता रफ़्ता हो रही है
और भारी ज़िंदगी
रूह की तस्कीन के सारे
दरीचे खुल गए
दर्द के पहलू में जब
आई हमारी ज़िंदगी
सिर्फ़ थी ख़ाना-बदोशी
या मोहब्बत का जुनूँ
हिजरतें करता रहा इक
शख़्स सारी ज़िंदगी
एक लफ़्ज़-ए-कुन
कहा आबाद सन्नाटे हुए
आसमानों से ज़मीनों पर
उतारी ज़िंदगी।

– हिमांशी बाबरा

ओडिशा में रात में भी दुकानों पर काम कर सकेंगी महिलाएं

लिखित परमीशन देनी होगी, कॉमर्शियल जगहों पर काम करने के घंटे 9 से 10 किए

भुवनेश्वर (एजेंसी)। ओडिशा विधानसभा ने बुधवार को ओडिशा शॉप्स एंड कॉमर्शियल एस्टेब्लिशमेंट्स बिल 2025 पास किया। अब महिला कर्मचारी ऐसी दुकानों और कॉमर्शियल प्रतिष्ठानों में नाइट शिफ्ट में काम कर सकेंगी। नए बिल में सरकार ने काम के घंटे 9 से बढ़ाकर 10 घंटे किए हैं। राज्य के लेबर मिनिस्टर गणेश राम सिंहखुंटिया ने कहा कि यह बदलाव छोटे बिजनेस के लिए फायदेमंद साबित होंगे। बिल पास होने के दौरान बीजेडी और कांग्रेस ने विरोध करते हुए सदन से वॉकआउट किया। ओडिशा शॉप्स एंड कॉमर्शियल एस्टेब्लिशमेंट्स बिल 2025 में रोजाना काम की समय-सीमा बढ़ाकर 10 घंटे की गई है, लेकिन हफ्ते में काम करने के घंटे 48 घंटे ही रखे गए हैं। वहीं, ओवरटाइम की लिमिट भी बढ़ाई गई है। पहले कर्मचारी तीन महीने में 50 घंटे ओवरटाइम कर सकते थे, अब 144 घंटे कर सकेंगे। ओवरटाइम वेतन हमेशा की तरह सामान्य वेतन की डबल रहेगा। महिलाएं नाइट शिफ्ट में काम कर सकेंगी। इसके लिए उन्हें लिखित सहमति देनी होगी। एम्प्लॉयर ऐसी महिला कर्मचारियों के आने-जाने की व्यवस्था करेगी। उन्हें सिक्योरिटी देगा। 20 से कम कर्मचारियों वाले दुकानों को पुरानी कानूनी प्रक्रियाओं से छूट दी गई है। इससे छोटे दुकानदारों का नियमों का बोझ कम होगा। पहले दुकानों में

एक व्यक्ति से रोजाना 9 घंटे से अधिक काम नहीं कराया जा सकता था। ओवरटाइम की तिमाही सीमा सिर्फ 50 घंटे थी। दुकानों और व्यावसायिक जगहों पर महिलाओं को रात की शिफ्ट में काम पर लगाने की अनुमति नहीं थी और छोटे दुकानों को भी 1956 के पुराने कानून की कई औपचारिकताओं का पालन करना पड़ता था। नए बिल ने इन सभी नियमों में बदलाव करते हुए काम के घंटों, ओवरटाइम और महिला कर्मचारियों की शिफ्ट से जुड़ी पाबंदियों में बदलाव की है। ओडिशा के लेबर मिनिस्टर गणेश राम सिंहखुंटिया ने कहा कि ये सुधार सिफारिशों के अनुरूप किया गया है। ये बदलाव महिलाओं के लिए रोजगार के अवसर बढ़ाएंगे। इससे दुकानों और अन्य व्यवसायों की उत्पादकता भी बढ़ेगी। बिल पेश होते ही कांग्रेस और बीजेडी के सदस्यों ने विरोध जताया और सदन से वॉकआउट कर दिया। विपक्ष का आरोप है कि काम के घंटे बढ़ने से कर्मचारियों पर अतिरिक्त बोझ पड़ेगा और महिलाओं को नाइट शिफ्ट में भेजना सुरक्षा के लिहाज से जोखिम भरा है। ध्रुव चरण ने कहा कि भारत एक वेलफेयर स्टेट है और यहां कर्मचारियों के हितों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। उन्होंने महिलाओं की सुरक्षा का मुद्दा उठाते हुए कहा कि अपराध की घटनाएं बढ़ रही हैं और नाइट शिफ्ट में खतरा अधिक रहता है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 27°c न्यूनतम 23°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शुक्रवार, 05 दिसंबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

सरकार नहीं चाहती मैं राष्ट्रपति पुतिन से मिलूं

● राहुल गांधी का गंभीर आरोप, कहा- यह मोदी की इनसिक्योरिटी

नई दिल्ली (एजेंसी)। गुरुवार को संसद के शीतकालीन सत्र का चौथा दिन रहा। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमिर पुतिन के भारत दौरे को लेकर संसद पहुंचे लोकसभा में विपक्ष के राहुल गांधी ने केंद्र सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने कहा- केंद्र सरकार नहीं चाहता है कि मैं बाहर से आने वाले लोगों से मिलूं। मोदी जी और विदेश मंत्रालय इस नियम का पालन नहीं करते हैं। यह उनकी इनसिक्योरिटी है।

राहुल ने कहा- हमारे सभी के साथ रिश्ते हैं। लीडर ऑफ अपोजिशन एक अलग नजरिया देते हैं। हम भी भारत को रिप्रेजेंट करते हैं। यह सिर्फ सरकार नहीं करती है। राहुल ने कहा आमतौर पर परंपरा है कि जो भी बाहर से आता है, वह लीडर ऑफ अपोजिशन से मिलता है। ऐसा वाजपेयी जी, मनमोहन सिंह जी की सरकारों के दौरान होता था। यह एक परंपरा रही है, लेकिन आजकल विदेशी मेहमान या जब मैं विदेश जाता हूं तो केंद्र सरकार उन्हें लीडर ऑफ अपोजिशन से न मिलने की सलाह देती है। यह उनकी पॉलिसी है और वे हमेशा ऐसा करते हैं। इस बीच, रूस के पहले डिप्टी प्राइम मिनिस्टर डेनिस मंटुरोव गुरुवार सुबह पार्लियामेंट पहुंचे। उन्होंने यह भी कहा कि जब कोई विशिष्ट विदेशी मेहमान भारत आता है या वह विदेश जाते हैं तो सरकार की तरफ से कहा जाता है कि उनसे (राहुल से) मुलाकात नहीं होनी चाहिए।

एसआईआर में लगी महिला बीएलओ को पैरालिसिस अटैक

मेडिकल कॉलेज में भर्ती, रातभर जागकर करती थी डेटा अपलोड

शिवपुरी (नप्र)। मध्य प्रदेश में इन दिनों एसआईआर का काम हो रहा है। शिवपुरी जिले के वार्ड 33 में एसआईआर का 93 फीसदी काम पूरा होने के बाद महिला एक बीएलओ को अचानक पैरालिसिस अटैक पड़ गया। उसे इलाज के लिए मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया है। महिला बीएलओ पहले से ही बीमार थी। उसे टाइफाइड की शिकायत थी उसे डॉक्टरों ने बेड रेस्ट की सलाह दी थी लेकिन काम के कारण उसने छुट्टी नहीं ली थी। परिजनों ने बताया कि डॉक्टर ने उसे 14 दिन बेड रेस्ट की सलाह दी थी लेकिन एसआईआर के लिए 7 दिन में ही काम पर बुला लिया। रातभर एसआईआर के काम के लिए वह डेटा अपलोड करती थी। महिला नगर पालिका की कम्युनिटी ऑर्गनाइजर हैं।

वार्ड 33 में एसआईआर में बीएलओ की ड्यूटी है- नवाब साहब रोड निवासी ज्योति नामदेव की ड्यूटी वार्ड 33 में एसआईआर में बीएलओ की ड्यूटी है। भाई पुष्पेंद्र नामदेव का कहना है कि ज्योति ने अपना एसआईआर का 93 फीसदी काम पूरा कर लिया। लेकिन रात को अचानक पानी पीने में दिक्कत हुई। फिर सुबह नींद खुली तो आधा मुंह लटका हुआ था। इलाज कराने शासकीय मेडिकल कॉलेज शिवपुरी लेकर पहुंचे। डॉक्टर ने पैरालिसिस अटैक बताया और भर्ती कर इलाज शुरू कर दिया।

रात 3 बजे तक जागती थी

परिजनों ने कहा कि डॉक्टर ने 14 दिन तक बेड रेस्ट करने की सलाह दी थी। लेकिन एसआईआर के लिए 7 दिन में काम पर ही बुला लिया। काम का प्रेशर अधिक था। रात 11 बजे से लेकर 12 और कभी कभी 3 बजे तक काम करती थी। पुष्पेंद्र का कहना है कि बहन ज्योति को बीएलओ का काम सौंपा गया था। टाइफाइड होने पर जिला अस्पताल शिवपुरी भर्ती कर इलाज कराया। रातभर जागकर पोर्टल पर डेटा अपलोड करती थी। एसआईआर के काम के तनाव बढ़ने से लकवा बीमारी का शिकार हो गई। अब भर्ती कर इलाज कराना पड़ रहा है। वहीं वर्मा कॉलोनी में बीएलओ का काम कर रहे एक अन्य शिक्षक रामसिंह रावत 28 नवंबर बीपी बढ़ने की शिकायत हुई।

राज्यपाल के पहले अभिभाषण में ही बिगड़ गया सिस्टम

● बिहार में हो गया खेला, 13 करोड़ का माइक सिस्टम फेल

पटना (एजेंसी)। 18वीं विधानसभा के लिए चुनकर आए विधायकों के लिए विधानसभा को हाइटेक किया गया। 30 करोड़ रुपए खर्च कर टैबलेट- नए माइक लगे, लेकिन बुधवार को राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान अभिभाषण देने पहुंचे तो माइक सिस्टम फेल हो गया।

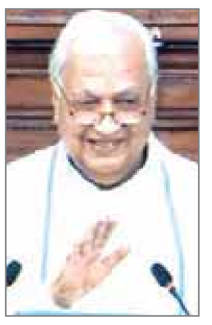

जिन टैबलेट की बड़ी चर्चा रही। कहा गया कि विधानसभा पेपरलेस हो गया है, वे भी तीन दिन से ऑन नहीं हुए। विधानसभा की पूरी कार्यवाही पहले की तरह कागजी हुई। अध्यादेश पेश करने से लेकर स्पीकर के अभिभाषण तक, सारे काम पेपर से हुए। नए विधायकों के स्वागत के लिए विधानसभा को हाइटेक बनाया गया था। सेंसर वाले माइक से लेकर विधायकों की सीट के आगे टैबलेट लगाए गए। इस प्रक्रिया में लगभग 30 करोड़ रुपए खर्च किए गए।

देश भर में अब बैरियर लैस सिस्टम लागू होगा

संसद में गडकरी बोले- साल भर में टोल बूथ खत्म होंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने लोकसभा में गुरुवार को बताया कि अगले एक साल में हाईवे पर मौजूदा टोल वसूली सिस्टम खत्म हो जाएगा। उसकी जगह पूरी तरह इलेक्ट्रॉनिक, बैरियर लैस टोल सिस्टम लागू किया जाएगा। उन्होंने कहा कि नए सिस्टम की शुरुआत फिलहाल 10 जगह की जा चुकी है और इसे एक साल के भीतर पूरे देश में लागू करने का लक्ष्य है। उन्होंने बताया कि इस समय देशभर में करीब 4,500 हाईवे प्रोजेक्ट चल रहे हैं, जिनकी कुल लागत लगभग 10 लाख करोड़ रुपए है। पहले टोल प्लाजा पर गाड़ियों को रुककर नकद या कार्ड से भुगतान करना पड़ता था। फास्टैग आया तो गाड़ियों का टोल पर रुकने का समय कम हुआ। अब अगला कदम बिना बैरियर वाले हाईटेक टोल की तरफ है। अब टोल पर रुकने की जरूरत नहीं, पैसे अपने आप कट जाते हैं नेशनल पेमेंट्स कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया ने नेशनल इलेक्ट्रॉनिक टोल कलेक्शन प्रोग्राम बनाया है। ये पूरे देश के लिए एक जैसा और आपस में जुड़ा

इलेक्ट्रॉनिक टोल प्लेटफॉर्म है। इसका मकसद अलग-अलग हाईवे पर अलग सिस्टम की परेशानी खत्म करना और एक ही तकनीक से आसानी से टोल वसूली करना है। इस फास्टैग सिस्टम का मुख्य हिस्सा है, जो रेडियो फ्रीक्वेंसी आइडेंटिफिकेशन तकनीक वाला टैग होता है और गाड़ी के सामने वाले शीशे (विंडस्क्रीन) पर चिपकाया जाता है। जैसे ही गाड़ी टोल लेन से गुजरती है, सेंसर इस टैग को रीड कर लेता है और यूजर के लिंक्ड बैंक खाते या वॉलेट से पैसा कट जाता है। बैरियर लैस टोल कैसे काम करेगा सरकार अब फास्टैग के साथ ऑटोमैटिक नंबर प्लेट रिकग्निशन जैसी तकनीक जोड़कर बैरियर लैस टोलिंग लागू कर रही है, ताकि गाड़ियों को टोल के लिए रुकना ही न पड़े। कैमरे गाड़ी की नंबर प्लेट पहचानते हैं और फास्टैग रीडर टैग पढ़कर टोल की रकम वसूल कर लेते हैं। पूरी प्रक्रिया कुछ सेकेंड में अपने आप हो जाती है। इस सिस्टम के तहत टोल प्लाजा पर भारी बैरियर, लंबी कतारें और कैश देने की मजबूरी काफी हद तक खत्म हो जाएगी। जिन वाहनों के पास वैध फास्टैग नहीं होगा या जो नियम तोड़ेंगे, उन्हें ई-नोटिस और जुर्माने जैसी कार्रवाई का सामना करना पड़ सकता है, जैसे फास्टैग सस्पेंड करना या डेटा पर पेनल्टी लगाना।

सरकारी कर्मचारियों को निभानी होगी एसआईआर की ड्यूटी

● एसआईआर को लेकर सुप्रीम कोर्ट का राज्य सरकारों को निर्देश

कहा-बीएलओ पर काम का दबाव कम करें, छुट्टी भी दीजिए

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को कहा कि राज्य सरकारों या राज्य चुनाव आयोगों की तरफ से नियुक्त कर्मचारियों को एसआईआर की ड्यूटी निभानी होगी। अगर किसी को इस ड्यूटी से छूट मांगने का कोई खास कारण है, तो राज्य सरकार उनकी अपील पर विचार करके उनकी जगह दूसरे कर्मचारी को नियुक्त कर सकता है। भारत के चीफ जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस जॉयमाल्या बागची की बेंच ने कहा कि राज्य सरकार के कर्मचारी बीएलओ सहित दूसरे वैधानिक कामों को करने के लिए बाध्य हैं। राज्य सरकारों का भी कर्तव्य है कि वे चुनाव आयोग को कर्मचारी उपलब्ध कराएं। कोर्ट ने कहा कि अगर बीएलओ काम में लगे बूथ स्तरीय अधिकारियों के पास काम का बोझ ज्यादा है, तो राज्यों को और स्टाफ को काम पर लगाना चाहिए। बेंच ने कहा- इससे बीएलओ के काम के घंटे कम करने में मदद मिलेगी और पहले से ही नियमित काम के अलावा एसआईआर कर रहे अधिकारियों पर

दबाव कम होगा। सुप्रीम कोर्ट ने यह टिप्पणी साउथ एक्टर विजय की पार्टी तमिलगा वेत्री कड़गम की एक याचिका पर सुनवाई के दौरान की। शीर्ष न्यायालय ने माना कि कई बीएलओ गंभीर बीमार होने के कारण ड्यूटी से छुट्टी मांग रहे हैं, वहीं, न्यायालय ने यह भी कहा कि जहां ऐसे बीएलओ को राहत नहीं प्रदान की जाती है तो वह अदालत का रुख कर सकता है। गौरतलब है कि सर्वोच्च न्यायालय ने यह निर्देश अभिनेता विजय की पार्टी की याचिका के बाद दिया है।

सरकारी महिला कर्मचारियों को मिलेगी एक पीरियड्स लीव

● साल में ऐसी 12 छुट्टियां, 18 से 52 वर्ष की सभी कर्मचारियों को फायदा होगा

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक की सरकारी महिला कर्मचारियों को एक दिन पेड पीरियड्स लीव का आदेश लागू किया गया है। महिलाओं को साल में 12 लीव मिलेंगी। राज्य सरकार ने 9 अक्टूबर को मेंस्ट्रुअल लीव पॉलिसी 2025 को मंजूरी दी थी। इसका फायदा सरकारी महिला कर्मचारियों के साथ-साथ, प्राइवेट कंपनीज और इंडस्ट्रियल सेक्टर्स में काम करने वाली महिलाओं को भी मिलेगा। आदेश के अनुसार 18 से 52 वर्ष की महिलाओं को पीरियड्स लीव मिलेगी। बैंगलोर होटल्स एसोसिएशन ने नवंबर में कर्नाटक हाईकोर्ट में याचिका दायर की थी। उन्होंने सवाल उठाया कि सरकार ने प्राइवेट सेक्टर की महिलाओं को तो यह सुविधा दे दी, लेकिन सरकारी कर्मचारियों को नहीं दी। उनका कहना था कि यह भेदभाव है क्योंकि राज्य खुद बड़ी संख्या में महिलाओं को नौकरी देता है।

इस विवाद के बाद सरकार ने यह नियम सरकारी महिला कर्मचारियों पर भी लागू करने का आदेश जारी कर दिया। इस छुट्टी को मंजूरी देने का अधिकार उसी अधिकारी के पास होगा जो कैजुअल लीव देता है। इसके लिए मेडिकल सर्टिफिकेट की जरूरत नहीं होगी।

ईडी का धाकड़ एक्शन कोल्ड्रिफ बनाने वाली

कंपनी श्रीसन फार्मास्युटिकल की 2.04 करोड़ की संपत्ति कुर्क

छिंदवाड़ा (नप्र)। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने छिंदवाड़ा में खांसी की सिरप पीने से हुई मौतों के मामले में बड़ी कार्रवाई करते हुए चेन्नई की श्रीसन फार्मास्युटिकल मैन्युफैक्चरर के मालिक जी. रंगनाथन से संबंधित 2.04 करोड़ रुपये की अचल संपत्ति को धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) 2002 के तहत कुर्क किया है। यह कार्रवाई मध्य प्रदेश पुलिस और चेन्नई पुलिस द्वारा दर्ज की गई एफआईआर के आधार पर की गई है, जिसमें मिलावटी कफ सिरप के निर्माण और बिक्री का आरोप है।

ईडी ने यह जांच मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा में एमपी पुलिस द्वारा दर्ज की गई एफआईआर और एक अन्य एफआईआर के आधार पर की है। एफआईआर के अनुसार, मैसर्स श्रीसन फार्मास्युटिकल मैन्युफैक्चरर के मालिक जी. रंगनाथन के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता, 2023 (बीएनएस, 2023) की धारा 105 (आईपीसी की धारा 304) के अंतर्गत छिंदवाड़ा में 20 से अधिक बच्चों की मौत के मामले में केस दर्ज है। एफआईआर में आरोप लगाया गया है कि मैसर्स श्रीसन फार्मास्युटिकल मैन्युफैक्चरर, चेन्नई द्वारा निर्मित कोल्ड्रिफ कफ सिरप के सेवन में जहरीले ग्लाइकोल प्रोडक्ट थे।

बाबरी बनाने का ऐलान करने वाले टीएमसी विधायक सस्पेंड

● हुमायूं कबीर ने कहा-मस्जिद जरूर बनेगी, अपनी बात पर कायम

कहा-तृणमूल और भाजपा के खिलाफ विधानसभा चुनाव लड़ूंगा

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद स्थित बेलडांगा में बाबरी मस्जिद बनाने का ऐलान करने वाले विधायक हुमायूं कबीर को तृणमूल कांग्रेस ने गुरुवार को पार्टी से निलंबित कर दिया। कोलकाता के मेयर फिरहाद हकीम ने इसकी जानकारी दी। मेयर ने कहा कि पार्टी सांप्रदायिक राजनीति में विश्वास नहीं करती। टीएमसी से निकाले जाने के बाद हुमायूं ने कहा, मैं अपने बयान पर कायम हूं। मैं 22 दिसंबर को अपनी नई पार्टी की घोषणा करूंगा। विधानसभा चुनाव में 135 सीटों पर उम्मीदवार उतारूंगा। मैं उन दोनों (टीएमसी और भाजपा) के खिलाफ चुनाव लड़ूंगा। मुर्शिदाबाद जिले में 28 नवंबर को कई जगहों पर बाबरी मस्जिद के शिलान्यास के पोस्टर लगाए गए थे। इन पर लिखा था कि 6 दिसंबर को बेलडांगा में बाबरी मस्जिद का शिलान्यास होगा।

'हम सांप्रदायिक राजनीति नहीं करते, इसके खिलाफ हैं'

कोलकाता (एजेंसी)। टीएमसी विधायक हुमायूं कबीर को पार्टी से निलंबित करने के बाद पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने मुर्शिदाबाद में एक रैली में कहा कि हम सांप्रदायिक राजनीति नहीं करते हैं, हम इसके खिलाफ हैं। हुमायूं कबीर पर निशाना साधते हुए ममता बनर्जी ने कहा कि मुर्शिदाबाद के लोग दंगों की राजनीति को स्वीकार नहीं करेंगे।

मुस्लिम विधायक हुमायूं कबीर को निलंबित किए जाने का ऐलान करते हुए टीएमसी के सीनियर नेता फिरहाद हाकिम ने कहा कि उनका व्यवहार ऐसे समय में घोर गैर अनुशासनात्मक है, जब पार्टी राज्य में शांति और सांप्रदायिक सौहार्द बनाए रखने के लिए काम कर रही है।

धर्मशाला में सरकार के खिलाफ बीजेपी की हुंकार रैली

राधे-राधे की गूंज, श्रीकांत बोले-राहुल गांधी को खुश करने के लिए सनातन का अपमान

धर्मशाला (एजेंसी)। हिमाचल की कांग्रेस सरकार के तीन साल के कार्यकाल के विरोध में भारतीय जनता पार्टी ने धर्मशाला के जोरावर स्टेडियम में आज (गुरुवार को) हुंकार रैली की। इसमें राधे-राधे की गूंज देखने को मिली।

नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर ने कहा- जब भी हम (विपक्ष) सदन में जाते हैं तो राधे-राधे बोलते हैं। इससे, सीएम सुक्खू भी राधे-राधे बोलने को मजबूर हो गए। जयराम ने कहा- अच्छा लगा कि सनातन का कुछ अंश इनमें भी आ गया। इन्होंने (सीएम) सत्ता में आते ही सनातन का अपमान शुरू कर दिया था। उन्होंने कहा- आज हर कोने से बदलो बदलो, भ्रष्ट सरकार, यही आवाज आ रही है। उन्होंने कहा, हिमाचल सीएम

सुक्खू अपनी ऑल्टो कार में बजट पेश करने आते हैं। साल 2027 के चुनाव में भी पूरी कांग्रेस ऑल्टो में फिट हो जाएगी। उन्होंने कहा- केंद्र सरकार आपदा के लिए 5500 करोड़ पहले दे चुकी है। सरकार पहले उसका हिसाब दें। फिर 1500 करोड़ की मांगे। सुक्खू सरकार चाह रही है कि 1500 करोड़ ट्रेजरी में नहीं, उनके खाते में आए। उन्होंने कहा- हिमाचल पहले ही ऑन सेल है। अब लैंड सिलिंग एक्ट की धारा 118 को कल विधानसभा में बिल लाकर बदला जा रहा है। उन्होंने कहा- जोरावर स्टेडियम में ही बीते कल बीजेपी ने मार्च निकाला था। अनावश्यक रूप से लाठीचार्ज करके लहूलुहान कर दिया। 10 बच्चे घायल कर दिए। बीजेपी के प्रदेश प्रभारी श्रीकांत शर्मा ने कहा- सुक्खू सरकार सनातन का अपमान कर रहे है। बच्चों को राधे-राधे बोलने से रोक रही है। राहुल गांधी को खुश करने के लिए सनातन का अपमान किया गया।

खाओ, पिओ और मौज वाली है कांग्रेस सरकार

अनुराग ठाकुर ने कहा- कांग्रेस ने तीन साल में केवल हिंदुओं को गाली देने का काम किया है। कांग्रेस को लज्जा से मुंह छिपाने का काम करना चाहिए था, वह लोग जश्न मनाने की तैयारी कर रहे है। ये तीन साल शासन नहीं कुशासन के है। ये सरकार खाओ, पिओ और मौज करने वाली सरकार है। ये सरकार मित्रों की है। अनुराग ने कहा- कभी मुलाजिम, कभी पेंशनर, युवा, महिलाएं सड़कों पर है। तीन सालों में ही व्यवस्था पतन की कहानी कांग्रेस ने लिखी है। आज से ही सरकार के पांव उखड़ने शुरू होंगे। अनुराग ने कहा- प्रियंका गांधी 5 लाख को नौकरी का वादा करके गई थीं, हकीकत में 1500 को भी रोजगार नहीं मिला। इसलिए इस सरकार को उखाड़ फेंकना जरूरी है। उन्होंने कहा- बिहार में चुनाव में बाद राहुल गांधी ने कांग्रेस विधायकों की मीटिंग बुलाई तो सब एक सोफे पर आ गए, क्या हिमाचल में भी यही होगा। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष डॉ. राजीव बिंदल ने कहा- जोरावर स्टेडियम में भाजपा ने भ्रष्ट कांग्रेस सरकार को बदलने के लिए हुंकार भरी है। उन्होंने कहा- सरकार ने नाके लगाकर जगह जगह लोगों को रैली में आने से रोका है। उन्होंने कहा, हिमाचल के बेरोजगारों को ठगा जा रहा है। उन्होंने कहा- 5 लाख सरकारी नौकरी का वादा किया गया था। आज पशु मित्र और रोगी मित्र लगाए जा रहे हैं। ये व्यवस्था परिवर्तन नहीं सत्ता का पतन है। बीजेपी के सह प्रभारी संजय टंडन ने कहा- आज की इस रैली के बाद सुक्खू सरकार को उखाड़ने का काम शुरू होगा।

राज्यपाल श्री पटेल ने क्रांतिसूर्य टंट्या भील को अर्पित की पुष्पाजंलि

राजभवन में मनाया गया बलिदान दिवस

भोपाल(नप्र)। राज्यपाल मंगुभाई पटेल ने जनजातीय नायक क्रांतिसूर्य टंट्या भील के बलिदान दिवस पर पुष्पाजंलि अर्पित की। उनका पुण्य स्मरण कर नमन किया। राज्यपाल श्री पटेल ने राजभवन के अधिकारी-कर्मचारियों के साथ जनजातीय नायक को श्रद्धांजलि दी।

राजभवन के बेंक्वेट हॉल में गुरूवार को आयोजित कार्यक्रम में राज्यपाल के अपर सचिव श्री उमाशंकर भार्गव, विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी श्री अरविंद पुरोहित, राजभवन के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री ने क्रांतिसूर्य मामा टंट्या भील के बलिदान दिवस पर श्रद्धांजलि अर्पित की

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने जनजातीय गौरव, क्रांतिसूर्य मामा टंट्या भील के बलिदान दिवस पर विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जननायक टंट्या मामा ने ब्रिटिश हुकूमत के अत्याचारों और शोषण के विरुद्ध जनजातीय समुदाय को जागृत किया। मातृभूमि के सम्मान और स्वाभिमान के लिए उनके समर्पण और पराक्रम अनुकरणीय रहेगा।

नरेश पासवान की एकल प्रदर्शनी आज से

भोपाल। एकलव्य फ़ाउंडेशन और आलियाँस फ़्राँसेज़ द भोपाल नरेश पासवान की एकल प्रदर्शनी 'मिथिला कला' का आयोजन कर रहे हैं। पद्म श्री से सम्मानित गोंड कलाकार दुर्गा बाई व्याम और इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय के निदेशक

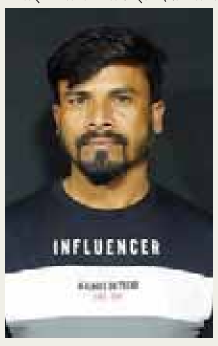

अमिताभ पांडे 5 दिसंबर को शाम 6:30 बजे इस प्रदर्शनी का उद्घाटन करेंगे। आलियाँस फ़्राँसेज़ द भोपाल (बी-75, शाहपुरा) में आयोजित यह प्रदर्शनी 8 दिसंबर तक खुली रहेगी। बिहार के मिथिला में एक दलित परिवार में जन्मे नरेश, मधुबनी मिथिला शैली के एक स्व-शिक्षित चित्रकार हैं जो अपनी कला की काली और सफ़ेद शैली के लिए जाने जाते हैं। उनकी चित्रकारी के लिए उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय पहचान भी मिली है। अमेरिका, ब्रिटेन और फ़्रांस में उनकी कलाकृतियाँ नामित हुई हैं। उनकी चित्रकारी में बारीक़ लकीरें और पैटर्न एक शान्त, मग्न कर देने वाली दुनिया रचते हैं जिनमें पौराणिक कथाओं और राजा सलहेश की लोककथाओं के साथ-साथ प्रकृति और रोज़मर्रा की ज़िन्दगी के दृश्यों का चित्रण होता है। नरेश का काम मधुबनी मिथिला कला की पुरानी पहचान को तो बनाए रखता ही है, साथ ही उसमें एक नया, अपना नज़रिया भी जोड़ता है। एकलव्य फ़ाउंडेशन में बतौर फ़ेलो काम करते हुए, नरेश इन दिनों किताबों और पत्रिकाओं के लिए चित्र बना रहे हैं। अब तक सिर्फ़ कैनवास पर काम करने के बाद यह उनके काम की एक नई और बड़ी पहल है।

देश की सुरक्षा के लिए नौसेना का समर्पण वंदनीय : मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने नौसेना दिवस पर कहा है कि हर भारतवासी के लिऐ यह गर्व का अवसर है। समुद्र की विस्तारित सीमाओं तक देश की सुरक्षा के लिए समर्पित नौसेना का समर्पण वंदनीय है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने राष्ट्रसेवा के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने वाले नौसेना के जवानों के चरणों में नमन किया।

सीएम ने प्रदेशवासियों को अंतरराष्ट्रीय चीता दिवस की दीं शुभकामनाएं

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रदेशवासियों को अंतरराष्ट्रीय चीता दिवस की बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की विशेष पहल पर मध्यप्रदेश में शुरू हुई चीता परियोजना ने भारत में वन्यजीव संरक्षण के नए अध्याय की शुरुआत की थी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि प्रदेश में चीतों की संख्या बढ़कर 32 हो गई है। राज्य सरकार वन्यजीवों के संरक्षण के प्रति संकल्पित हैं। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश की भूमि पर सभी जीव सुरक्षित होंगे, यह राज्य सरकार का प्रण है।

सहकर्मी ने किया युवती का रेप

शादी से इनकार करने पर पीड़िता ने कराई एफआईआर ; पुलिस आरोपी की कर रही तलाश

भोपाल (नप्र)। पिपलानी इलाके में एक 24 साल की युवती ने अपने सहकर्मी पर शादी का झांसा देकर रेप करने का आरोप लगाया है। पीड़िता और आरोपी पिछ्ले पांच साल से रिलेशनशिप में थे। युवती का आरोप है कि आरोपी हीरेंद्र लगातार शादी का भरोसा देकर उसका शोषण करता रहा।

कुछ दिनों पहले आरोपी ने अचानक पीड़िता से दूरी बना ली और बातचीत भी बंद कर दी। बाद में जब युवती ने शादी की बात फिर से उठाई तो उसने साफ इनकार कर दिया। इसके बाद पीड़िता ने पिपलानी थाने में पहुंचकर एफआईआर दर्ज कराई।

पुलिस के अनुसार, पीड़िता गुप्ता कॉलोनी में रहती है और प्राइवेट जॉब करती है। साल 2020 में उसकी मुलाकात हीरेंद्र से हुई थी, जो उसी कंपनी में काम करता था। दोनों की दोस्ती धीरे-धीरे प्रेम संबंधों तक पहुंच गई। एफआईआर दर्ज होने के बाद पुलिस ने आरोपी की तलाश शुरू कर दी हैं।

दिसंबर में ही पीएम मोदी कर सकते हैं लोकार्पण, फिर आप भी कर सकेंगे सफर

भोपाल मेट्रो के लिए सीएमआरएस का ग्रीन सिग्नल

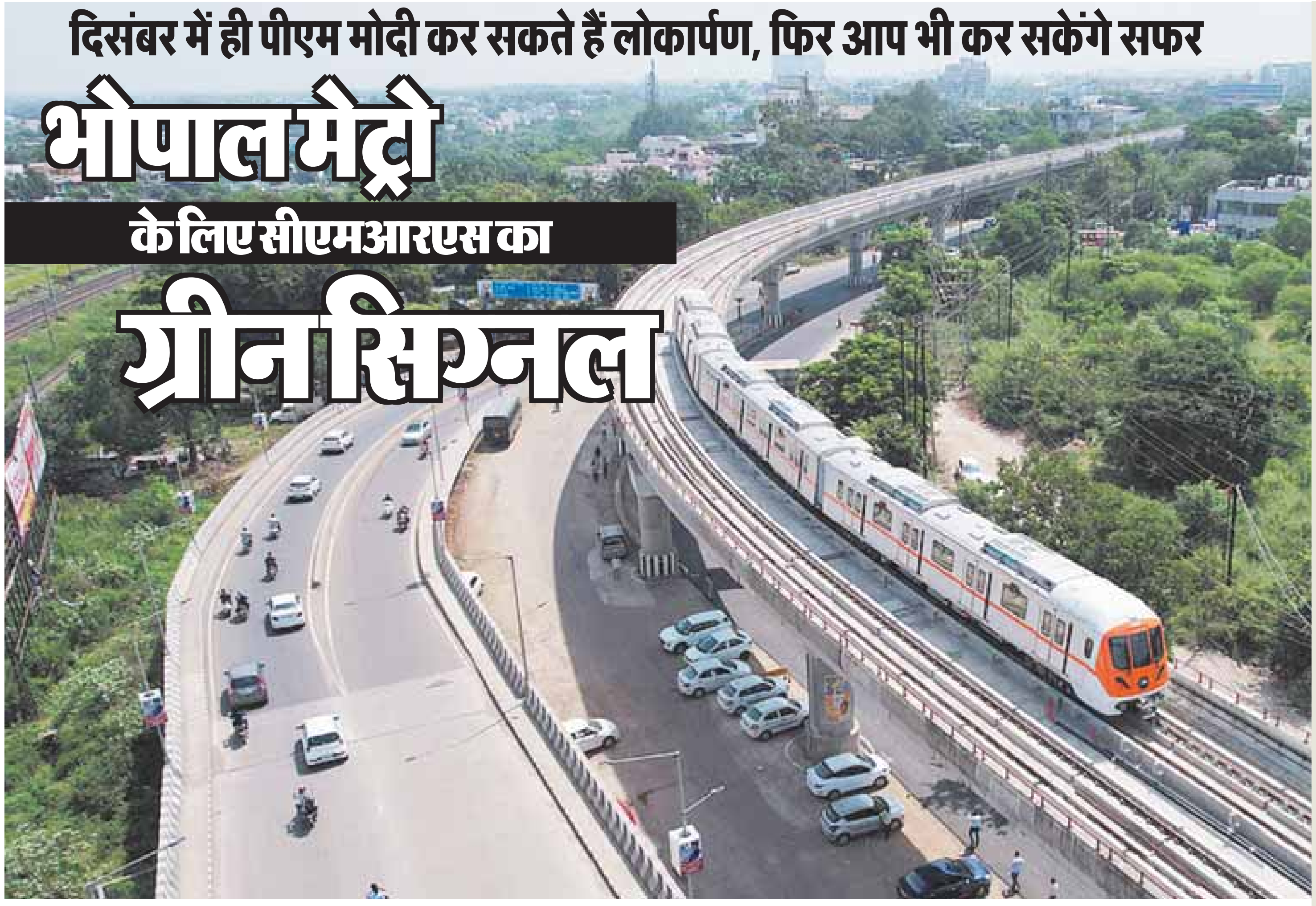

भोपाल (नप्र)। भोपाल मेट्रो के कमर्शियल रन के लिए कमिश्नर मेट्रो रेल सेफ्टी (सीएमआरएस) का ग्रीन सिग्नल मिल गया है। तीन बार निरीक्षण करने के बाद सीएमआरएस ने अपनी एनओसी यानी, 'ओके' रिपोर्ट दे दी है। ऐसे में दिसंबर में ही प्रायोरिटी कॉरिडोर सुभाषनगर से एम्स के बीच मेट्रो का कमर्शियल रन हो सकता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी मेट्रो को हरी झंडी दिखा सकते हैं।

13 दिसंबर को लोकार्पण कराए जाने को लेकर भी मंथन किया जा रहा है, लेकिन इसे आगे बढ़ाने की बात भी सामने आई है। रिपोर्ट में सब कुछ 'ओके' होने के बाद यह रिपोर्ट प्रदेश सरकार को दी गई है। वहीं, नई दिल्ली से हरी झंडी मिलने के बाद मेट्रो के कमर्शियल रन की शुरुआत हो जाएगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लोकार्पण करेंगे। वे भोपाल मेट्रो के पहले यात्री भी बन सकते हैं। इंदौर में 31 मई को उन्होंने वर्चुअली तरीके से लोकार्पण किया था। एक संभावना यह भी है कि भोपाल में भी मेट्रो का वर्चुअली तरीके से लोकार्पण हो, लेकिन मेट्रो अफसर फिलहाल इसे लेकर कुछ भी नहीं बोल रहे हैं।

खास बात ये है कि मेट्रो के कमर्शियल रन के दौरान टिकट सिस्टम ऑनलाइन न होते हुए मैन्युवली रहेगा। टिकट कलेक्शन करने वाली तुर्किए की कंपनी का ठेका मेट्रो कॉरपोरेशन कैंसिल कर चुका है। नई एजेंसी आने तक मैन्युवली टिकट कलेक्शन सिस्टम रहेगा। इंदौर में भी यही सिस्टम लागू है।

तीन बार निरीक्षण कर चुकी सीएमआरएस

सीएमआरएस 12 नवंबर को भोपाल पहुंची थी। अगले 3 दिन यानी, 13, 14 और 15 नवंबर को टीम ने डिपो से लेकर ट्रैक और ट्रेन तक निरीक्षण किया था। कमिश्नर नीलाभ्र सेनगुप्ता के साथ टीम ने मेट्रो के नट-बोल्ड तक देखे थे। इसके बाद टीम वापस लौट गई। इससे पहले दो बार टीम भोपाल आ चुकी है। आखिरी निरीक्षण के बाद रिपोर्ट मिलने का इंतजार किया जा रहा था, जो अब मिल गई है।

मेट्रो अफसरों का कहना है कि मेट्रो के कमर्शियल रन के लिए वे सभी काम पूरे हो चुके हैं, जो जरूरी है और सीएमआरएस के पैमाने के हैं। स्टेशनों का कुछ काम जरूर बचा है, लेकिन उससे कमर्शियल रन पर असर नहीं पड़ेगा।

सीएमआरएस की मंजूरी के बाद ये प्रक्रिया

- सीएमआरएस ने अपनी रिपोर्ट मेट्रो कॉरपोरेशन को दी।
- इसके बाद मेट्रो अफसरों ने सरकार को यह रिपोर्ट सौंपी। जिसमें बताया गया कि हम कमर्शियल रन के लिए तैयार है।
- प्रदेश सरकार प्रधानमंत्री के हाथों मेट्रो का लोकार्पण कराएगा। इसलिए प्रधानमंत्री कार्यालय से तारीख मांगी जाएगी।
- तारीख तय होते ही कमर्शियल रन की शुरुआत होगी।

इंदौर की पद्मावती का किराया 11 लाख, 2027 तक बुक

शाही रहन–सहन, मेकअप का खर्च ढाई लाख ; साउथ की शादियों में भी डिमांड

इंदौर (नप्र)। इंदौर और आसपास के इलाकों में शादी-ब्याह के सीजन में सफेद, आकर्षक और ऊंची घोड़ी की मांग तेजी से बढ़ी है। शहर से लेकर गांवों तक यह ट्रेंड इतना चला है कि लगभग हर घोड़ी वाले के पास अब सफेद घोड़ियां ही हैं। इनकी एक दिन की बुकिंग 51 हजार से 11 लाख रुपए तक में हो रही है। किसी भी फंक्शन के लिए इन घोड़ियों को सजाने में ढाई लाख रुपए तक खर्च किए जा रहे हैं।

सफेद रंग को लेकर कोई धार्मिक या वास्तु मान्यता नहीं है। जिस तरह गाड़ियों में सफेद रंग लोकप्रिय है, वैसे ही बारात में सफेद घोड़ी को 'फर्स्ट चॉयस' माना जा रहा है। छोटी-बड़ी हर बारात में सफेद घोड़ी का प्रचलन बढ़ा है।खास बात यह है कि खूबसूरती मेंटेन रखने के लिए इन घोड़ियों का प्रजनन कभी नहीं कराया जाता है।

इंदौर और आसपास के इलाकों में 250 से ज्यादा सफेद घोड़ियां

इंदौर शहर में 25 से ज्यादा घोड़ी मालिक हैं। इनके पास करीब 150 सफेद घोड़ियां हैं जबकि कम्पेल, सनावदिया, खुडैल, हाट सेमल्या, डबल चौकी, नाराखेड़ा जैसे गांवों में लगभग 100 घोड़ियां हैं।

यहां विष्णु, मोहित, मिलिंद, नीलेश और ओम प्रजापत सहित कई टीमें वर्षों से शादी-जुलूस में घोड़ियां उपलब्ध करा रही हैं और इनके पास 20 से ज्यादा सफेद घोड़ियां हैं।

डिमांड बढ़ी तो पुष्कर से भी मंगाई घोड़ियां

घोड़ी मालिकों ने हाल ही में 15 नई घोड़ियों की बुकिंग की, जिनमें से 6 पुष्कर से आ चुकी हैं। विष्णु प्रजापत ने सबसे महंगी घोड़ी 5 लाख रुपए में खरीदी है। उम्र 2 साल होने के कारण इसकी ऊंचाई आगे बढ़कर करीब 5 फीट होने की संभावना है। गांवों में घोड़ी की सामान्य बुकिंग 5 हजार से 10 हजार रुपए तक रहती है। कुछ घोड़ियां उत्तर प्रदेश के सारंगखेड़ा से भी लाई जा रही हैं।

इंदौर की महंगी और 'ब्रांडेड' घोड़ियां

इंदौर की सबसे महंगी घोड़ी 'पद्मावती' है, पद्मावती की ऊंचाई 6 फीट और लंबाई 12 फीट है। सफेद चमकीला रंग है। इसके मालिक सचिन राठौर के पास सुखमणि, गजगामिनी और गणगौर जैसी दूसरी घोड़ियां भी हैं। इनकी बुकिंग राजस्थान, महाराष्ट्र और साउथ तक होती है। आलम ये है कि ये घोड़ियां 2027 तक बुक हैं।

51 हजार से 11 लाख रुपए तक की बुकिंग

इन घोड़ियों का तीन घंटे का चार्ज 51 हजार से 11 लाख रुपए तक है। पद्मावती को जनवरी 2026 में साउथ इंडिया के फिल्म एक्टर के भतीजे की शादी में 11 लाख रुपए में बुक किया गया है।

दिनदहाड़े ईंट-पत्थर और तोड़फोड़ का हाईवोल्टेज ड्रामा

महिला पर ईट से हमला ; गुस्से में आरोपी की कार तोड़ी, वीडियो के बाद केस दर्ज

भोपाल (नप्र)। भोपाल के कोलार रोड स्थित फाइन एवेन्यू फेज-2 में खुलेआम ईंट-पत्थर चलने और घर में घुसकर गाड़ी तोड़ने का वीडियो सामने आया है। वीडियो में एक तरफ जहां विकास तिवारी महिला पर ईंट और बड़े पत्थर फेंकते दिख रहे हैं, वहीं दूसरी फुटेज में सावित्री चौहान और उनका बेटा गुरप्रीत तिवारी की गाड़ी पर रॉड से हमला करते दिखाई दे रहे हैं। पुलिस ने विकास तिवारी पर केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस का कहना है कि विकास तिवारी पहले भी मारपीट कर चुके हैं, उन पर केस दर्ज है। पुलिस के मुताबिक, गुरुवार की इस घटना के पहले भी दोनों पक्षों के बीच विवाद हो चुके हैं। विकास तिवारी पर मारपीट के पुराने मामले भी दर्ज हैं। वहीं इस बार महिला को पत्थर मारने के आरोप में 1 दिसंबर को कोलार थाने में विकास तिवारी के खिलाफ मारपीट का केस दर्ज किया गया है। इधर, विकास तिवारी का कहना है कि उन पर पहले परिवार द्वारा हमला किया गया, उसी के बाद उन्होंने अपना बचाव किया। तिवारी ने भी पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है। फिलहाल कोलार थाना पुलिस दोनों पक्षों के वीडियो और शिकायत के आधार पर जांच कर रही है। पुलिस का कहना है कि फुटेज की बारीकी से पड़ताल की जा रही है, जिसके बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

सीधी में प्रेमी ने नाबालिग प्रेमिका का दोस्तों से कराया रेप, निजी स्कूल में पढ़ती है छात्रा

सीधी (नप्र)। मध्य प्रदेश के सीधी जिले से दरिंदगी का एक मामला सामने आया है। प्रेमी ने अपनी नाबालिग प्रेमिका का खुद और अपने दोस्तों से भी किराए के कमरे में दुष्कर्म करवाया है। पीड़िता सीधी शहर में संचालित एक निजी स्कूल में पढ़ती है। पूरा मामला जमोडी थाना क्षेत्र का है। आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस की टीम छापेमारी कर रही है।

चार आरोपियों ने किया गैंगरेप

दरअसल, पूरा मामला जमोडी थाना क्षेत्र का है। चार आरोपियों ने मिलकर पीड़िता के साथ गैंगरेप किया है। पीड़ित की शिकायत पर पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है। साथ ही आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है। गिरफ्तारी के लिए कई जगहों पर छापेमारी की है। बताया जा रहा है कि मुख्य आरोपी के संपर्क में पीड़िता पहले से थी। दोनों का प्रेम-प्रसंग चल रहा था।

विश्वास में लेकर कमरे पर बुलाया

मुख्य आरोपी ने पीड़िता को विश्वास में लेकर कमरे पर बुलाया, जहां पहले से उसके अन्य दोस्त मौजूद थे। इसके बाद वहां मौजूद सारे आरोपियों ने बारी-बारी से दुष्कर्म किया है। घटना के बाद पीड़िता बेहद डर गई थी। इस वजह से वह घटना के बारे में किसी को बताई नहीं थी। गुरुवार को घटना की शिकायत हुई। इसके बाद पुलिस हरकत में आई है।

गौरतलब है कि पुलिस ने चारों आरोपियों की पहचान कर ली है। अलग-अलग टीमें उनकी तलाश कर रही है। बताया जा रहा है कि पीड़िता यहां हॉस्टल में रहकर पढ़ाई करती थी। अभी पीड़िता काफी सहमी हुई है।

वीआईटी यूनिवर्सिटी में बिना सहमति लेते हैं ब्लड-यूरिन सैंपल

विधानसभा में हेमंत कटारे बोले– स्टूडेंट्स से जबरन कंसेंट बॉन्ड भरवाते हैं ; यहां बजरंगबली का नाम लेने पर फाइन

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश विधानसभा में वीआईटी यूनिवर्सिटी को लेकर चौंकाने वाला खुलासा हुआ है। कांग्रेस विधायक हेमंत कटारे ने आरोप लगाया कि विश्वविद्यालय छात्रों से एडमिशन के समय एक अनिवार्य 'कंसेंट बॉन्ड (सहमति पत्र)' भरवाता है, जिसके आधार पर संस्थान छात्रों का ब्लड और यूरिन सैंपल जब चाहे ले सकता है और उन्हें स्टोर भी कर सकता है।

उपनेता प्रतिपक्ष हेमंत कटारे ने सदन में बॉन्ड की लाइन पढ़ते हुए बताया कि यह प्रक्रिया बिना वास्तविक सहमति के दबाव में और छात्रों के अधिकारों का उल्लंघन करते हुए की जाती है। हेमंत कटारे ने कहा कि विश्वविद्यालय में प्रवेश से पहले छात्रों को मजबूरन यह लिखकर देना पड़ता है कि, (मैं सहमति देता/देती हूं कि ट्रेसिंग डॉक्टर मेरे रक्त और मूत्र के नमूने एकत्रित और संग्रहित कर सकते हैं और जरूरत पड़ने पर रिजल्ट वीआईटी भोपाल को साझा कर सकते हैं। कटाने कहा कि यह वही संस्थान है, जहां पर बजरंग बली का नाम लिया जाता है, तो कार्रवाई की जाती है। 5 हजार रुपए का फाइन लगाया जाता है और दंडात्मक कार्रवाई की जाती है।

छात्रों को मेडिकल टेस्ट देने के लिए मजबूर किया जाता है

कटारे ने आरोप लगाया कि बिना सरकारी अनुमति का फर्जी क्लिनिक विश्वविद्यालय के अंदर संचालित हो रहा है। सीएमएचओ को परिसर में दो घंटे तक अंदर प्रवेश नहीं दिया गया, जो शासकीय कार्य में बाधा है। छात्रों को जब चाहे मेडिकल टेस्ट देने के लिए बाध्य किया जाता है।

छात्र आंदोलन की जड़ में दूषित पानी, खराब भोजन

कटारे और अन्य विधायकों ने बताया कि पेयजल के 18 सैंपलों में से 4 में बैक्टीरिया पाए गए। स्वास्थ्य संबंधी शिकायतें महीनों तक लंबित रहीं। छात्रों पर हजारों एफआईआर दर्ज कर दी गईं। यह सब मिलकर छात्रों में भारी नाराजगी का कारण बना, जिसके चलते हजारों छात्र सड़कों पर आ गए।

बोले– जांच होगी, दोषी पाए जाने पर सख्त कार्रवाई होगी

उच्च शिक्षा मंत्री इंदर सिंह परमार ने कहा- विश्वविद्यालय को धारा 41(1) के तहत नोटिस जारी किया गया है। 7 दिन बाद धारा 41(2) के तहत कठोर कार्रवाई की जा सकती है, जिसमें विश्वविद्यालय को सरकारी नियंत्रण में लेना शामिल है। इस पर हेमंत कटारे ने कहा- 3 हजार बच्चों का भविष्य बर्बाद न हो, इसलिए छात्र हित में उस एफआईआर को या तो निरस्त किया जाए या वापस लिया जाए। इस पर मंत्री इंदर सिंह परमार ने कहा- मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि एक भी छात्र का भविष्य खराब नहीं होगा, क्योंकि यह विश्वविद्यालय के प्रबंधन के कारण समस्या पैदा हुई है, छात्रों के कारण नहीं हुई है।

संपादकीय

रहस्योद्घाटन या शिगूफा?

देश के रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने हाल में बाबरी मस्जिद को लेकर जो विवादास्पद बयान दिया है, उससे यह सवाल उठ रहा है कि क्या वह वाकई किसी तथ्य पर आधारित है, झूठा इतिहास गढ़ने की कोशिश है अथवा केवल कांग्रेस को उलझन में डालने वाली बयानबाजी है? गुजरात के वडोदरा में सरदार वल्लभ भाई पटेल की 150वीं जयंती पर आयोजित 'यूनिटी मार्च' के दौरान अपने भाषण में राजनाथ सिंह ने कहा कि भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू बाबरी मस्जिद निर्माण के लिए सार्वजनिक धन (टैक्सपेयर्स का पैसा) लेना चाहते थे, लेकिन सरदार पटेल ने इसका कड़ा विरोध कर इसे रोका। सिंह ने पटेल को 'सच्चा धर्मनिरपेक्ष' बताते हुए कहा कि वे तुष्टिकरण की राजनीति के खिलाफ थे। राजनाथ के इस दावे को लोगों ने खारिज कर दिया है। राजनाथ ने सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण का उदाहरण देते हुए बताया कि पटेल ने इसे सार्वजनिक दान से ही कराया, जिसमें 30 लाख रुपये जुटाए गए, लेकिन कोई सरकारी धन नहीं लगा। इसी तरह, अयोध्या में मौजूदा राम मंदिर का निर्माण भी पूरी तरह जनता के योगदान से हो रहा है। सिंह ने नेहरू पर अप्रत्यक्ष रूप से निशाना साधते हुए कहा कि कुछ राजनीतिक ताकतें पटेल की विरासत को मिटाने की कोशिश करती हैं, लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसे पुर्नस्थापित किया। राजनाथ के इस बयान पर तीखी प्रतिक्रिया होनी ही थी। क्योंकि अब तक ज्ञात इतिहास के अनुसार बाबरी मस्जिद का निर्माण 1528 में मुगल सम्राट बाबर के सेनापति मीर बाकी द्वारा कराया गया था। यह मस्जिद पहले से मौजूद थी और नेहरू के कार्यकाल (1947-1964) में इसके 'नए निर्माण' का कोई प्रस्ताव या प्रमाण नहीं मिलता। हकीकत में, नेहरू सरकारी धन के धार्मिक स्थलों में इस्तेमाल के सख्त खिलाफ थे। भाजपा में राजनाथसिंह को एक गंभीर नेता माना जाता है और जब वो ऐसी बात कहते हैं तो मामला संगीन हो जाता है। रक्षा मंत्री के बयान पर कांग्रेस सांसद प्रमोद तिवारी ने कहा कि उन्हें इस बात का दुख है कि राजनाथ सिंह ऐसा कह रहे हैं, हो सकता है कि वह अपनी पार्टी से प्रभावित हो गए हों, या उन्हें ऐसी बातें कहने के लिए मजबूर किया जा रहा हो। नेहरू ने उन्हें (सरदार वल्लभभाई पटेल) उप प्रधानमंत्री और गृह मंत्री बनाया था। इतिहासकारों का भी कहना है कि राजनाथ का यह दावा निराधार है। इसे केवल राजनीतिक संदर्भ में प्रचारित किया जा रहा है। कांग्रेस सांसद इमरान मसूद ने राजनाथ से इस बात का सबूत मांगा है। उल्लेखनीय है कि बाबरी मस्जिद विवाद की पृष्ठभूमि में 1934 का एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम है, जब भीड़ ने मस्जिद पर हमला कर क्षतिग्रस्त किया। तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरू ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री गोविंद बल्लभ पंत को टेलीग्राम भेजकर अयोध्या में हो रहे दंगों पर चिंता जताई और शांति बनाए रखने का निर्देश दिया। 1949 में मस्जिद के अंदर मूर्तियां रखी गईं, जिससे विवाद बढ़ा, लेकिन नेहरू सरकार ने इसे धार्मिक सद्भाव के लिए संभाला। मस्जिद का विध्वंस 1992 में हुआ, जो सुप्रीम कोर्ट के 2019 के फैसले से राम मंदिर निर्माण का आधार बना। इस बीच भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी ने पत्रकारवार्ता में कहा कि राजनाथ के बयान का स्रोत 'इनसाइड स्टोरी ऑफ सरदार पटेल, डायरी ऑफ मणिबेन पटेल' नाम की किताब है। इसके 24 वें पेज पर लिखा है, 'नेहरू ने भी बाबरी मस्जिद का सवाल उठाया था, लेकिन सरदार पटेल ने स्पष्ट कर दिया था कि सरकार मस्जिद बनवाने पर कोई पैसा खर्च नहीं कर सकती।' हालांकि यह पुस्तक कितनी प्रामाणिक है, यह स्पष्ट नहीं है। अलबत्ता राजनाथ के बयान पर नया सियासी बवाल जरूर खड़ा हो गया है।

संकुचित बयान के बाद संकट में सौहार्द्र

नजरिया

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी

लेखक भारत के राष्ट्रपति के ओएसडी रह चुके हैं। वर्तमान में पंजाब केंद्रीय विवि में चेयर प्रोफेसर हैं।

उनके संवादों में संतुलन और सहिष्णुता की झलक साफ दिखाई देती थी। वे जनता और पार्टी के बीच संतुलित आदान-प्रदान पर भरोसा रखते थे, जिससे उनकी छवि एक अनुभवी और दूरदर्शी नेता के रूप में स्थापित हुई। इसके विपरीत, अखिलेश यादव के राजनीतिक व्यक्तित्व में आजकल तीव्रता और तेजी ज्यादा नजर आती है। वे सार्वजनिक मंचों पर और मीडिया के सामने अक्सर तीखे भाषण देते हैं, जो विवादित व्यवहार का रूप ले लेते हैं। उनका संवाद शैली अब ज्यादा आक्रामक हो गई है, जिसका उद्देश्य शायद अपनी पार्टी की धारणा को तेज और सक्रिय बनाए रखना है। लेकिन कई बार इसकी वजह से वे अपनी राजनीतिक प्रसार रणनीति में उलझन में दिखते हैं और आलोचना का सामना करते हैं।

यूनेस्को में डॉ. अंबेडकर की प्रतिमा लगायी गयी इस पर गर्व पूरे भारत को है। पूरा भारत यानि भारत के ब्राह्मण सहित पूरे देश को इस पर गर्व है कि विश्व की प्रतिष्ठित संस्था यूनेस्को ने संविधान दिवस जब अपने 76वें पड़ाव पर था तो देश के गौरव डॉ. अंबेडकर, जिन्होंने संविधान बनाने में अपना विशिष्ट योगदान दिया, उनके सम्मान में यह प्रतिमा अपने परिसर में प्रतिष्ठित की। लेकिन डॉ. अंबेडकर को मानने वाले मध्य प्रदेश में विवादास्पद बयान दे रहे हैं यह शर्मनाक है। यह समावेशी चेतना के विकास में बाधा है और कहें कि महिलाओं ख़ास कर ब्राह्मण वर्ग की महिलाओं का अपमान है तो कोई इसमें शक नहीं है।

आईएएस संतोष वर्मा ने अजा-अजजा कर्मचारी संगठन अजाक्स के अधिवेशन में कहा था कि जब तक किसी ब्राह्मण की बेटी उनके बेटे को दान नहीं मिल जाती और उससे रोटी-बेटी का संबंध नहीं बन जाता, तब तक आरक्षण जारी रहना चाहिए। ऐसा देखा गया है कि देश में ब्राहमण वर्ग की महिलाओं, लड़कियों और बच्चियों को अब टार्गेट किया जाने लगा है। संविधान से घोषित की गयी अनुसूचित जाति समूह की जातियां ब्राह्मण, क्षत्रिय और सवर्ण समाज की बेटियों को टारगेट बनाते हैं और उनके साथ यौन संबंध बनाना चाहते हैं। इसमें सबसे ज्यादा निशाने पर ब्राहमण समाज की ही लड़कियां होती हैं। यह ब्राह्मणों को नीचा दिखाने की पूरी देश में एक तरह की साजिश है।

संतोष वर्मा अपने बयान को बहुत ही चालाकी के साथ अब यह कह रहे हैं कि मेरे बयान को तोड़-मरोड़ कर पेश किया जा रहा है। वह माफ़ी भी मांग रहे हैं कि यदि मेरे वचन से किसी को कष्ट पहुंचा हो या कोई आहत हुआ है तो हमें खेद है। हम ब्राह्मण समाज से माफ़ी मांगते हैं। सच यह है कि संतोष वर्मा एक शातिर आईएएस ऑफिसर हैं जिनके ऊपर इंदौर समेत कई जगह यौन उत्पीड़न के मुकदमे हुए हैं। वह अपनी नौकरानी के साथ भी मुकदमें झेल चुके हैं। छह महीने की जेल की सजा भी काट चुके हैं। उन्होंने जो भी शब्द, वाक्य व भावना व्यक्त किये थे वह वास्तव में असंवैधानिक, अमर्यादित और प्रतिकार भरी थी। यह उनका मानसिक दिवालियापन है जिसमें वह कुछ ऐसा बोल जाते हैं, जिसे बार-बार दुहराने में भी शर्म आती है।

डॉ. भीमराव अंबेडकर ने सम्पूर्ण जीवन सामजिक समानता की लड़ाई लड़ी। वह वैश्विक स्तर पर भारतीय समाज और संस्कृति में व्याप्त विकृतियों को उठाते रहे और एक ऐसे नागरिक समाज की स्थापना की कोशिश करते रहे जिसमें सबकी गरिमा सुरक्षित हो और सबको न्याय मिल सके। उन्होंने कभी भी असभ्य शब्द प्रयोग नहीं किया। उन्होंने कभी भी अमर्यादित बयान नहीं व्यक्त किया। उन्होंने भारतीय शास्त्रों को खूब पढ़ाई की और जो भी तर्कसंगत था उसे व्यक्त किया। सामाजिक न्याय की लड़ाई में डॉ. अंबेडकर फुले जो कि उनके गुरु थे, उनसे भी आगे निकल जाते हैं तो इसके पीछे डॉ. अंबेडकर की अपनी चिन्तन की ताकत थी। लेकिन अब का समाज जो कि उनके ही समाज से आता है वह पढ़ता नहीं है, अनाप-सनाप कहता है। डॉ. अंबेडकर का इस प्रकार वह अपमान कर रहा होता है। वह डॉ. अंबेडकर को ही पढ़ व आत्मसात कर लेते तो कभी भी ब्राह्मणों की बहन-बेटियों के बारे में ऐसा नहीं बोलते। डॉ. अंबेडकर को अपमानित करते लोग अब इस तरह तो अपने समाज का भला कभी नहीं कर सकते। संतोष वर्मा तो एक मूर्ख सिविल सर्वेंट है जिसे अपने किए पर बार-बार माफ़ी मांगनी पड़ी और अभी जिस प्रकार का उस पर आरोप है वह शो-कॉज नोटिश के बाद पद्च्युत भी हो सकता है।

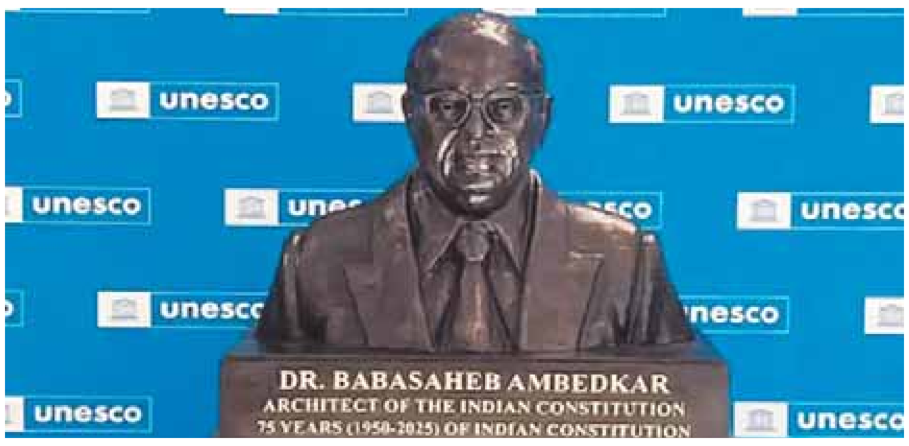

सबसे अहम् बात यह है कि संतोष वर्मा सरीखे लोग जो कि समाज की सेवा हेतु मसूरी व दूसरे इंस्टीट्यूट में ट्रेनिंग लेकर आते हैं और उन्हें देश के राष्ट्रपति भी अपने सभागार में सम्मान सहित सेवार्थ भारत को समर्पित करते हैं, वे अपने कर्त्तव्य व निष्ठा को भूल जाते हैं और जाति, धर्म, लिंग, पंथ आधारित भेदभाव करने लगते हैं। अकूत धन-सम्पत्ति एकत्रित करते हैं और ज्यादा विचलित व विक्षिप्त होने की स्थिति में सामजिक सौहार्द को मिटाने पर उतर आते हैं। वे अपने समय में अपने कार्य क्षेत्र में अनेक दुर्गुणों के साथ सेवा के नाम पर मेवा खाते हैं और भयानक मर्यादाओं का हनन करते हैं। यह सोचने वाली बात है कि संतोष वर्मा ने अपने पूरे कार्यकाल में जितने विवादास्पद रहे हैं वे कितनी बार मर्यादाओं का हनन किए होंगे। सोचने वाली बात यह है कि उन्होंने अपने पद पर रहकर कितने गरीबों को दुत्कारा होगा और एक ख़ास ब्राह्मण समाज की बहन-बेटियों के साथ अपमानजनक व्यवहार किया होगा। आईएएस एसोसिएशन ऐसे लोगों के ऊपर कभी स्वतः संज्ञान नहीं लेता और न ही कार्यवाही की मांग करता है, दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है।

कौन किसके साथ विवाह करेगा, कौन किसके साथ रहेगा, कौन किसके साथ प्रेम करेगा, यह बहुत ही व्यक्तिगत विषय है। ऐसे अनेक विवाह हुए हैं जहाँ अपनी मर्ज़ी से लोग विवाह कर लिए हैं। यदि माँ पिता किसी वजह से उन्हें स्वीकार भी नहीं कर सके हैं तो भी वे इस समाज के हिस्सा हैं। संविधान ने यह सबको अधिकार दिया है। लेकिन इस प्रकार से एक जाति को टारगेट करना और खासकर स्त्री समाज को अपमानित करने की कोशिश करना, संविधान की ओर से ऐसी कोई स्वतंत्रता नहीं है। इसलिए अब जो मध्य प्रदेश में जातीय संघर्ष धीरे-धीरे अपना उग्र रूप ले रहा है, वह चिंताजनक है।

दतिया में संतोष वर्मा के किसी समर्थक ने उनके पक्ष में बात की तो ब्राहमणों ने उन्हें पिटाई की। इन हिंसाओं की वजह इस प्रकार के असभ्य बयान हैं। यदि इससे अभी से नहीं बचा गया और इस पर सरकार की ओर से सही उपाय नहीं सोचे गए तो मध्य प्रदेश आने वाले समय में भयानक हिंसा व क्रूरता की बलि चढ़ने वाला है और आने वाले समय में हानि भी हो सकती है। असभ्य समाज कभी भी सनातन को मजबूत नहीं कर सकता। हिंसा किसी भी असभ्य बयानों को कुचलने का विकल्प नहीं हो सकती। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि हम सौहार्द्र का दामन थाम लें और एक दूसरे की इज्जत करना सीखें। अपने ही समाज में विवाह करें। अपने समाज के गरीब लोगों को अपना रिश्तेदार बनाकर उन्हें भी अपने बराबर करने की पहले कोशिश करें। महिलाओं का सम्मान करें और भारत के विकास यात्रा को आगे बढ़ाएं। अपमान करने वाले लोग कभी स्तुति नहीं पाते। सम्मान करने वाले समस्त लोकों में सम्मानित होते हैं। इसलिए हर वर्ग का दायित्व है की मध्य प्रदेश के सौहार्द्र को बचा लें।

पीएम का संकल्प

प्रमोद भार्गव

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

मानसिक गुलाम बनाने वाली मैकाले की शिक्षा पर ताला

1835 से भारत में पैठ जमा चुकी उस पश्चिमी मानसिकता पर ताले लगाने के राष्ट्रीय संकल्प की जरूरत है, जो स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों को ध्वस्त करती हुई औपनिवेशिक शिक्षा को लागू करने की थॉमस मैकाले की परियोजना के माध्यम से लागू हुई थी। भारत की शैक्षिक और सांस्कृतिक नींव को खोखला करने के लिए मैकाले द्वारा किए गए अपराध को 2035 में 200 वर्ष पूरे हो जाएंगे। अतएव आने वाले दस सालों में गुलामी की इस औपनिवेशिक मानसिकता से मुक्त होने के राष्ट्रीय संकल्प की जरूरत है।' प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ये विचार एक्सप्रेस समूह के संस्थापक रामनाथ गोयनका की स्मृति में दिए व्यख्यान में व्यक्त किए थे। फिरंगी हुकूमत के दौरान इंग्लिश एज्युकेशन एक्ट -1835 के तहत भारत में संस्कृत,हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं की शिक्षा नष्ट कर अंग्रेजी शिक्षा की बुनियाद रखी गई थी। इस दासता को 190 वर्ष से हम ढोते चले आ रहे हैं।अतएव अब इससे मुक्ति का समय आ गया है।

मैकाले की एक किताब है 'द लाइफ एंड लैटर्स ऑफ लार्ड मैकाले'। इस किताब में मैकाले ने भारत की अंग्रेजी शिक्षा पद्धति लागू करते हुए तीन भविष्यवाणियां की थीं, जो खरी उतरीं। उनकी पहली भाष्यवाणी थी कि मेरी इस नई शिक्षा प्रणाली के चलते डेढ़ सौ साल बाद भारतीय व्यक्ति अपने धर्म से विमुख हो जाएगा। उसके घर में अपने धर्म ग्रंथ होंगे, लेकिन वे उन्हें पढ़ेंगे नहीं। दूसरी भविष्यवाणी है, उसे अपनी भाषा बोलने में असुविधा होगी। वह शर्म महसूस करेगा। वह अपनी भाषा में बोल नहीं पाएगा। दूसरी भाषाओं के शब्द उधार लेने पड़ेंगे। तीसरी है,भारतवासी अपनी पारंपरिक वेशभूषा पहनना भूल जाएंगे। पुरुष अपनी वेशभूषा लगभग भूल गए हैं। महिलाएं जरूर अपनी परंपरा को बनाये रखे हुए हैं। याद रहे जिस देश के वासी अपनी भाषा, धर्म और वेशभूषा भूल जाते हैं, उनकी संस्कृति भी धीरे-धीरे नष्ट हो जाती है। लेकिन हम हैं कि अपनी संस्कृति के पराभव से निश्चिंत हैं। अतएव प्रधानमंत्री के संकल्प में प्रत्येक नागरिक की भागीदारी जरूरी है।

इस परिप्रेक्ष्य में मार्क्सवादी वामपंथी सोच के शिक्षाविद्, इतिहासज्ञ एवं साहित्यकार भी गुलाम भारत में थोपी हुई शैक्षिक रूढ़ियों को एक जन्मजात संस्कार की तरह ढोते रहे हैं। नेहरू मंत्रिमंडल के आरंभिक केंद्रीय शिक्षा मंत्रियों ने इस विचार का बढ़-चढ़कर पोषण किया। इसी का परिणाम रहा कि फिरंगी दासता से छुटकारा नहीं मिल पा रहा है। हालांकि नई शिक्षा नीति के अंतर्गत राष्ट्र की लुप्त कर दी गई सांस्कृतिक संपदा के महत्व को अंगीकार करते हुए ज्ञान, कर्म, संस्कार, भाषा, संस्कृति और कौशल दक्षता को विद्यार्थी में विकसित करने का काम मातृभाषाओं में शिक्षा के माध्यम से कर दिया है। लेकिन शिक्षा में अंग्रेजी माध्यम से विद्यार्थी को शिक्षित करने की आम भारतीय की गुलाम मानसिकता अभी भी बनी हुई है। इसीलिए देखने में तो शिक्षित भारतवासी भारतीय हैं, किंतु उनके मन में मानसिक गुलामी आज भी बनी हुई है। व्यक्तित्व निर्माण की यही बाधा व्यक्ति में राष्ट्रबोध का पूर्णतः प्रादुर्भाव नहीं कर पा रही है। अतएव दासता के इस शैक्षिक निर्मूलन से मूल्य-बोध के संस्कारों से सांस्कृतिक चेतना का लोक व्यापीकरण होगा और सनातन मानवीय मूल्यों की सुरक्षा के साथ भारतीय भाषाएं भी अपना अस्तित्व बनाए रखेंगी। ये मूल्य न केवल व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाएंगे, बल्कि देश को भी आत्मनिर्भरता के शिखर पर पहुंचाएंगे। देश की सांस्कृतिक संप्रभुता की पहचान को भी अक्षुण्ण बनाए रखने का काम करेंगे।

भारत में अंग्रेजों का शासन स्थापित होने के बाद एक समय तक अंग्रेजों की भाषा-नीति में बदलाव होता रहता था। सन् 1833 में मैकाले मिनिट्स के होते हुए ईस्ट इंडिया कंपनी ने अदालती तथा अन्य शासकीय कार्यों में अरबी-फारसी का मिश्रित रूप अपनाया था। हिंदू राजाओं के साथ ईस्ट इंडिया कंपनी अपने पत्र-व्यवहार में स्थानीय बोलियों के शब्दों का भी प्रयोग करती थी।किंतु 1835 में इंग्लिश एज्युकेशन एक्ट लागू होने के बाद से स्थितियां बदलती चली गईं। हालांकि 1880 में कलकत्ता में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना हुई। उस समय अंग्रेजी शासन की राजधानी कोलकाता थी। जॉन गिलक्राइस्ट उस कॉलेज के भाषा विभाग के अध्यक्ष थे। उन्होंने खड़ी बोली के प्रयोग को प्रोत्साहित किया और कंपनी सरकार की भाषा नीति तय करने में आवश्यक सुझाव दिए। वह हिंदी को हिंदुई तथा हिंदुस्तानी कहते थे और उसके लिए रोमन लिपि को आवश्यक मानते थे, किंतु न तो हिंदी का नाम बदल सके और न ही लिपि।

गिलक्राइस्ट के बाद ही, मैकाले की भाषा-नीति मानी गई और उच्च शिक्षा से संस्कृत एवं हिंदी का माध्यम समाप्त कर दिया गया। वैदिक संस्कृत, गणित एवं समाज विज्ञान की शिक्षाओं को धार्मिक शिक्षा की श्रेणी में रखकर नकार दिया गया। उन्नीसवीं शताब्दी के चौथे दशक में सरकारी कामकाज में उर्दू को वरीयता दी गई और हिंदी को उपेक्षित कर दिया गया। उस युग में बनारस हिंदी का केंद्र था और बनारस की दो बड़ी हस्तियां हिंदी में लिख रहीं थीं। एक थे राजा शिवप्रसाद और दूसरे भारतेंदु हरिशचंद्र। राजा शिवप्रसाद अंग्रेजी सरकार की सेवा में थे और अंग्रेजों की भाषा नीति का समर्थन करते हुए उन्होंने उर्दू का पक्ष लेते हुए हिंदी की निंदा की। उनकी वफादारी देखकर सरकार ने उन्हें 'सितारे हिंद' की उपाधि दी। हरिश्चंद्र ने सरकार की भाषा-नीति का विरोध किया और जगह-जगह जाकर हिंदी के समर्थन में सभाएं कीं। जनता ने हरिश्चंद्र को 'भारतेंदु' की उपाधि से विभूषित किया। भारतेंदु की लोकप्रियता के सामने सितारे हिंद अस्त-पस्त हो गए। जॉन गिलक्राइस्ट जैसे अनेक अंग्रेज हिंदी के समर्थक थे। ऐसे अंग्रेजों में हेनरी पिनकोट ने भारतेंदु के समर्थन में हिंदी के पक्ष में बहुत काम किया।

जिस राष्ट्रीय चेतना को हम स्वतंत्रता आंदोलन के संदर्भ में लेते हैं, उस तरह के लेखन का भारतीय अंग्रेजी लेखकों में सर्वथा अभाव था। हालांकि 'वंदे मातरम' गीत के रूप में भारत को उसकी व्यापक राष्ट्रीयता की पहचान देने वाले बांग्ला उपन्यासकार बंकिमचंद्र चटर्जी न केवल बंगाल के चुनिंदा लेखकों में से एक थे, बल्कि उन्हें भारतीय अंग्रेजी साहित्य के शुरूआती लेखन का श्रेय भी जाता है। उन्होंने 'राजमोहन वाइफ' उपन्यास अंग्रेजी में लिखा था। किंतु राष्ट्रीय स्वाभिमान के चलते कालांतर में उन्होंने केवल बांगला और संस्कृत में लिखने का संकल्प लिया। अंग्रेजी में रचना-सृजन पर पूरी तरह विराम लगा दिया। भाषाई अस्मिता और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रकल्प का यह ऐसा अनूठा संकल्प था, जिसने वंदे मातरम के माध्यम से फिरंगी सत्ता को चुनौती देते हुए जनमानस में सर्वाधिक राष्ट्रबोध जगाने का काम किया।

आर्थिक उदारवादी नीतियां लागू होने के बाद देश में आवारा पूंजी का दबाव इस हद तक बढ़ा कि हम पूंजी आधारित लिप्सा और औपनिवेशिक शक्तियों की व्यवस्था को विकास व प्रगति का आदर्श मानक मानने लगे। नतीजतन आर्थिक विशंगति बढ़ी और असंतोष उपजा। माओवाद बनाम नक्सलवाद की जड़ें गहरी करने में इस असंतोष ने उर्जा का काम किया। वामपंथी चरमपंथ ने इस असंतोष को अपने राजनीतिक स्वार्थों के लिए भुनाने का काम किया। समरसता व समावेशन संबंधी जो मूल अवधारणाएं हैं, उन्हें इस चरमपंथ ने समूल नष्ट करते हुए वर्ग संघर्ष पैदा करने का काम किया। विषमता और वैमनस्यतापूर्ण समाज-रचना को बढ़ावा दिया। भावनात्मक इस विद्वेश ने स्वतंत्र वैचारिक मानसिकता को कुंठित करने का काम किया। जबकि विचार-निर्माण के लिए शैक्षिक परिसरों में लोकतांत्रिक खुलेपन की जरूरत है, जिससे शिष्य, शिक्षक से प्रश्न करने में कोई संकोच न करे। दुर्भाग्य से हमने आज्ञाकारी शिष्य को आदर्श माना हुआ है। यह आज्ञाकारिता नव-सृजनशीलता के लिए बाधक है। यही कारण है कि हम नवोन्वेष, वैज्ञानिक अनुसंधान और देशज उत्पादकता में लगातार पिछड़ते जा रहे थे, इसमें अब मोदी के नेतृत्व में गति आ रही है।

ब हमारी पूरा शिक्षाजन्य ढांचा, आज्ञापालन को प्रोत्साहित व पुरस्कृत करता है। स्वातंर्त्य-चेता विद्यार्थी की नूतन पहल, जिज्ञासा और प्रश्नाकूलता को फटकारा जाता है। विचार नियंत्रण की यह क्रूरता नव-सर्जक की भ्रूण-हत्या कर देती है। यही कारण है कि हम आजादी के बाद न तो नचिकेता, अष्टावक्र और विवेकानंद पैदा कर पाए और न ही सीवी रमन, जगदीश चंद्र बसु और रामानुजन ? दरअसल औपनिवैशिक शिक्षा पद्धति और अंग्रेजी की अनिवार्यता के चलते हमारे शिक्षा संस्थान महज डिग्रीधारी नकलचियों की फौज खड़ी करने में लगे हैं। वे रोबोट और क्लोन बनाने की दक्षता को ही श्रेष्ठता का पर्याय मानकर चल रहे हैं, क्योंकि रोबोट विरोध नहीं करते और क्लोन से विकसित प्राणी प्रकृति प्रदत्त विलक्षणता खो देते हैं, अतएव उनकी मौलिक सृजनशीलता बचपने में ही कुंठित हो जाती है। आज्ञापालकों के ये उत्पाद अंततः सृजन से जुड़ी वैचारिकता के लिए आघातकारी सिद्ध होते हैं, केवल कैरियर बनाना और पैसा कमाना इनका मुख्य ध्येय रह जाता है, जो व्यक्तिगत उपलब्धियां हैं। नरेंद्र मोदी ने अब आने वाले 10 साल में मैकाले की शैक्षिक एवं अंग्रेजी मानसिकता से मुक्ति का जो संकल्प लिया है, उससे जरूर बदलाव की उम्मीद की जा सकती है।

डिजिटल बाढ़ में डूबती पठन-संस्कृति

दृश्य प्रधान तकनीक

विनोद कुमार विक्की

युवा लेखक

समाज के निर्माण में साहित्य का योगदान उतना ही मौलिक है, जितना शरीर में रक्त का। लेखक केवल शब्दों का जादूगर नहीं, बल्कि समय का साक्षात्कार करने वाला वह सजग प्रहरी है, जो अपनी लेखनी से दिशा और दशा दोनों निर्धारित करता है। उसकी रचनाएँ न केवल समाज के मनोविज्ञान को प्रतिबिंबित करती हैं, बल्कि विचारों की उस गूंज को भी जन्म देती हैं, जो परिवर्तन की नींव बनती है। इसलिए साहित्य को केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि चेतना का माध्यम माना गया है।

परंतु बीते कुछ वर्षों में दृश्य-प्रधान तकनीक ने पठन-संस्कृति को अभूतपूर्व चुनौती दी है। मोबाइल, ओटीटी प्लेटफॉर्म, वेब सीरीज़, शॉर्ट वीडियो और अनगिनत सोशल मीडिया ऐप्स ने मनोरंजन और सूचना के संसार को पूरी तरह बदल दिया है। परिणामस्वरूप पाठकों की जगह दर्शकों की संख्या में इजाफा हुआ है। पुस्तकें, जो कभी ज्ञान का मुख्य द्वार हुआ करती थीं, अब रैक की शोभा बनकर धैर्य और समय की प्रतीक्षा करती दिखने लगी हैं। पुस्तक मेला का आयोजन पाठक-लेखक संबंध को जीवंत रखने का साधन मात्र रह गया है।

सच यह भी है कि तकनीक ने जीवन को सरल, त्वरित और रोचक बनाया है। लेकिन इसी तकनीकी आकर्षण ने एकाग्रता, गहराई और पठन की प्रवृत्ति को कमजोर किया है। पहले लोग पुस्तकालय जाते थे, नयी पुस्तकों की खोज करते थे, साहित्यिक गोष्ठियों में बहस करते थे। आज वही व्यक्ति मोबाइल स्क्रीन पर स्क्रॉल करता है और मिनटों में 'रील' और 'क्लिप' के माध्यम से मनोरंजन प्राप्त कर लेता है। कथा और कविता का स्थान वीडियो कंटेंट ने ले लिया है। यह स्थिति लेखक और पाठक दोनों के अस्तित्व के लिए चुनौतीपूर्ण है।

फिर भी यह कहना भूल होगी कि लेखन का युग समाप्त होने की कगार पर है। सच तो यह है कि लेखन ने अपना रूप बदला है। आज के लेखक ई-बुक, ऑडियोबुक, ब्लॉग, डिजिटल पत्रिकाओं और सोशल मीडिया मंचों के माध्यम से अपने शब्दों को नए पाठक वर्ग तक पहुँचा रहे हैं। शब्द अब केवल कागज़ की कैद में नहीं, बल्कि स्क्रीन की रोशनी में भी चमक रहे हैं। डिजिटल माध्यमों ने अभिव्यक्ति को व्यापकता दी है, जिससे क्षेत्रीय लेखक भी वैश्विक मंचों तक पहुँच बनाते दिखाई दे रहे हैं।

समकालीन साहित्य निरंतर बदलते समाज का प्रतिबिंब बन चुका है। युवा पीढ़ी की आकांक्षाएँ, सामाजिक विसंगतियाँ और मानवीय रिश्तों की जटिलताएँ नई दृष्टि और नए शिल्प के साथ अभिव्यक्त हो रही हैं। व्यंग्य, कहानी, कविता और आलेख—सभी विधाओं में रचनात्मक प्रयोगों का दौर जारी है।

यह सही है कि मुद्रित पुस्तकें पहले जितनी लोकप्रिय नहीं रहीं, परंतु विचारों का प्रवाह आज भी उतना ही जीवंत है। लेखक अब भी सोच को दिशा देता है, चेतना को जगाता है। जब तक समाज रहेगा, शब्दों की आवश्यकता बनी रहेगी—क्योंकि मानव को मनुष्य बनाने वाली सबसे बड़ी शक्ति शब्द ही हैं।

हमें अपनी नई पीढ़ी को पुस्तकें पढ़ने, साहित्य से जुड़ने और विचारशील बनने के लिए प्रेरित करना होगा। मनोरंजन के सैकड़ों साधन आ सकते हैं, पर साहित्य का कोई विकल्प नहीं हो सकता।

आज भी लेखन की ज्योति जगमगा रही है, भले ही स्याही डिजिटल हो गई हो, पर शब्दों की रोशनी कभी बुझ नहीं सकती।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

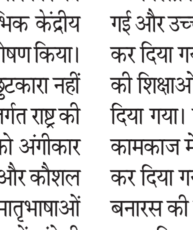

राजेंद्र बज

लेखक व्यंग्यकार हैं।

आपके चरण कहां हैं श्रीमान ?

वैसे तो दुनिया जानती है कि आदमी के चरण उसके चरणों में हुआ करते है। लेकिन जब कोई शख्सियत अतिरिक्त ज्ञान भरी बात कह देती है, एकाएक हमें दिव्य ज्ञान की अनुभूति होने लगती है। जिसके चलते हम इतने नादान बन जाते है कि सामने वाले के चरण कहां है ? यह जानने को उत्सुक हो जाते हैं। दरअसल हमारी परंपरा में ज्ञानियों के चरण छूने का रिवाज है। चतुर सुजान कहते है कि ज्ञानियों की संगत में ज्ञान की रंगत आती है। बीते जमाने में ज्ञान प्राप्ति के बहुत सीमित साधन हुआ करते थे। गिनती की किताबे थी, सीमित पाठ्यक्रम था और वह भी किसी एक विशेष एंगल पर ही टिका हुआ था।

आदमी चाह कर भी हर एक विधा में पारंगत नहीं हो सकता था। अलग-अलग विषय के अलग-अलग विद्वान हुआ करते थे। लेकिन आजकल के दौर में ऐसा नहीं है, अब तो आदमी घर बैठे बैठे ज्ञान के महासागर में जितनी चाहे उतनी डुबकी लगा सकता है। आजकल के दौर में कब किसी को कहां और किससे ज्ञान मिल जाए, कुछ कहा नहीं जा सकता। जब से यह मुआ मोबाइल और लैपटॉप आया है, इसके हर एक फीचर में ज्ञान ही ज्ञान का भंडार है। एक जानकारी चाहो तो हजार जानकारी गले पड़ जाती है। लगभग हर एक आदमी ज्ञान के इस भंडार को अपनी जेब में रखता है और अपने ठिये पर भी रखता है।

बीते दौर में धीरूभाई एंड कंपनी ने इस स्लोगन का भरपूर प्रचार किया था कि कर लो दुनिया मुठ्ठी में, तब यह बात धंधा बढ़ाने की गरज से कही गई नजर आई थी। लेकिन सचमुच देखते ही देखते लगभग हर आदमी की मुठ्ठी में एक प्रकार से दुनिया ही समा गई है। आजकल आदमी चाहे कितना भी अपने अकेलेपन को महसूस करें, उसके आभासी दुनिया में तो सैकड़ो नहीं हजारों मित्र हुआ करते हैं। आजकल किसी को इतना समय नहीं है कि कोई दूसरे को समय दे सके, उसे सुन सके, उसे सुना सके या उसकी दिनचर्या के बारे में जान सके। या कि कोई निजी खुशी किसी से साझा कर सके।

लेकिन आजकल तो आदमी घर बैठे क्या सोचा, क्या किया और उसकी जिंदगी में कौन सा शुभ अवसर आया, इसका ऐलान दुनिया भर के सामने कर सकता है। यहां तक कि मन की भड़ास निकालते हुए कुछ इस कदर उकेर सकता है कि उसके कलेजे को ठंडक महसूस होने लगे। आजकल आदमी मन ही मन किसी बात को लेकर कूढ़ता ही रहे यानि कि मन के गुबार को मन में ही दफन करने की कोशिश करें, यह कोई जरूरी नहीं रह गया है। यही कारण है कि आदमी दुनिया भर के किसी भी कोने से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का भरपूर उपयोग करने लगा है। यह अलग बात है कि ऐसा गुबार वह संवैधानिक दायरे में रहकर ही निकाल सकता है।

लेकिन फिर भी घुमा फिरा कर पत्थर फेंक ही दिया करता है। यही कारण है कि चाहे क्या तो पिद्दी और क्या पीढ़ी का शोरबा, लेकिन फिर भी कभी-कभी हाथी के कान में चींटी घुस आने जैसा दृश्य निर्मित हो जाता है। यह सिलसिला आम आदमी को बहुत ज्ञानी बना देता है और जानकार भी। लेकिन इन सब के बीच कोई शख्सियत बात ही कुछ ऐसी कह जाती है या कर जाती है कि बरबस ही उसके चरण चूमने की भावना बलवती हो जाती है। फुरसत के पलों में अपुन मोबाइल और लैपटॉप लेकर बैठ जाया करते हैं। अत्र तत्र सर्वत्र ज्ञान ही ज्ञान बरसता दिखाई देता है। इन सब के बीच जब कोई महाज्ञान की प्राप्ति हो जाती है, दाता से पूछने की तमन्ना जाग उठती है कि आपके चरण कहां हैं श्रीमान?

पर्यावरण

डॉ. मनीष जैसल
लेखक मीडिया प्राध्यापक हैं।

पेड़ काटकर साफ हवा पाने की चाहत !

कॉप 30 के दौरान स्वीकार किए गए 'बेलेम पैकेज' ने यह संकेत दिया कि वनों यानी पेड़ों, जंगलों की कटाई को रोकना, वनीकरण और प्राकृतिक आवरण की रक्षा करना अब वैश्विक रणनीति का जरूरी हिस्सा है। हालांकि सम्मेलन में ऐसा प्रस्ताव नहीं हो पाया जो जीवाश्म ईंधन को तुरंत बंद करने या वनों की कटाई पूरी तरह रोकने का कानूनी बाध्यकारी निर्णय बना दे, लेकिन इसने जलवायु अनुकूलन , वन संरक्षण और जलवायु न्याय को फिर से वैश्विक एजेंडा पर लाने का प्रयास किया है ।

दुनिया भर में वायु-प्रदूषण ने एक गंभीर संकट का रूप ले लिया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, पृथ्वी की लगभग 92 प्रतिशत आबादी ऐसी हवा में सांस लेने को मजबूर है जो स्वास्थ्य मानकों के अनुकूल नहीं है। हर वर्ष लगभग 70 लाख लोगों की समय से पूर्व मृत्यु, वायु-प्रदूषण से उत्पन्न बीमारियों के कारण होती है। यह स्थिति बताती है कि साफ़ हवा अब मानव का मौलिक अधिकार ही नहीं, बल्कि अस्तित्व का प्रश्न बन चुकी है। विडंबना यह है कि जहाँ हम स्वच्छ हवा की मांग कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर बड़े पैमाने पर जंगलों और पेड़ों को काटा जा रहा है। यह विरोधाभास हमें सोचने पर मजबूर करता है कि क्या हम स्वच्छ हवा सच में चाहते हैं, या केवल विकास और सुविधा की अंधी दौड़ में प्रकृति को खो देना चाहते हैं?

इसी पृष्ठभूमि में, हाल ही में ब्राज़ील के बेलेम में आयोजित सीओपी 30 ने यह पुनः स्पष्ट कर दिया कि सिर्फ देश में सिर्फ़ आर्थिक विकास नहीं, पर्यावरण व जीवन की सुरक्षा भी उतनी ही ज़रूरी है। कॉप 30 में दुनिया के लगभग 190 देशों ने शामिल होकर वनों, भूमि, जलवायु और मानव स्वास्थ्य से जुड़े प्रस्तावों पर चर्चा की जिसमें वनों की रक्षा को पुनर्रचना की विशेष प्राथमिकता दी गई।

कॉप 30 के दौरान स्वीकार किए गए 'बेलेम पैकेज' ने यह संकेत दिया कि वनों यानी पेड़ों, जंगलों की कटाई को रोकना, वनीकरण और प्राकृतिक आवरण की रक्षा करना अब वैश्विक रणनीति का जरूरी हिस्सा है। हालांकि सम्मेलन में ऐसा प्रस्ताव नहीं हो पाया जो जीवाश्म ईंधन को तुरंत बंद करने या वनों की कटाई पूरी तरह रोकने का कानूनी बाध्यकारी निर्णय बना दे, लेकिन इसने जलवायु अनुकूलन , वन संरक्षण और जलवायु न्याय को फिर से वैश्विक एजेंडा पर लाने का प्रयास किया है ।

यहाँ एक बात स्पष्ट है कि अगर हम वायुमंडल, हवा, जलवायु और जीवन की रक्षा करना चाहते हैं तो वनों, पेड़ों, जंगलों का संरक्षण हमें प्राथमिकता बनानी होगी। सीओपी 30 ने हमें एक चेतावनी दी है कि विकास और सुविधा की आड़ में पेड़ काटकर स्वच्छ हवा पाने का सपना न केवल अनावश्यक, बल्कि खतरनाक भी है।

विश्व संसाधन संस्थान की ताज़ा रिपोर्ट बताती है कि वर्ष 2024 में दुनिया ने लगभग 67 लाख हेक्टेयर से अधिक जंगल खो दिए, जिनमें दक्षिण अमेरिका, अफ्रीका और दक्षिण-पूर्व एशिया सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्र रहे। अमेजन वर्षावन, जिसे पृथ्वी के 'फेफड़े' कहा जाता है, 2023-24 के दौरान 25,023 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में नष्ट हो चुका है। वैज्ञानिक चेतावनी दे रहे हैं कि यदि अमेज़न की कटाई इसी तेजी से जारी रही, तो वर्ष 2050 तक यह स्थायी वन न रहकर सवाना जैसी कमजोर वन-प्रणाली में बदल सकता है। यह आंकड़े दुनिया को स्पष्ट रूप से दिखाता है कि वनों की कटाई स्थानीय समस्या नहीं, बल्कि वैश्विक पर्यावरण और जलवायु के लिए खतरा है।

भारत भी इस गंभीर संकट से अछूता नहीं है। ग्लोबल फारेस्ट वाच की रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2001 से 2024 तक देश ने लगभग 2.31 मिलियन हेक्टेयर पेड़-कवरेज खो दिया, जो कुल वृक्षावरण का लगभग सात प्रतिशत है। सिर्फ 2024 में भारत ने 18,200 हेक्टेयर प्राथमिक जंगल खो दिए, जो 2023 में 17,700 हेक्टेयर की तुलना में अधिक है। इस नुकसान के परिणामस्वरूप लगभग 68 मिलियन टन कार्बन-डाइऑक्साइड वातावरण में वापस गया, जिसने वायु-प्रदूषण और जलवायु अस्थिरता दोनों को और अधिक बढ़ाया।

पेड़ों और वनों के बिना हवा की गुणवत्ता सीधा प्रभावित होती है। पेड़ न केवल ऑक्सीजन प्रदान करते हैं, बल्कि धूल-कण, प्रदूषक गैसें और कार्बन कणों को भी अवशोषित करते हैं। जब जंगलों को काटा जाता है, तो वायुमंडल में प्रदूषण तेजी से बढ़ता है और प्राकृतिक फ़िल्टर खत्म हो जाते हैं। परिणामस्वरूप मौसम अस्थिर होता है, गर्मी और हीट वेव्स बढ़ती हैं, स्मॉग और धुंध शहरों को ढक लेती है। दिल्ली इसका सबसे बड़ा उदाहरण है, जहाँ 2023-24 में लगभग 70 प्रतिशत दिनों में वायु-गुणवत्ता 'खराब' या 'बहुत खराब' श्रेणी में दर्ज की गई।

वन कटाई केवल पर्यावरण की हानि नहीं, बल्कि मानव जीवन की गुणवत्ता पर सीधा वार है। दुनिया में जहां-जहां वन नष्ट हो रहे हैं, ब्राजील, पेरू, इंडोनेशिया, मलेशिया, अफ्रीका के कांगो क्षेत्र और रूस वहाँ जलवायु, कृषि, पानी और आजीविका सब प्रभावित हैं। भारत भी इसी राह पर है, जहाँ एक ओर वृक्षारोपण और संरक्षण की बातें होती हैं, लेकिन व्यवहार स्तर पर स्थिति उलटी है। महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश और दिल्ली-एनसीआर में पेड़ों की कटाई के विरोध में कई आंदोलन हुए, जहाँ हजारों लोग पेड़ बचाने के लिए सड़क पर उतरे। लेकिन यह भी सच है कि पेड़ों की रक्षा के बजाय अधिकतर लोग केवल प्रतीकात्मक अभियान तक सीमित रहते हैं और अपनी जीवनशैली में बदलाव नहीं करते। निजी वाहनों का अंधाधुंध उपयोग, प्लास्टिक पर निर्भरता, ऊर्जा का असंतुलित उपभोग और प्रकृति के प्रति उदासीनता यह सब हमारी मानसिकता को स्पष्ट करता है।

शहरी क्षेत्रों में हरियाली का विस्तार, स्वच्छ ऊर्जा और सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा, वृक्षारोपण के साथ संरक्षण को समान महत्व, और स्कूलों-कॉलेजों में पर्यावरण-शिक्षा पर बल, ये सभी कदम सामूहिक स्तर पर अनिवार्य हैं। प्रकृति के साथ न्याय तभी संभव है, जब हम सुविधाओं की अंधी दौड़ को नियंत्रित करते हुए जिम्मेदार नागरिक के रूप में कार्य करें।

यह सवाल हर व्यक्ति के सामने खड़ा है कि क्या हम अपने बच्चों को ऐसी धरती देना चाहते हैं जहाँ वे स्वच्छ हवा के लिए मास्क और मशीनों पर निर्भर हों? यदि हमने आज जंगलों को बचाने का निर्णय नहीं लिया, तो आने वाली पीढ़ियाँ स्वच्छ हवा को केवल किताबों में पढ़ने के लिए मजबूर होंगी। 'पेड़ काटकर साफ हवा पाने की चाहत' जितनी विरोधाभासी है, उतनी ही खतरनाक है। स्वच्छ हवा तभी मिलेगी, जब धरती का हर पेड़ सुरक्षित रहे और जंगलों को विकास और लालच की बलि चढ़ाना बंद हो।

मुद्दा

तनुजा चौबे
लेखक साहित्यकार हैं।

विवाह का बदलता स्वरूप : एक विचारणीय प्रश्न

समय के साथ-साथ रीति-रिवाजों में परिवर्तन होना स्वाभाविक था, परंतु यह परिवर्तन इतना तीव्र हो जाएगा, इसकी कल्पना शायद ही किसी ने की होगी। आज व्हाट्सएप पर भेजा गया एक ई-कार्ड निमंत्रण का पूरा विकल्प माना जाने लगा है। जबकि पहले 'नावन' नामक महिला घर-घर जाकर सभी संस्कारों का बुलावा देती थी—भोजन तक का निमंत्रण भी वही देती थी। लोग प्रेम, आत्मीयता और उत्साह के साथ विवाह के हर चरण में शामिल होते थे। आज यह सहभागिता सीमित होकर कुछ मेहमानों के आने, महँगा-सा उपहार देने और औपचारिकता निभाकर लौट जाने तक सिमट गई है। हर माता-पिता चाहते हैं कि उनके बच्चे संस्कारवान बनें, परंतु यह प्रश्न विचारणीय है कि क्या हम स्वयं अनजाने में उन्हें उस दिशा में धकेल रहे हैं, जहाँ संस्कारों की जगह दिखावा और आधुनिकता अधिक महत्व रखने लगे हैं? यदि बचपन से बच्चों को मूल्यों की शिक्षा दी जाए, परंपराओं का महत्व समझाया जाए और हम केवल 'आधुनिक' दिखने की दौड़ में न पड़ें, तो निश्चित ही परिदृश्य अलग होता। लेकिन लगता है कि परवरिश में कहीं न कहीं हमसे ही चूक हुई है। बदलते जमाने की रफ्तार में हम भी बहते चले गए और आज स्वयं ही भारी-भरकम खर्च कर आधुनिक शादियों की चमक-दमक बढ़ा रहे हैं। ऐसे में यह विचार जरूरी है कि इसके लिए जिम्मेदार कौन—हम या हमारे बच्चे?

विवाह का स्वरूप आज अत्यंत तेज़ी से बदल रहा है। समाज के नए परिवेश में विवाह-संस्कारों की धारणा और उनका रूप दोनों ही बदल चुके हैं। हल्दी हो, मेहंदी हो या महिला-संगीत—हर रस्म में आधुनिकता का स्पर्श इतना गहरा हो गया है कि पारंपरिकता पीछे छूटती प्रतीत होती है। महंगे डिज़ाइनर परिधान, अत्यधिक सजा हुआ मंडप, आकर्षक थीम-डेकोरेशन और दिखावे की चकाचौंध ने विवाह को एक सामाजिक आयोजन से अधिक एक फैशन इवेंट बना दिया है। शायद इसी कारण वैवाहिक संबंधों का मूल स्वरूप भी धीरे-धीरे बदलता जा रहा है।

पहले के समय में विवाह केवल दो परिवारों का नहीं, बल्कि पूरे समाज का उत्सव हुआ करता था। महिला-संगीत की जगह ढोलक की थाप होती थी, जिस पर मंगल गीत गाती स्त्रियाँ माहौल में आत्मीयता, अपनापन और असीम आनंद भर देती थीं। पान के पत्तों से सजा हुआ साधारण सा मंडप ही विवाह की शान माना जाता था। एक-एक रस्म केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि गहरे अर्थों और जीवन-दर्शन से जुड़ी होती थी—सात फेरों में सात वचन, पलंग चार की रस्में, विदाई की भावुक तैयारियाँ—हर परंपरा एक संदेश देती थी कि विवाह केवल आज का समारोह नहीं, बल्कि जीवन भर निभाई जाने वाली जिम्मेदारी है।

समय के साथ-साथ रीति-रिवाजों में परिवर्तन होना स्वाभाविक था, परंतु यह परिवर्तन इतना तीव्र हो जाएगा, इसकी कल्पना शायद ही किसी ने की होगी। आज व्हाट्सएप पर भेजा गया एक ई-कार्ड निमंत्रण का पूरा विकल्प माना जाने लगा है। जबकि पहले 'नावन' नामक महिला घर-घर जाकर सभी संस्कारों का बुलावा देती थी—भोजन तक का निमंत्रण भी वही देती थी। लोग प्रेम, आत्मीयता और उत्साह के साथ विवाह के हर चरण में शामिल होते थे। आज यह सहभागिता सीमित होकर कुछ मेहमानों के आने, महँगा-सा उपहार देने और औपचारिकता निभाकर लौट जाने तक सिमट गई है।

हर माता-पिता चाहते हैं कि उनके बच्चे संस्कारवान बनें, परंतु यह प्रश्न विचारणीय है कि क्या हम स्वयं अनजाने में उन्हें उस दिशा में धकेल रहे हैं, जहाँ संस्कारों की जगह दिखावा और आधुनिकता अधिक महत्व रखने लगे हैं? यदि बचपन से बच्चों को मूल्यों की शिक्षा दी जाए, परंपराओं का महत्व समझाया जाए और हम केवल 'आधुनिक' दिखने की दौड़ में न पड़ें, तो निश्चित ही परिदृश्य अलग होता। लेकिन लगता है कि परवरिश में कहीं न कहीं हमसे ही चूक हुई है। बदलते जमाने की रफ्तार में हम भी बहते चले गए और आज स्वयं ही भारी-भरकम खर्च कर आधुनिक शादियों की चमक-दमक बढ़ा रहे हैं। ऐसे में यह विचार जरूरी है कि इसके लिए जिम्मेदार कौन—हम या हमारे बच्चे?

विवाह एक ऐसी पवित्र संस्था है जिसमें दो लोग समर्पण, विश्वास और पारस्परिक सम्मान के साथ नया संसार रचते हैं। यह केवल दो व्यक्तियों का मिलन नहीं, बल्कि दो परिवारों का भी जुड़ाव है। दो परिवारों की जिम्मेदारी दो युवाओं पर आती है और वे इसे किस संवेदनशीलता से निभाते हैं—यही विवाह की वास्तविक सफलता है। किंतु बदलते परिवेश में एकल परिवारों का बढ़ता चलन भी कहीं न कहीं आधुनिक विवाह-प्रवृत्ति से प्रभावित है। जब विवाह संस्कारों से अधिक दिखावे का प्रतीक बन जाए, तो संबंधों की गहराई धीरे-धीरे खोने लगती है।

आज बेहतर से बेहतर परिधान, भारी ज्वेलरी, महँगे फोटोशूट, डेस्टिनेशन वेडिंग, कॉकटेल पार्टियाँ और नए 'कस्टम'—जो पहले जिन समाजों में कभी नहीं थे—प्रतिष्ठा के मापदंड बन गए हैं। आधुनिकता के नाम पर विवाह अब मात्र एक भव्य जश्न बनता जा रहा है, जबकि पहले विवाह एक संकल्प था—जीवन के अगले पड़ाव तक साथ निभाने का गंभीर, भावनात्मक और जिम्मेदारीपूर्ण निर्णय।

दुःखद यह है कि आज 'अगला पड़ाव' की अवधारणा ही धुंधली होती जा रही है। 'जो है आज है, अभी है'—यह मनोवृत्ति तेजी से बढ़ रही है। शादी को जितना अधिक 'एंजॉय' कर लिया जाए, उसे उतना ही सफल माना जाने लगा है। रस्मों की आत्मा और विवाह का असली संदेश—समर्पण, त्याग, धैर्य और परस्पर सम्मान—सब पीछे छूटते जा रहे हैं।

इसलिए आवश्यक है कि आधुनिकता का स्वागत करते हुए भी हम अपनी मूल परंपराओं, मूल्यों और संस्कारों को न भूलें। विवाह की भव्यता से अधिक उसके भावों को महत्व दें। क्योंकि चमक-दमक क्षणिक है, पर संस्कार, समझ और संबंध—यही वह आधार हैं जिन पर वैवाहिक जीवन स्थिर रहता है।

डॉ. तेज प्रकाश पूर्णानंद व्यास
युवा साहित्यकार

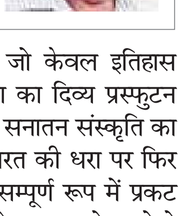

देवव्रत रेखे: सनातन वेद-तेज का अद्वितीय पुनर्जागरण

सिर्फ 19 वर्ष की उम्र में उन्होंने दण्डक्रम वेद पारायण के अंतर्गत— 25 लाख से अधिक वेद-पदों का लगातार 50 दिनों तक, अखंड संकल्प और अनंत साधना के साथ, बिना किसी ग्रंथ को खोले, बिना एक भी त्रुटि— उच्चारण करके यह सिद्ध कर दिया कि ऋषियों की वाणी आज भी बालक के हृदय में उतर सकती है। पूज्य डॉ. दिव्यचेतन ब्रह्मचारी गुरुजी की दिव्य उपस्थिति में— चांदी की हनुमान चालीसा, प्रभु श्रीराम का शिवतुल्य विग्रह, मां भगवती को चंदन-इत्र समर्पित कर आशीर्वाद प्राप्त किया गया— मानो देवत्व स्वयं उतर कर साधक को वरण कर रहा हो।

काशी ने वह क्षण देखा, जो केवल इतिहास नहीं—युगों की तपःवेदना का दिव्य प्रस्फुटन है। यह वह क्षण था जब सनातन संस्कृति का शाश्वत वेद-प्रकाश आधुनिक भारत की धरा पर फिर से पूर्ववत् तेजस्वी, प्रखर और सम्पूर्ण रूप में प्रकट हुआ। यह गौरव मिला— देवव्रत महेश रेखे (अहिल्यानगर, महाराष्ट्र) जैसे अलौकिक वेद-पुत्र के माध्यम से— जिनके तप, अनुशासन और धैर्य ने यह सिद्ध कर दिया कि वेद अभी जीवित हैं, जागृत हैं,और पूर्ण शक्ति से धड़क रहे हैं।

सिर्फ 19 वर्ष की उम्र में उन्होंने दण्डक्रम वेद पारायण के अंतर्गत— 25 लाख से अधिक वेद-पदों का लगातार 50 दिनों तक, अखंड संकल्प और अनंत साधना के साथ, बिना किसी ग्रंथ को खोले, बिना एक भी त्रुटि— उच्चारण करके यह सिद्ध कर दिया कि ऋषियों की वाणी आज भी बालक के हृदय में उतर सकती है।

पूज्य डॉ. दिव्यचेतन ब्रह्मचारी गुरुजी की दिव्य उपस्थिति में— चांदी की हनुमान चालीसा, प्रभु श्रीराम का शिवतुल्य विग्रह, मां भगवती को चंदन-इत्र समर्पित कर आशीर्वाद प्राप्त किया गया— मानो देवत्व स्वयं उतर कर साधक को वरण कर रहा हो।

श्रृंगेरी शारदा पीठ के जगद्गुरु श्री शंकराचार्य जी की ओर से प्राप्त स्वर्ण-कड़ा और 1 लाख रू. की आशीर्वाद-राशि इस सत्य की पुष्टि करती है कि— वेद मात्र ग्रंथ नहीं, ब्रह्मतेज का प्रवाह है; और देवव्रत जैसे तपस्वी— उसी प्रवाह के वाहक। यह सम्मान किसी व्यक्ति का नहीं— यह सनातन वेद-संस्कृति के पुनर्जागरण का वैश्विक विजय-नाद है।

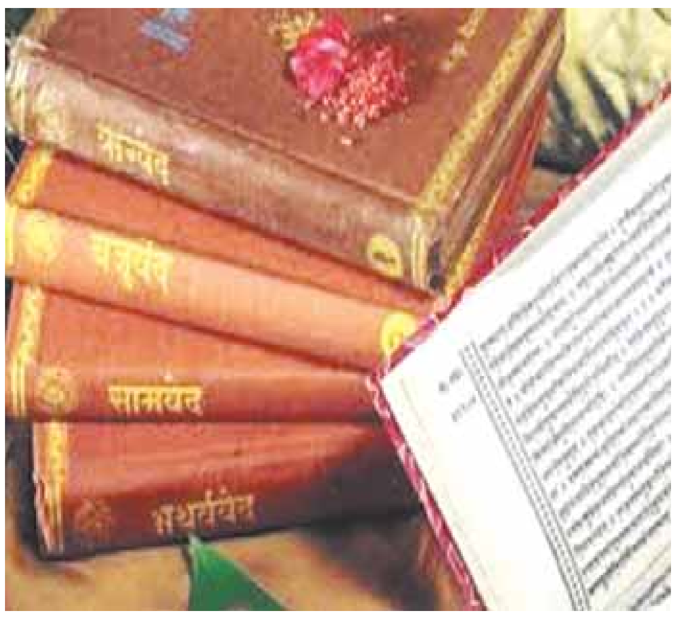

5 दिव्यतम वेद मंत्र – अर्थ सहित (Devavrat Rekhe के तप-साधना के अनुरूप)

(1) ऋग्वेद 1.164.39 – ज्ञान का दिव्य उद्गम

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन्।
यस्मिन् देवा अधि विश्वे निषेदुः।

अर्थ

वेद का प्रत्येक मंत्र उस परम अक्षर से प्रकट होता है- जहाँ समस्त देवत्व प्रतिष्ठित है। जिस साधक की वाणी वहाँ जुड़ जाती है, उसका उच्चारण स्वयं दिव्यता का प्रवाह बन जाता है।

(2) यजुर्वेद 40.1 – समग्र वेद-साधना का सार

ईशावास्यमिदं सर्वं
यत्किञ्च जगत्यां जगत्।

अर्थः जो कुछ इस जगत में है, वह परमेश्वर से आवृत है। वेदपाठ उसी ईश्वरमय सत्य को देखने की क्षमता देता है– जहाँ हर ध्वनि, हर श्वास, हर मंत्र ईश्वर का स्पर्श बन जाता है।

(3) अथर्ववेद 19.9.1 – साधना का आशीर्वाद मंत्र आयुष्यम् ते भवतु। बलम् ते भवतु।
वीर्यं ते भवतु। ब्रह्मवर्चसम् ते भवतु।

अर्थः तेरा आयुष्य दीर्घ हो,
तेरी ऊर्जा अपार हो,
तेरा पुरुषार्थ अडिग हो,
और तेरे भीतर ब्रह्मतेज निरंतर प्रखर बना रहे– यही वेद-सिद्ध आशीष है।

(4) ऋग्वेद 10.191.4 – वेद-साधकों की एकता

समानी वः आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।

अर्थः साधकों का हृदय, संकल्प और दिशा एक ही हो—जैसे ऋषि-मुनियों का था। वेद का तेज एकता से ही जगत को आलोकित करता है।

(5) यजुर्वेद 36.24 – वाणी की शुद्धि व स्मरण

क्रतो स्मर। कृतं स्मर। प्रजापते न त्वदेता अन्यो विश्वा जातानि।

अर्थः हे प्रभु! हमारी वाणी ऐसी बने कि वह हर उच्चारण पर वेद-स्मरण, तपस्मरण और सत्कर्म को जागृत करे।आपसे श्रेष्ठ प्रकाशदाता कोई नहीं। यह केवल एक उपलब्धि नहीं – सनातन वेद चेतना का पुनर्जन्म है। काशी ने आज जो सुना—वह आने वाली सदियों का आधार बनेगा।

सामान्य वर्ग कर्मचारियों के प्रतिनिधि पूर्व मंत्री गोपाल भार्गव से मिले

भोपाल। पूर्व मंत्री गोपाल भार्गव ने इस बात पर आश्चर्य जताया है कि बेटियों के बारे में अभद्र बातें करने वाले आईएएस अधिकारी संतोष वर्मा के खिलाफ अभी तक कोई कार्यवाही नहीं हुई है। उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति महिला उत्पीड़न का आरोपी है, जज के फर्जी आदेश बनाने के आरोप में जेल जा चुका है, उसकी पोस्टिंग मंत्रालय जैसे सर्वोच्च, संवेदनशील और अतिमहत्वपूर्ण कार्यालय में कैसे हुई?

सामान्य वर्ग के अधिकारियों कर्मचारियों के प्रतिनिधि मंडल ने आज तत्संबंध में भार्गव से उनके आवास पर भेंटकर आभार व्यक्त कर इस मामले को उच्च स्तर पर उठाने का अनुरोध किया। उच्च अधिकारियों में फैलते जातिवाद पर चर्चा हुई। प्रतिनिधि मंडल में मंत्रालय सेवा अधिकारी कर्मचारी संघ के अध्यक्ष सुधीर नायक, तृतीय वर्ग कर्मचारी संघ के विजय रघुवंशी, परिवहन कर्मचारी संघ के श्याम सुंदर शर्मा, कर्मचारी मंच के अशोक पाण्डे, मंत्रालय कर्मचारी संघ के आशीष सोनी, राजकुमार पटेल, हरिशरण द्विवेदी, अंकित अवधिया, मतीन खान, महेश विश्वकर्मा, श्याम बिहारी दुबे, सुनील शुक्ल इत्यादि उपस्थित थे।

वन मण्डल धार द्वारा लगातार कार्यवाही करते हुए लकड़ी तस्करों पर लगाम लगाई जा रही

धार। वन मण्डल धार द्वारा लगातार कार्यवाही करते हुए लकड़ी तस्करों पर लगाम लगाई जा रही है। गत रात्री वन मण्डल अधिकारी विजयनंथम टी. आर. द्वारा तत्काल संज्ञान लेकर फिर एक बड़ी कार्यवाही को अंजाम दिया गया। वन मंडल अधिकारी धार द्वारा बताया गया कि मनावर के पास निगरनी बाकानेर मार्ग पर अवैध रूप से लकड़ी कटाई और परवहन का कारोबार हो रहा है। मुखबिर की सूचना पर गस्ति एवं चेकिंग दल का गठन कर भेजा गया। रात के अंधेरे में एक

लाल कलर की आयशर यहाँ तेजी से बाकानेर से खलघाट मार्ग की ओर जा रहा थी। टीम द्वारा घेराबन्दी कर वाहन को रुकवाया गया एवं पास जाकर गाड़ी का रजिस्ट्रेशन नंबर देखा जिसका नंबर MP09GF7800 और गाड़ी की तलाशी ली गई। जिसमे नीम और बबूल की गीली लकड़ी भरी हुई पाई गई। वाहन चालक नौशाद पिता आजाद खान निवासी मुसावदा बताया गया। वाहन चालक से लकड़ी कटाई एवं परिवहन अनुज्ञा पत्र दस्तावेज मांगे गए, उसके पास कोई भी दस्तावेज नहीं होना बताया गया । तत्काल टीम द्वारा मौका की कार्यवाही की गई एवं वाहन को वन परिक्षेत्र कार्यालय सरदारपुर लाया गया एवं जांच कार्यवाही प्रचलित है। वाहन में अनुमानित 4.5 घन मीटर लकड़ी पाई गई, जिसका बाजार मूल्य लगभग 70 हजार रुपए आँका गया। दल का मार्गदर्शन उप वन मण्डल अधिकारी सरदारपुर संतोष रनशोरे द्वारा किया गया एवं गठित दल का नेतृत्व रेंजर सरदारपुर शैलेन्द्र सोलंकी द्वारा किया गया। कार्यवाही में उल्लेखनीय योगदान सुरेन्द्र वासकेल (वनपाल) रमेश निगम एवं नानुराम अलावे वनरक्षक एवं जुबेर खान का रहा।

साई एसटीसी धार के ताइक्वांडो खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय शालेय प्रतियोगिता में स्वर्ण एवं रजत पदक प्राप्त किये

धार। भारतीय खेल प्राधिकरण (साई), खेल प्रशिक्षण केंद्र धार के खिलाडियों गत दिनों संपन्न हुई 69 वीं राष्ट्रीय शालेय ताइक्वांडो खेल प्रतियोगिताओ में एक स्वर्ण एवं एक रजत पदक प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की है। जिसमें मोक्ष लोधी ने 69 वीं राष्ट्रीय शालेय ताइक्वांडो खेल प्रतियोगिता (अंडर 17), जो की ईटानगर (अरुणाचल प्रदेश) में 26 नवम्बर से 2 दिसम्बर को संपन्न हुई हैं में 41 किग्रा वजन समूह में स्वर्ण पदक प्राप्त किया है तथा एसटीसी धार के ही अधर्व नाखरे,

रौनक निषाद, शनि भारतीय और लक्की कुमार ने भी विभिन्न वजन समूहों में भागीदारी की है।

इसके साथ ही 69 वीं राष्ट्रीय शालेय ताइक्वांडो खेल प्रतियोगिता (अंडर-19) जो की 9 से 13 नवम्बर 2025 को जम्मू में सम्पन्न हुई में धीरेन्द्र जोशी ने 48 किग्रा वजन समूह में रजत पदक प्राप्त करने में सफलता पायी। इसी प्रतियोगिता में साई धार के अन्य खिलाडियों अनूप यादव, अक्षय विश्वकर्मा और गुलशन राठौर के द्वारा सहभागिता की गई थी। साई धार के इन ताइक्वांडो खिलाडियों की इस सफलता पर क्षेत्रीय निदेशक अभिषेक सिंह चौहान, केंद्र प्रभारी नरेश कुमार भावसार, ताइक्वांडो प्रशिक्षक ओमप्रकाश माखनिया और अन्य प्रशिक्षकों राजेश तम्बोलिया, विकास कुमार, रोनी मोदी और अन्य साई कर्मचारियों के द्वारा खिलाड़ियों को बधाई और उज्जवल भविष्य के लिए शुभकानाएं दी गई।

भौंरा में तेंदुए की दस्तक से दहशत, अब तक नहीं हुआ रेस्क्यू , लोग बोले - किसी हादसे का इंतजार क्यों ?

फॉरेस्ट कॉलोनी में बंदर का शिकार करते देखा गया कॉलर आईडी लगा तेंदुआ, ग्रामीणों ने एसडीएम को सौंपा आवेदन, वन विभाग ने मानी मौजूदगी

बैतूल/भौंरा। भौंरा ग्राम के रेंज ऑफिस से सटे रिहायशी क्षेत्र में पिछले कुछ दिनों से तेंदुए की लगातार मौजूदगी से जंहा लोग भयभीत हैं, वंही छोटे बच्चे स्कूल जाने से भी डर रहे हैं। बुधवार सुबह फॉरेस्ट कॉलोनी में मोहल्ले के शंकर राव कावडक़र ने स्वयं तेंदुए को बंदर का शिकार करते हुए देखा। ग्रामीणों ने बताया कि यह वही तेंदुआ है जिसके गले में कॉलर आईडी लगी हुई है, जिसकी पुष्टि वन विभाग द्वारा की गई है। सोमवार की रात करीब दो बजे मोहल्ले के निवासी अनिल जोशी अपनी चारपहिया गाड़ी खड़ी करके घर के अंदर जा रहे थे, तभी गाड़ी की हेडलाइट की रोशनी में गली के मोड़ पर तेंदुआ खड़ा नजर आया। लाइट पड़ते ही वह जंगल की ओर भाग गया। सुबह जब लोगों को इसकी जानकारी दी गई, तो वे मौके पर पहुंचे, जहाँ उसके स्पष्ट पगमार्क मिले। इसकी सूचना तत्काल भौंरा वन विभाग को दी गई। बुधवार फिर उसी क्षेत्र में तेंदुआ दिखाई देने पर मोहल्ले के लोगों ने अनुविभागीय अधिकारी (एसडीएम) शाहपुर को एक आवेदन देकर तत्काल

रेस्क्यू टीम बुलाने की मांग की।

वन विभाग ने माना: तेंदुआ इलाके में सक्रिय, मॉनिटरिंग जारी- भौंरा वन परिक्षेत्र अधिकारी विजेंद्र तिवारी ने बताया कि भौंरा ग्राम के आसपास तेंदुए की मौजूदगी लोकेट हुई है। हमारी टीम लगातार इलाके की मॉनिटरिंग कर रही है। सभी ग्रामवासियों से अपील है कि वे सतर्क रहें, छोटे बच्चों और पशुओं को घर के भीतर रखें, रात्रि के समय अकेले बाहर न निकलें। बहुत आवश्यकता होने पर ही तीन-चार लोगों के समूह में शोर करते हुए निकले और कुछ दिनों तक जंगल क्षेत्र से दूरी बनाए रखें। वन विभाग सूत्रों के अनुसार, तेंदुए की मूवमेंट को अब ट्रैकिंग जोन के रूप में चिह्नित किया गया है और उच्च अधिकारियों को रिपोर्ट भेजी जा चुकी है। विभाग ने बताया कि रेस्क्यू टीम के साथ तेंदुए को पकड़ने का प्रयास लगातार जारी है।

स्थानीयों की आवाज-अब तो बच्चे भी स्कूल जाने से डरते हैं

फॉरेस्ट कॉलोनी निवासी राजेश ने कहा कि अब बच्चे स्कूल तक जाने से डर रहे हैं। लोग समूह बनाकर ही बाहर निकल रहे हैं। वहीं मोहल्ले की रेखा बाई ने बताया कि रात में हल्की सी आहट पर पूरा परिवार जाग जाता है। हर आवाज पर लगता है जैसे पास ही तेंदुआ घूम रहा हो। लोग बड़े डरे सहमे से है तथा रात में ठीक से सो भी नहीं पा रहे हैं। क्षेत्र के निवासियों का कहना है कि यदि शीघ्र कार्रवाई नहीं हुई, तो किसी भी समय जनहानि हो सकती है। आवेदनकर्ता ओ.पी. कावडक़र ने कहा कि विभाग की रेस्क्यू टीम केवल भगाने का काम कर रही है, पकडऩे का नहीं। हम जानना चाहते हैं कि अगर कोई हादसा होता है तो उसका जिम्मेदार कौन होगा?

भौंरा में तीसरी बार दिखा तेंदुआ

यह पहला मौका नहीं है, जब भौंरा और उसके आसपास के इलाकों में तेंदुआ देखा गया हो। पिछले दो माह में यह तीसरी घटना है, जब वन विभाग ने क्षेत्र में तेंदुए की मौजूदगी की पुष्टि की है। पिछले माह भी गुरगुंदा-धपाड़ा मार्ग के पास तेंदुए के पदचिन्ह दर्ज किए गए थे। लगातार बढ़ती घटनाओं से स्पष्ट है कि जंगल से सटे रिहायशी इलाके, अब वन्यजीव मूवमेंट के नए कॉरिडोर बन रहे हैं।

जनसुरक्षा के सवाल पर उठे गंभीर सवाल

अब जब तेंदुए की मौजूदगी की पुष्टि खुद वन विभाग ने कर दी है और वह दो बार रिहायशी क्षेत्र में दिख चुका है, तो सवाल यह उठ रहा है। कि क्या प्रशासन किसी हादसे का इंतजार कर रहा है ? ग्रामीणों का कहना है कि यदि तेंदुए को तत्काल पकड़ा नहीं गया, तो यह घटना किसी भी दिन जनहानि में बदल सकती है। स्थानीय लोगों ने प्रशासन से मांग की है कि अब वक्त बयान का नहीं, कार्रवाई का है। तेंदुए को सुरक्षित रेस्क्यू कर जंगल में छोड़ा जाए।

इनका कहना है -

वन विभाग की टीम लगातार क्षेत्र में तेंदुए की गतिविधियों की मॉनिटरिंग कर रही है। एसटीआर (सतपुड़ा टाइगर रिजर्व) की रेस्क्यू टीम के साथ मिलकर पहले भी दो स्थानों पर पिंजरे लगाए जा चुके हैं, लेकिन तेंदुआ उनमें नहीं फंसा। अब विभाग नई तकनीक और आधुनिक उपकरणों की मदद से तेंदुए को सुरक्षित पकडऩे के प्रयास कर रहा है।

- नवीन गर्ग, डीएफओ, उत्तर वन मंडल बैतूल

तेंदुए की लोकेशन आज भी भौंरा क्षेत्र में उन्हीं स्थानों पर देखी जा रही है, जहां पर कल उसे देखा गया था। तेंदुए को पकडऩे के लिए पिंजरे लगाये जा चुके है तथा अन्य उपकरणों की मदद भी ली जा रही है।

- मूलचंद परते, डिप्टी रेंजर भौंरा

संभागायुक्त ने तहसील कार्यालय मुलताई का किया औचक निरीक्षण

बैतूल। संभागायुक्त कृष्ण गोपाल तिवारी ने गुरुवार को तहसील कार्यालय मुलताई का औचक निरीक्षण कर यहां की प्रशासनिक व्यवस्थाओं की विस्तार से समीक्षा की। उन्होंने निर्देश दिए कि सीमांकन, बटवारा और नामांतरण सहित सभी राजस्व प्रकरणों का समयबद्ध निराकरण सुनिश्चित किया जाए, जिससे आमजन को अनावश्यक परेशानियों का सामना न करना पड़े। उन्होंने एसडीएम और तहसीलदारों को राजस्व न्यायालय की कार्यवाही सुचारू रूप से संचालित करने के निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान संभागायुक्त श्री तिवारी ने कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी के साथ एसडीएम न्यायालय एवं तहसीलदार न्यायालय में लंबित राजस्व प्रकरणों की समीक्षा की। उन्होंने रीडर्स को स्पष्ट निर्देश दिए कि कोई भी प्रकरण ऑफलाइन दर्ज न किया जाए तथा सभी प्रकरणों को आरसीएमएस प्रणाली में दर्ज कर नियमानुसार सुनवाई की जाए। संभागायुक्त ने तहसील कार्यालय में ई-ऑफिस प्रणाली के क्रियान्वयन की भी बारीकी से समीक्षा की। उन्होंने कहा कि ई-ऑफिस व्यवस्था प्रशासनिक पारदर्शिता और जनहित में कार्य करने का सशक्त माध्यम है। उन्होंने इसके संचालन में कमियों पर नाराजग़ी व्यक्त करते हुए एसडीएम और तहसीलदार को नियमित रूप से इसकी मॉनिटरिंग करने के निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान आमजनों की समस्याओं को भी गंभीरता से सुना गया और उनके निराकरण के लिए तत्काल आवश्यक निर्देश दिए गए।

संभागायुक्त श्री तिवारी ने पटवारियों के प्रतिमाह वेतन आहरण, समयमान वेतनमान, वार्षिक गोपनीय प्रतिवेदन, कृषि संगणना मानदेय आदि की भी जानकारी ली। उन्होंने कहा कि पटवारियों के लिए सभी कार्यालयीन पत्राचार केवल शासकीय ई-मेल आईडी के माध्यम से ही किया जाए।

जनता के वोट और योजनाओं के पैसों की चोरी कर रही भाजपा : निलय डागा

विकास के नाम पर झूठ का महल खड़ा कर रही सरकार : कांग्रेस

बैतूल। जिला कांग्रेस कार्यालय में गुरुवार, को जिला कांग्रेस कमेटी द्वारा आयोजित पत्रकार वार्ता में जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष निलय डागा ने भाजपा शासन की नीतियों, अव्यवस्थाओं, स्वास्थ्य ढांचे की तबाही, किसानों की दुर्दशा, घोटालों पर चुप्पी और जनता के साथ किए गए वादों की पोल एक-एक कर खोलते हुए प्रदेश की असली तस्वीर सामने रखी। उन्होंने कहा कि सरकार विकास के नाम पर झूठ का महल खड़ा कर रही है, जबकि जमीन पर जनता बदहाली, भ्रष्टाचार और उपेक्षा झेल रही है। डागा ने सबसे पहले स्वास्थ्य व्यवस्था की स्थिति बताते हुए कहा कि जिला चिकित्सालय में कुल 133 डॉक्टरों के पद मंजूर हैं, जिनमें से 102 पद खाली पड़े हैं। उन्होंने कहा कि यह आंकड़ा बताता है कि सरकार के हेल्थ मिशन का दम केवल कागजों में है। उन्होंने डॉ धाकड़ का मामला उठाते हुए कहा कि उनके खिलाफ रिश्वत की पांच शिकायतें दर्ज होने के बाद भी जांच आगे नहीं बढ़ी और कार्रवाई शून्य है।

छह महीनों से सोनोग्राफी मशीन बंद- उन्होंने मुलताई अस्पताल का उदाहरण देते हुए कहा कि वहां पिछले छह महीनों से सोनोग्राफी मशीन बंद है, लेकिन शासन-प्रशासन केवल बयानबाजी में व्यस्त है। 21 अक्टूबर 2025 की भास्कर रिपोर्ट में यह तथ्य उजागर हो चुका है, फिर भी कार्रवाई का नाम नहीं। उन्होंने कफ सिरप से दो मासूम बच्चों की मौत का मुद्दा उठाते हुए कहा कि सरकार इतनी बड़ी

त्रासदी पर भी खामोश है। उन्होंने कहा कि यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि मौत की जिम्मेदारी किसकी है और कब तक लापरवाही से मासूमों की जान जाती रहेगी।

मेडिकल कॉलेज खोलने पर उठाए सवाल- मेडिकल कॉलेज को लेकर उन्होंने कहा कि प्रदेश में मेडिकल शिक्षा को लेकर बड़े-बड़े वादे किए गए, लेकिन कुछ नहीं हुआ। अब मेडिकल कॉलेज को पीपीपी मोड पर डालने का निर्णय जनता के हित में नहीं बल्कि निजी स्वार्थ के लिए लिया गया।

एसआईआर प्रक्रिया असल मुद्दों से भटकाने का हथकंडा- उन्होंने एसआईआर की पूरी प्रक्रिया को जनता को असल मुद्दों से भटकाने का हथकंडा बताया। शिक्षक बीएलओ बनाए गए, जिससे स्कूलों में पढ़ाई ठप हो गई और शिक्षा की गुणवत्ता शून्य हो गई।

खनिज विभाग ने अवैध उत्खनन के प्रकरण में 1 लाख 26 हजार की शास्ति की प्रस्तावित

बैतूल। कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी के निर्देशानुसार जिले में अवैध खनन, परिवहन एवं भंडारण के विरुद्ध विशेष अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत 28 नवंबर 2025 को तहसील आमला के ग्राम बामला (सोनारगोंदी) स्थित शासकीय भूमि खसरा क्रमांक 153, रकबा 2.388 हेक्टेयर क्षेत्र के अंश भाग पर पूर्व से निर्मित तालाबनुमा संरचना में खनिज मुरूम का अवैध उत्खनन कर परिवहन किये जाने की सूचना प्राप्त होने पर राजस्व एवं खनिज विभाग द्वारा संयुक्त रूप से उक्त क्षेत्र का स्थल निरीक्षण किया गया। जांच के दौरान मौका स्थल पर ठेकेदार तिरूपति कंस्ट्रक्शन कम्पनी के द्वारा लोक निर्माण विभाग बैतूल के अंतर्गत निर्माणाधीन मार्ग में उपयोग किए जाने के प्रयोजन से खनिज मुरूम के उत्खनन से बना एक बड़ा गड्ढा पाया गया, जिसकी माप टेप से की गई।

सड़क सुरक्षा के लिए बैतूल यातायात पुलिस की बड़ी कार्रवाई

बैतूल। यातायात पुलिस ने सडक़ दुर्घटनाओं में कमी लाने एवं मोटरयान अधिनियम के उल्लंघन करने वाले वाहन चालकों के विरुद्ध विशेष अभियान चलाया। यह अभियान 26 नवंबर से 10 दिसंबर तक जारी रहेगा। यातायात पुलिस ने अभियान के तहत अब तक करीब 618 वाहन चालकों पर कार्रवाही की है। जिनसे कुल 2,95,800 का शमन शुल्क वसूल किया गया है।

बाल विवाह मुक्त भारत के लिए 100 दिवसीय विशेष अभियान की शुरूआत शपथ के साथ हुई

केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री अन्नपूर्णा देवी , केंद्रीय राज्य मंत्री सावित्री ठाकुर द्वारा बाल विवाह न होने देने की शपथ के साथ अभियान की शुरूआत

धार। महिला एवं बाल विकास भारत सरकार द्वारा दिल्ली से बाल विवाह मुक्त भारत के लिए 100 दिवसीय विशेष अभियान की शुरूआत गुरुवार को केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री अन्नपूर्णा देवी एवं केंद्रीय राज्य मंत्री सावित्री ठाकुर द्वारा बाल विवाह न होने देने की शपथ के साथ की गई। इस अभियान का

मुख्य उद्देश्य है बाल विवाह से बालक एवं बालिकाओं संरक्षण एवं होने वाले नुक़सान को रोकने का प्रयास , यौन शोषण दुर्व्यवहार को रोकना , पॉक्सो अधिनियम यौन अपराध से बच्चों का निवारण अधिनियम 2012, बालिका शिक्षा, बालिका स्वास्थ्य पोषण को बढावा देना, मातृ मृत्यु दर में कमी लाना एवं लैंगिक असमानता को दूर करना इत्यादि है।

जिला कार्यक्रम अधिकारी सुभाष जैन के निर्देशानुसार बाल विवाह के विरुद्ध जन जागरूकता हेतु 100 दिवसीय विशेष अभियान की शुरुआत एवं हब फॉर एम्पावरमेंट ऑफ़ वुमन जागरूकता अभियान अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय महिला हिंसा उन्मूलन 16 दिवसीय विशेष अभियान अंतर्गत वन स्टॉप सेंटर धार द्वारा विक्रम नगर धार आगनवाड़ी केंद्र में लिंग आधारित हिंसा समाप्त करने विषय पर बात की गई । हिंसा की रोकथाम हेतु सहायता प्रदान करने वाले स्थान जैसे महिला हिंसा अधिनियम 2005, के अंतर्गत संचालित महिला ऊर्जा हेल्प डेस्क, महिला थाना, जो महिलाओं की सुरक्षा के लिए हिंसा होने पर रिपोर्ट दर्ज कर कार्यवाही करते है, देहज़ निषेध अधिनियम के तहत कार्यवाही करते है। बताया गया कि विधिक सहायता प्राधिकरण जो कि महिलाओं को कानूनी सहायता प्रदान कर कोर्ट केस लगवाते है, जो निशुल्क होते है । किसी भी तरह की हिंसा से पीड़ित महिलाओं एवं बालिकाओं हेतु वन स्टॉप सेंटर जो एक ही छत के नीचे पुलिस सहायता, आश्रय सहायता, आपात्कालीन सहायता, परामर्श सहायता, स्वास्थ्य सेवा, क़ानूनी सहायता प्रदान करता है की जानकारी प्रदान की गई। साथ ही महिला हेल्पलाइन नंबर 181, 112 पुलिस हेल्पलाइन नंबर साइबर हेल्प लाइन नंबर 1930 आदि की जानकारी प्रदान की गई ।

कमिश्नर इंदौर डॉ. सुदाम खाड़े ने धार विधानसभा क्षेत्र में एसआईआर अभियान के तहत मतदान केंद्रों का निरीक्षण कर बीएलओ से कार्य की प्रगति जानी

कोई भी पात्र मतदाता छूटे नहीं और अपात्र मतदाता जुड़े नहीं : संभाग आयुक्त

धार। इंदौर संभाग आयुक्त डॉ. सुदाम खाड़े ने आज धार विधानसभा क्षेत्र में एसआईआर अभियान के तहत पीथमपुर के मतदान केंद्र क्रमांक 281,263 का निरीक्षण किया एवं बीएलओ से चर्चा की और कार्य की प्रगति जानी। इसके अलावा धरमपुरी विधानसभा क्षेत्र में भी एसआईआर अभियान के तहत बगड़ी एवं मांडव के मतदान केंद्रों का निरीक्षण किया व बीएलओ से चर्चा की और कार्य की प्रगति जानी एवं संबंधित अधिकारियों व बीएलओ को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। इस दौरान कलेक्टर प्रियंक मिश्रा साथ रहे।

संभाग आयुक्त डॉ. खाड़े ने मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के संबंध में दिए गए नवीन निर्देशों का अनिवार्य रूप से पालन करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने बीएलओ को निर्देशित किया है कि वे आयोग द्वारा जारी निर्देशों का अच्छी तरह से अध्ययन कर लें, विशेष गहन पुनरीक्षण के दौरान बीएलओ तीन बार मतदाताओं के घर जाएंगे, यह सुनिश्चित करें। संभाग आयुक्त डॉ. खाड़े निर्देशित किया कि कोई भी पात्र मतदाता छूटे नहीं और अपात्र मतदाता जुड़े नहीं, यह सुनिश्चित किया जाए। इसके साथ ही जो व्यक्ति 1 जनवरी 2026 को 18 वर्ष की आयु पूरी कर रहा है, वह भी मतदात सूची में

अपना नाम जुड़वाने के लिए आवेदन कर सकता है। उन्होंने कहा कि मतदाता सूची में नाम जुड़वाने के लिए फॉर्म 6, हटवाने के लिए फॉर्म 7 और सुधार या संशोधन के लिए मतदाता को फॉर्म 8 भरना होगा।

संभाग आयुक्त डॉ. खाड़े ने कहा कि भारत निर्वाचन आयोग ने मतदाता सूची विशेष गहन पुनरीक्षण (SIR) 2026 का संशोधित कार्यक्रम किया जारी कर गणना पत्रक 11 दिसम्बर तक भरे जाएंगे, 14 फरवरी 2026 को होगा अंतिम मतदाता सूची का प्रकाशन होगा। इसके अनुसार अब 11 दिसम्बर 2025 तक एन्युमरेशन फार्म भरने का काम बीएलओ द्वारा किया जाएगा। 16 दिसंबर को मतदाता सूची के प्रारूप का प्रकाशन होगा। 16 दिसंबर से 15 जनवरी 2026 तक दावा आपत्तियों के आवेदन लिए जाएंगे। 16 दिसंबर से 7 फरवरी 2026 तक दस्तावेजों का सत्यापन किया जाएगा। इसके बाद 14 फरवरी 2026 को फाइनल मतदाता सूची का प्रकाशन होगा।

निरीक्षण के दौरान अपर कलेक्टर संजीव केशव पांडेय, संयुक्त कलेक्टर जगदीश मेहरा, अनुविभागीय अधिकारी राजस्व राहुल गुप्ता, तहसीलदार, संबंधित अधिकारी, एवं बीएलओ मौजूद रहे।

भूमि आवंटन के समस्त प्रकरण ऑनलाइन राजस्व विभाग को भेजे जाएं सभी कलेक्टर

कृषक विश्राम शेड एवं फीश पार्लर का निर्माण कार्य शीघ्र ही पूरा किया जाए : कमिश्नर श्री कृष्ण गोपाल तिवारी

मासिक निरीक्षण रोस्टर के अनुसार फील्ड का निरीक्षण करना सुनिश्चित करें कमिश्नर ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में सभी कलेक्टर्स को दिए निर्देश

नर्मदापुरम (निप्र)। नर्मदापुरम संभाग कमिश्नर श्री कृष्ण गोपाल तिवारी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से हरदा बैतूल एवं नर्मदापुरम जिले के कलेक्टर को निर्देश दिए कि वह विपणन संघ के उर्वरक भंडार केन्दो में कृषक विश्राम शेड निर्माण का कार्य और इसके लिए राशि स्वीकृति तथा निर्माण कार्य समय पर पूरा कराना सुनिश्चित करें, साथ ही कमिश्नर ने निर्देश दिए कि मत्स्य विभाग के अंतर्गत गत वित्तीय वर्ष में स्वीकृत सभी फीश पार्लर का निर्माण कार्य जल्द से जल्द पूरा किया जाए। कमिश्नर ने निर्देश दिए की कृषक विश्राम शेड एवं फिश पार्लर बनाने के लिए आवश्यक भूमि का आवंटन भी सुनिश्चित किया जाए।

बताया गया कि कृषक विश्राम शेड खिरकियां में बना दी गई है, टिमरनी में इसका निर्माण कार्य शुरू हो चुका है। लेकिन हरदा में शेड निर्माण के लिए जमीन नहीं मिल रही है जैसे ही जमीन मिल जाएगी शेड निर्माण का कार्य शुरू कर दिया जाएगा। हरदा में 12 फिश पार्लर की स्वीकृति प्राप्त हुई है सभी में टेंडर की प्रक्रिया संपन्न कराई गई है। जल्द ही फीश पार्लर का निर्माण कार्य शुरू कर दिया जाएगा। नर्मदापुरम में इटारसी में फिश पार्लर का कार्य पूर्ण हो चुका है। पिपरिया में 80% कार्य हो चुका है वही नर्मदापुरम में जमीन आवंटन शेष है। कमिश्नर ने सभी कलेक्टर्स को निर्देश दिए कि वह यह सुनिश्चित करें कि आरसीएमएस पोर्टल में कोई भी प्रकरण ऑफलाइन दर्ज न होने पाए साथ ही रीडर एवं पीठासीन अधिकारी की आईडी पर कोई भी राजस्व प्रकरण पेंडिंग ना रहे। कमिश्नर ने नर्मदापुरम में 736 प्रकरण रीडर आईडी पर एवं 796 प्रकरण पीठासीन अधिकारी की आईडी पर लंबित रहने पर एवं बैतूल में 294 प्रकरण रीडर आईडी पर तथा 577 प्रकरण पीठासीन आईडी पर तथा हरदा में 71 प्रकरण रीडर आईडी पर एवं 95 प्रकरण पीठासीन अधिकारी की आईडी पर लंबित रहने पर सख्त नाराजगी जाहिर की और निर्देश दिए कि किसी भी स्थिति में रीडर एवं पीठासीन अधिकारी की आईडी पर कोई भी राजस्व प्रकरण लंबित न रहे।

कमिश्नर ने कहा कि अपनी आईडी पर आए राजस्व प्रकरणों के निराकरण में लापरवाही बरतने वाले रीडर एवं पीठासीन अधिकारियों पर नियमानुसार सख्त करवाई सुनिश्चित की जाएगी। कमिश्नर श्री तिवारी ने सभी कलेक्टर्स को निर्देश दिए कि वह मासिक निरीक्षण रोस्टर के अनुसार फील्ड का भ्रमण एवं निरीक्षण करना सुनिश्चित करें। कमिश्नर ने सभी कलेक्टर्स को निर्देश दिए कि वह शीतकाल को दृष्टिगत रखते हुए नागरिकों एवं पशुओं को ठंड से बचाने हेतु सार्वजनिक स्थलों जैसे रेन बसेरा, रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड, फुटपाथ, सार्वजनिक आश्रय स्थल, चौराहा, गौशालाओं इत्यादि पर अलाव, कंबल, गर्म पानी आदि की पर्याप्त व्यवस्थाएं सुनिश्चित करें।

कमिश्नर ने सभी कलेक्टर्स को निर्देश दिए कि वह रात्रि में रैन बसेरे एवं आश्रय स्थलों, बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन आदि का भ्रमण अनिवार्य रूप से करें। कमिश्नर श्री तिवारी ने निर्देश दिए कि पटवारियों के लंबित एरियर्स सं गणनाओं के मानदेय, स्वामित्व योजना के मानदेय, समय मान वेतनमान आदि देना सुनिश्चित करें। साथ ही पटवारियों के एनपीएस कटोत्रा यदि मिसिंग है तो उसकी जानकारी से पटवारियों को अवगत कराया जाए और मिसिंग कटोत्रा एनपीएस में जुड़वाया जाए। कमिश्नर ने निर्देश दिए की सभी पटवारियों को वेतन एवं एग्रीटेक भत्ता का भुगतान समय पर किया जाए। पटवारियों के गोपनीय प्रतिवेदन भी समय सीमा में अंकित किये जाए। जल जीवन मिशन अंतर्गत हर घर नल कनेक्शन के कार्यों की समीक्षा करते हुए कमिश्नर ने निर्देश दिए की जल जीवन मिशन का पोर्टल खुल चुका है अतः सभी किए गए नल कनेक्शन के कार्य पोर्टल पर अपलोड किये जाए। श्री तिवारी ने निर्देश दिए कि जो नल जल योजनाएं पूर्ण हो चुकी है उसमें यह भी सुनिश्चित किया जाए की योजना के अंतर्गत नल में जल का प्रवाह हो रहा है कि नहीं। उन्होंने कहा कि सभी पूर्ण हो चुकी नल जल योजनाएं ग्राम पंचायतों को हैंडोवर की जाए।

कमिश्नर ने जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारियों को निर्देश दिए कि 10 दिसंबर तक सभी जनपद पंचायत कार्यालय एवं तहसील कार्यालय में सभी कार्य ई ऑफिस सिस्टम से करना सुनिश्चित किया जाए एवं कर्मचारियों की अटेंडेंस सार्थक ऐप से ही लगाई जाए। उन्होंने कहा कि सार्थक एप का यदि कोई दुरुपयोग करता हुआ पाया गया तो उसके विरुद्ध सख्त कार्रवाई भी सुनिश्चित की जाए।

कमिश्नर ने सोयाबीन हेतु भावांतर योजना के क्रियान्वयन तथा धान उपार्जन की प्रगति की अद्यतन स्थिति की जानकारी ली। उन्होंने निर्वाचन नामावली के विशेष गहन पुनरीक्षण 2026 के अंतर्गत अब तक हुए एस आई आर कार्य की जानकारी ली। बताया गया कि एस आई आर का कार्य प्रगति पर है। कमिश्नर ने वन ग्रामों में वन अधिकार पत्र एवं पट्टों की मान्यता लागू करने के संबंध में निर्देश दिए की जनजाति कार्य विभाग मैं वन अधिकार के जो प्रकरण रखे गए हैं उन्हें संबंधित वन मंडलाधिकारी तक प्रेषित किया जाए, साथ ही जिन स्थानों पर वन अधिकार के दावे एवं पट्टे दिए गए हैं, वहां पर रहने वाले लोगों को शासन की सभी योजनाओं का लाभ दिलाना जाए। साथ ही नए दावा धारी लोगों को भी शासकीय योजना का लाभ प्राथमिकता से दिलाया जाए। कमिश्नर ने अर्ध न्यायिक प्राधिकारियों द्वारा विधि अनुसार कार्रवाई करने के लिए उनका प्रशिक्षण कराने के निर्देश दिए साथ ही सभी कलेक्टर्स को निर्देश दिए की जिला बदर के प्रकरणो का बारीकी से अध्ययन करने के बाद ही आदेश जारी किए जाएं। उन्होंने ई फाइल 3.0 के संबंध में निर्देश दिए की भूमि आवंटन सहित सभी प्रकरण ऑनलाइन किए जाएं साथ ही भूमि आवंटन के समस्त प्रकरण ऑनलाइन आरसीएमएस पोर्टल के माध्यम से राजस्व विभाग को भेजे जाएं। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के दौरान नर्मदापुरम कलेक्टर सुश्री सोनिया मीना, बैतूल कलेक्टर श्री नरेंद्र सूर्यवंशी, हरदा कलेक्टर श्री सिद्धार्थ जैन ऑनलाइन एवं संयुक्त आयुक्त विकास श्री जी सी दोहर सहित संबंधित अधिकारी गण ऑफलाइन उपस्थित रहे।

रायसेन में कृषि विभाग के जिला कार्यालय में शुरू हो रहा है जैविक कृषि उत्पाद विक्रय केन्द्र

रायसेन (निप्र)। जिले में जैविक खेती को बढ़ावा देने हेतु किसानों को प्रोत्साहित करने के साथ ही जैविक खेती के उत्पादों के विक्रय के लिए सभी निकायों में बाजार उपलब्ध कराने के लिए कलेक्टर श्री अरूण कुमार विश्वकर्मा द्वारा कृषि विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया गया है। इसी क्रम में उप संचालक कृषि श्री केपी भगत के मार्गदर्शन में जिला मुख्यालय पर सागर रोड स्थित कार्यालय उप संचालक कृषि परिसर में जैविक उत्पाद विक्रय केन्द्र स्थापित किया जा रहा है। इस जैविक उत्पाद विक्रय केन्द्र में प्रत्येक हाट बाजार रविवार के दिन जैविक कृषि उत्पाद विक्रय के लिए उपलब्ध रहेंगे।

इस विक्रय केन्द्र में जैविक कृषि उत्पाद जैसे अनाज, दालें, तेल, मसाले आदि का प्रतिदिन विक्रय किया जाएगा। इसके साथ ही इस केन्द्र पर जिले में जैविक खेती करने वाले किसानों की जानकारी भी सांझा की जाएगी, जिससे कि नागरिक अपनी आवश्यकतानुसार जैविक उत्पाद सीधे किसानों से क्रय कर सकेंगे। यह विक्रय केन्द्र किसानों में जैविक खेती के बारे में जागरूकता लाने के साथ ही उपज का उचित मूल्य दिलाने में आधारशिला साबित होगा। जिले में जैविक खेती करने वाले किसान भाई अपने उत्पाद विक्रय करने एवं जैविक उत्पाद खरीदने के इच्छुक व्यक्ति रायसेन में सागर रोड स्थित कार्यालय उपसंचालक कृषि विभाग में शुरू किए जा रहे जैविक कृषि उत्पाद विक्रय केन्द्र पर रविवार के दिन संपर्क कर सकते है।

जैविक उत्पाद विक्रय केन्द्र पर मिलेंगे यह उत्पाद इस जैविक उत्पाद विक्रय केन्द्र पर विक्रय हेतु अनाज, दाल, तेल, सब्जियां, फल, घी आदि उत्पाद नागरिकों के लिये उपलब्ध रहेगें। अनाज में गेंहू, चावल (बासमती), चावल (सादा), ज्वार, बाजरा, कोदो, कुटकी, सांवा, मक्का तथा दाल में अरहर, मूंग, उडद, मसूर, बटरी एवं तेल में सोयाबीन, सरसों, मूंगफली और सब्जी में आलू, मिर्च, लौकी, बरबटी, भिण्डी, गोभी, टमाटर, सेम, गंवार फल्ली, गिलकी, मूली, कदद्दू, टिण्डे, मुनगा (सहजन) आदि उपलब्ध रहेगी। इसी प्रकार कंद में शकरकंद, ककडी, अरबी, रतालू (गराडू), लहसुन, प्याज और फल में पपीता, अमरूद, आंवला, कटहल तथा भाजी में मैथी, पालक, नोनिया (कुल्फा), बथुआ, चौलाई विक्रय हेतु उपलब्ध रहेगी।

संक्षिप्त समाचार

विश्व एड्स दिवस पर जिले में आयोजित किए गए विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम

रायसेन (निप्र)। विश्व एड्स दिवस पर जिले के विभिन्न रेड रिबन क्लब, आईसीटीसी के माध्यम से जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। मुख्य चिकित्सा स्वास्थ्य अधिकारी डॉ एचएन मांद्रे द्वारा एचआईवी एड्स जागरूकता हेतु आयोजित पोस्टर कॉमपटीशन में विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरण किया गया। कार्यक्रम का आयोजन शासकीय गर्ल्स महाविद्यालय की प्राचार्य एवं रेड रिबन क्लब प्रभारी के माध्यम से कराया गया। कॉलेज की छात्राओं द्वारा एड्स एचआईवी की जागरूकता हेतु रोल प्ले की प्रस्तुति भी दी गई। जिले में जागरूकता हेतु छात्राओं द्वारा रैली का आयोजन भी किया गया। यह विभिन्न गतिविधियां जिले में सात दिवस तक निरंतर आयोजित की जाएगीं। इसी प्रकार स्वामी विवेकानंद कॉलेज में भी सहयोगी एनजीओ सर्वोदय विंध्य विकास समिति के माध्यम से जागरूकता कार्यशाला आयोजित की गई। जिला नोडल एड्स अधिकारी डॉ यशपाल बालियान द्वारा बताया गया कि आगामी सप्ताह में विभिन्न भीड़ वाली जगह पर भी नुक्कड़ नाटक का भी आयोजन किया जाएगा जिससे एचआईवी एड्स जैसी जानलेवा बीमारी के संबंध में लोगों को बचाव के प्रति जागरूक किया जा सके। जिला चिकित्सालय परिसर में उक्त बीमारी से मृत व्यक्तियों को श्रद्धांजलि देने हेतु श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया एवं कैंडल मार्च निकाला गया।

गीता जयंती पर रायसेन में आयोजित कार्यक्रम में श्रीमद् भगवद्गीता के 15वें अध्याय का किया गया सामूहिक सस्वर पाठ

रायसेन (निप्र)। गीता जयंती के पुण्य अवसर पर रायसेन में आयोजित 'गीता महोत्सव' कार्यक्रम का पूज्यनीय संत त्यागीजी महाराज तथा नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती सविता सेन द्वारा कन्या पूजन और दीप प्रज्वलन कर शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर पूज्य साधु-संत, अपर कलेक्टर श्री मनोज उपाध्याय, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री कमलेश कुमार, विभिन्न वार्डो के पार्षदगण भी उपस्थित रहे। गीता महोत्सव कार्यक्रम में कार्यक्रम में गीताप्रेमियों, जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों तथा छात्र-छात्राओं द्वारा श्रीमद्भगवद्गीता के 15वें अध्याय का एक साथ सामूहिक सस्वर पाठ किया गया। इसके उपरांत नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती सविता सेन तथा श्री राकेश शर्मा द्वारा छात्र-छात्राओं को संबोधित कर श्रीमद्भगवद्गीता का जीवन में महत्व बताया गया। इस अवसर पर अनेक साधु-संत, अधिकारी और छात्र-छात्राएं भी उपस्थित रहे।

जल संचय अभियान के तहत पंच पांडव नदी पर किया बोरी बंधान

बैतूल (निप्र)। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के निर्देशानुसार मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद द्वारा प्रदेश भर में चलाए जा रहे जल संचय अभियान के तहत सोमवार को प्रभात पट्टन विकासखंड की ग्राम पंचायत वायगांव में पंच पांडव नदी पर बोरी बंधान का कार्यक्रम रखा गया। जिला समन्वयक श्रीमती प्रिया चौधरी के मार्गदर्शन में 65 बोरियों से बोरी बंधान बनाया गया एवं बहते हुए जल को रोक गया। वर्षा जल संचयन एवं जल के सदुपयोग के लिए विकासखंड समन्वयक राधा बरोदे द्वारा सीएमसीएलडीपी छात्रों को कक्षा में प्रेरित किया गया। जिसमें सभी छात्रों को एक-एक बोरी बंधान का लक्ष्य दिया गया था। बोरी बंधान के पश्चात जिला समन्वयक द्वारा उपस्थित प्रतिभागियों से पानी बचाने की अपील की व जल संचय करने के लिए बोरी बंधान जैसे प्रयास करने को कहा गया। उन्होंने बताया कि रुका हुआ जल न सिर्फ मवेशियों व सिंचाई के काम आएगा, बल्कि इससे ग्राम का जलस्तर भी बढेगा। इस दौरान छात्रों ने प्रस्फुटन वाटिका का अवलोकन भी किया। उक्त कार्य प्रस्फुटन समिति वायगांव अध्यक्ष पंढरीनाथ पाटणकर , सचिव भोजराज पाटणकर, रोजगार सहायक अजय निराटकर परामर्शदाता नितेश सोलंकी, वीरेंद्र सूर्यवंशी, माधोराव कापसे रोशन लोखंडे एवं श्रीमती प्रियंका ठाकरे के अलावा, सीएमसीएलदीपी छात्रों एवं ग्रामीणों ने उत्साह के साथ सहभागिता की।

कलेक्टर ने की जिले में चल रहे विकास एवं निर्माण कार्यों की समीक्षा

सीहोर (निप्र)। कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में निर्माण विभागों की बैठक आयोजित कर जिले में चल रहे निर्माण एवं विकास कार्यों की विस्तृत समीक्षा की। बैठक में कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने सभी संबंधित अधिकारियों को जिले में चल रहे सभी निर्माण एवं विकास कार्यों में तेजी लाते हुए समय सीमा में कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सभी अधिकारी अपने मैदानी अमले को लक्ष्य देकर उसके अनुरूप कार्य को पूर्ण कराए।

इसके साथ ही सभी निर्माण कार्यों में गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखा जाए। कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि विकास एवं निर्माण कार्यों के निरीक्षण के दौरान यदि गुणवत्ता में कोई कमी पाई जाती है तो संबंधित के विरूद्ध सख्त कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि सभी अधिकारी विकास एवं निर्माण कार्यो की मॉनिटरिंग करें और कार्यो को जल्द से जल्द से पूर्ण कराएं। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि किसी भी कार्य के लिए उतनी ही समय सीमा बताई जाए जितने समय मे वह कार्य पूर्ण हो सके। उन्होंने संबंधित ठेकेदारों को निर्देश दिए कि समय का एक-एक दिन बहुत कीमती है, समय खराब न करें और विकास एवं निर्माण कार्यों को जल्द से जल्द पूर्ण करने का प्रयास करें। बैठक में कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने आवागमन को सुगम बनाए रखने के लिए लोक निर्माण विभाग को सभी सड़कों एवं पुलों के निर्माण कार्यों को पूर्ण कराने के निर्देश दिए। उन्होंने निर्देश दिए कि अतिक्रमण के कारण यदि कही सड़क निर्माण कार्य में दिक्कत आती है, तो वहां त्वरित कार्यवाही करते हुए अतिक्रमण को हटाया जाए और निर्माण कार्य पूर्ण किया जाए, ताकि आमजन को किसी तरह की परेशानी न हो। बैठक में लोक निमार्ण विभाग, जल संसाधन, मध्यप्रदेश सड़क विकास निगम, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, जल निगम, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी, मध्यप्रदेश भवन विकास निगम, शिक्षा विभाग, सेतु निर्माण, ग्रामीण यांत्रिकी सेवा, नर्मदा घाटी विकास प्राधिकरण सहित अन्य विभागों के अधिकारी उपस्थित थे।

तंबाकू मुक्त युवा अभियान 3.0 के अंतर्गत नगर में चालानी कार्यवाही एवं जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

नर्मदापुरम (निप्र)। कलेक्टर सुश्री सोनिया मीना के निर्देशन तथा मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. नरसिंह गेहलोत के मार्गदर्शन में 'तंबाकू मुक्त युवा अभियान 3.0' के अंतर्गत आज नर्मदापुरम नगर में कोटपा एक्ट के तहत व्यापक चालानी कार्यवाही एवं जागरूकता गतिविधियां संचालित की गईं।

जिला ईनफोर्स टीम–नोडल अधिकारी डॉ. रजनी कुशवाहा, दंत चिकित्सक डॉ. मिलन सोनी, जिला मीडिया प्रभारी सुनील साहू, ड्रग इंस्पेक्टर संजीव जादौन, खेल एवं युवक कल्याण अधिकारी प्रीतम पूर्वीया तथा कोतवाली थाना से हेड कांस्टेबल गुलशेर खान, धर्मेंद्र परिहार और मनीष यादव, डीपीएम कविता भोई ने नगर के सतरस्ता चौराहा, बस स्टैंड परिसर, एनएमव्ही कॉलेज चौराहा, सर्किट हाउस घाट तथा गर्ल्स कॉलेज/एसएनजी स्कूल क्षेत्र में निरीक्षण कर तंबाकू सेवन करने वालों एवं इसके विक्रेताओं को समझाइश दी। कार्यवाही के दौरान पाया गया कि विभिन्न आयु वर्ग के लोग तंबाकू का सेवन करते हैं, जो स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक है।

टीम द्वारा उन्हें तंबाकू सेवन से होने वाले दुष्परिणामों की जानकारी दी गई तथा अस्पताल में उपलब्ध परामर्श एवं उपचार सेवाओं का लाभ लेने के लिए प्रेरित किया गया। इस दौरान उपस्थित लोगों को तंबाकू निषेध की शपथ भी दिलाई गई। टीम द्वारा सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान करते पाए गए व्यक्तियों से कोटपा एक्ट के तहत 50 रुपए का चालान वसूला गया तथा भविष्य में धूम्रपान/गुटखा का उपयोग न करने की सख्त हिदायत दी गई।

वहीं दुकानदारों को नाबालिगों को तंबाकू उत्पाद न बेचने और दुकान पर आवश्यक निषेध वाले बोर्ड लगाने के लिए विशेष रूप से निर्देशित किया गया। टीम ने कोटपा एक्ट की धारा 4, 5, 6 एवं 7 के प्रमुख प्रावधानों की जानकारी भी दी।नगर थाना प्रभारी सुश्री कंचन सिंह द्वारा पुलिस स्टाफ को कोटपा एक्ट की विस्तृत जानकारी दी गई तथा तंबाकू से उत्पन्न रोगों की रोकथाम के लिए जिला टीम के साथ समन्वय बैठक आयोजित की।दंत चिकित्सक डॉ. मिलन सोनी और डॉ. रजनी कुशवाहा ने तंबाकू सेवन से मुख कैंसर, फेफड़ों के कैंसर, टीबी और अन्य गंभीर बीमारियों के जोखिम के बारे में विस्तृत काउंसलिंग भी प्रदान की। जिला प्रशासन द्वारा आगामी दिनों में भी इसी प्रकार की कठोर कार्रवाई एवं जागरूकता गतिविधियां जारी रखने की बात कही गई है, ताकि समाज को तंबाकू जनित रोगों से सुरक्षित रखा जा सके।

लाड़ली लक्ष्मी योजना से कुमारी कनक के बेहतर भविष्य के निर्माण में मिल रही मदद

सीहोर (निप्र)। प्रदेश सरकार द्वारा प्रदेश के नागरिकों के सुखद भविष्य के लिए अनेक जनकल्याणकारी योजनाएं संचालित की जा रही है। इन योजनाओं से प्रदेश के लाखों लोग लाभान्वित हो रहे हैं। इन्हीं जनकल्याणकारी योजनाओं में से एक 'लाडली लक्ष्मी योजना' भी है, जो बालिका के जन्म के प्रति जनता में सकारात्मक सोच, लिंगानुपात में सुधार, बालिकाओं की शैक्षणिक स्तर के साथ ही स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार तथा उनके अच्छे भविष्य की आधारशिला रखने के उद्देश्य से संचालित है। शासन की इस महत्वपूर्ण योजना से सीहोर निवासी श्रीमती राजकुमारी राठौर की बेटी लाड़ली कनक राठौर भी लाभान्वित हुई है। श्रीमती राजकुमारी बताती हैं कि अपनी

बेटी कनक का पंजीयन लाड़ली लक्ष्मी योजना में कराने से अपनी बेटी की शिक्षा एवं विवाह की मेरी चिंता खत्म हो गई है। लाड़ली लक्ष्मी योजना के तहत कनक की शिक्षा के साथ ही उसकी शादी के लिए भी सरकार द्वारा धनराशि प्रदान की जाएगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार की यह लाड़ली लक्ष्मी योजना मेरे जैसी अनेक माताओ के लिए अपनी बच्ची का बेहतर भविष्य बनाने में मददगार है। श्रीमती राजकुमारी राठौर ने इस योजना के लिए मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव एवं प्रदेश सरकार को धन्यवाद दिया है।

नगर पालिका अमले द्वारा की गई अतिक्रमण हटाने की प्रभावी कार्रवाई

नर्मदापुरम (निप्र)। नगर पालिका अमले द्वारा इटारसी एवं नर्मदापुरम नगरपालिका क्षेत्रों में व्यापक अतिक्रमण विरोधी कार्रवाई की गई। यह कार्रवाई मुख्य रूप से शहर के व्यस्ततम मार्गों, प्रमुख चौक-चौराहों एवं यातायात अवरुद्ध करने वाले स्थानों पर की गई। अतिक्रमण अमले ने मुख्य मार्गों और भीड़भाड़ वाले चौराहों पर लगे फल-सब्जी विक्रेताओं के ठेले, अस्थायी दुकानों एवं अन्य अवैध अतिक्रमणों को हटाया। नगर पालिका के राजस्व अमले ने चेतावनी देते हुए स्पष्ट किया कि सड़क एवं सार्वजनिक

मार्गों पर यातायात अवरुद्ध करते पाए जाने पर संबंधितों पर जुर्माना लगाया जाएगा तथा सामग्री जब्त की जाएगी। नर्मदापुरम में मंगलवार को नगर के कई प्रमुख क्षेत्रों–सतरस्ता, इंदिरा चौक, नेहरू पार्क, एस.एन.जी. स्कूल क्षेत्र सहित अनेक मुख्य मार्गों–में अवैध अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई की गई।

इन स्थानों पर व्यवस्थित रूप से यातायात संचालन सुनिश्चित करने हेतु सभी ठेले हटवाए गए और उनको उचित स्थानों पर स्थानांतरित किया गया।

कभी आर्थिक संकट से जूझ रहीं गीता बाई ने अपनी मेहनत से लिखी सफलता की कहानी

रायसेन (निप्र)। मन में कुछ करने का इरादा हो और वह इरादा पक्का हो तो मुसीबतें चाहे कितनी भी आएं, सफलता जरूर मिलती है। इस बात को रायसेन जिले के सिलवानी विकासखण्ड की सियरमउ गांव की श्रीमती गीता बाई ने चरितार्थ किया है। कभी आर्थिक संकट से जूझ रहीं गीता बाई ने स्व-सहायता समूह से जुड़ने के बाद आर्थिक एवं सामाजिक रूप से सशक्त पहचान बनाई है और आज प्रति वर्ष लगभग सात से आठ लाख रू आय अर्जित कर रही हैं। आठवीं कक्षा तक पढ़ीं श्रीमती गीता बाई वर्ष 2018 में गीता बाई के कुश स्व-सहायता समूह से जुड़ी। उनके द्वारा आजीविका गतिविधियों में कृषि औषधीय पौधे, जैविक सब्जियां तथा वर्मी कम्पोस्ट का उत्पादन, मत्स्य पालन एवं मुर्गी पालन का कार्य किया जा रहा है। वह महिलाओं के लिए प्रेरणा स्त्रोत बनकर उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रही हैं। गीता बाई कहती हैं कि सरकार द्वारा महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए अनेक योजनाएं तथा कार्यक्रम चलाए जा रहे है, महिलाओं को इनका लाभ लेकर आगे बढ़ना चाहिए। स्व-सहायता समूह में शामिल होने से पहले की स्थिति श्रीमती गीता बाई कुशवाह की कम उम्र में ही शादी हो गई थी। परिवार के पास 5 एकड़ जमीन थी और परिवार पूरी तरह से कृषि पर निर्भर था। जलवायु एवं मौसम में अनिश्चितता के कारण वर्षा आधारित कृषि में उत्पादन की अनिश्चितता के कारण परिवार का गुजर बसर मुश्किल से होता था। परिवार को कृषि से अधिक लाभ न होने के कारण आय के लिए मजबूरन परिवार को आसपास के ग्रामों में खेतिहर मजदूर के रूप में काम करना पडता था। इन मुश्किल परिस्थितियों के कारण परिवार को मुश्किल से 60000-80000 रूपये वार्षिक आय होती थी। जिससे उनको अपने बच्चों की बुनियादी आवश्यकताएं पूरी करने में बहुत ही समस्याएं आती थी। समूह में शामिल होने के बाद

जीवन में आया बदलाव श्रीमती गीता अपने ग्राम सियरमउ में मध्यपद्रेश डे. राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के समूह की दीदीयों से मिलीं, आजीविका मिशन की अवधारणा को समझने के बाद वह अपने गांव की महिलाओं द्वारा गठित कुश स्व सहायता समूह में शामिल हो गई, शुरुआत में महिलाओं ने प्रत्येक बैठक में 100 रुपये जमा करना शुरू किया एवं आजीविका मिशन से प्राप्त चक्रीय राशि समूह से लेकर सब्जी की खेती की शुरूआत की गई। श्रीमती गीता ने कुछ महीनों के बाद सामुदायिक निवेश निधि से कर्ज लेकर उन्होंने अपने खेत में भूमि के लिए नलकूप लगवाया, जिससे उनकी 5 एकड भूमि की सिंचाई होने लगी और उत्पादन में वृद्धि हुई। श्रीमती गीता बाई ने कृषि और संबद्ध गतिविधियों के तहत विभिन्न प्रशिक्षण प्रक्रियाओं में भाग लिया। सब्जियों की खेती में रासायनिक खाद बीज की लागत ज्यादा होने के कारण लाभ कम होता था इसको देखते हुए गीता बाई ने जैविक खेती करना शुरू किया जिसमें उनको शुरूआती दिनों में अधिक परिश्रम करना पडा लेकिन इसके बाद उन्हें इसमें लाभ होने लगा और आज वह अपनी 03 एकड की भूमि में जैविक खेती उन्नत तरीके से कर रही है। इससे उन्हें 2 से 3 लाख रूपये सालाना आय अर्जित कर रही है। जैविक सब्जी, वर्मी कम्पोस्ट का उत्पादन गीता बाई को जैविक खेती ने क्षेत्र में एक अलग पहचान दी है। परिवार द्वारा उत्पादित सब्जियां पास के बाजारों में बिकती है और सियरमऊ बाजार में जैविक सब्जियों की मांग बढ़ गई है। गीता और उनका पूरा परिवार जैविक खेती कर रहा है तथा उन्होंने अपने परिवार की आय को औसतन लगभग 2 लाख रूपए प्रति वर्ष तक बढ़ाने में सफलता हासिल की है। वह 3 एकड़ जमीन में जैविक सब्जियां पैदा करती हैं। जैविक खेती ने उत्पादन लगत को कम किया तथा पैदावार में भी वृद्धि हुई है। गीता बाई केंचुआ खाद बनाने के साथ-साथ कीटनाशक दवाई भी स्वयं से तैयार कर उपयोग करती है और उपयोग करने हेतु समूह की अन्य दीदियों को प्रेरित करती है। वह न्यूनतम मूल्य पर अन्य किसानों को भी व्यक्तिगत रूप से वर्मी कम्पोस्ट और कीटनाशक उपलब्ध भी कराती हैं। गीता बई को जैविक तरीके से कीटनाशक तैयार करने के लिए रविंद्र नाथ टैगोर यूनिवर्सिटी भोपाल द्वारा सम्मानित भी किया गया है। जैविक खेती के बाद मत्स्य उत्पादन और मुर्गी पालन भी शुरू किया जैविक खेती के अलावा श्रीमती गीता बाई और उनके परिवार ने अब मत्स्य पालन में भी एक कदम आगे बढ़ाया है। आजीविका मिशन के माध्यम से उन्होंने पहले अपनी दो एक कृषि भूमि में दो तालाब का निर्माण कराया, जिसके लिए मनरेगा की विभिन्न योजनाओं के तहत गीताबाई को सब्सिडी प्रदान की गई। मछली पालन हेतु ऋण लेकर गीताबाई द्वारा तालाबों में मत्स्य उत्पादन के लिए 12000 से 15000 बीज डाले गए। लगभग 10 महीने में ही मछलियों का 9 क्विंटल उत्पादन हुआ। इस गतिविधि ने परिवार की औसत आय को लगभग 3 लाख प्रति वर्ष तक बढ़ाने में मदद की। इससे प्रेरित होकर उन्होंने जमीन पर 03 तालाबों का और निर्माण करवाया तथा अब मछली पालन से लगभग 4 से 5 लाख रूपये कमाती है। गीता बाई की आमदनी बढ़ने से उन्होंने समूह से ऋण लेकर कड़कनाथ मुर्गी पालन छोटे स्तर पर प्रारम्भ किया और फिर इसमें बड़े स्तर पर उत्पादन के लिए पक्का शेड बनवा कर कडकनाथ पालन शुरू किया है। सुरक्षा की दृष्टि से तालाबों की सी.सी. टीवी कैमरों द्वारा 24 घंटे निगरानी की जाती है। गीताबाई द्वारा समूह की अन्य दीदीओ को भी मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है एवं उन्हें गतिविधियां करने में भी मदद करती है।

कूनो अभयारण्य में मादा चीता वीरा और दो शावक को खुले जंगल में सीएम ने छोड़ा

कूनो में चीतों की संख्या 29 हुई, मुख्यमंत्री ने कहा यह पुनर्वास परियोजना की सफलता का संकेत

श्योपुर (नप्र)। श्योपुर के कूनो नेशनल पार्क में दक्षिण अफ्रीका से लाई गई मादा चीता वीरा ने फरवरी 2025 में दो शावकों को जन्म दिया था। अब करीब नौ माह बाद गुरुवार को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने वीरा और उसके दोनों शावकों को कूनो के पारोंद क्षेत्र में खुले जंगल में रिलीज किया।

इंटरनेशनल चीता डे पर आयोजित कार्यक्रम के बाद तीनों चीते सुरक्षित रूप से जंगल में शामिल हो गए। इसके साथ ही खुले जंगल में विचरण करने वाले चीतों की संख्या 16 से बढ़कर 19 हो गई है।

सीएम बोले- कूनो को मिल रही अंतरराष्ट्रीय पहचान

चीता दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि कूनो अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना रहा है। उन्होंने कहा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में प्रोजेक्ट चीता सफल हो रहा है। चीतों के पुनर्वास ने कूनो और आसपास के क्षेत्रों में पर्यटन व रोजगार के अवसर बढ़ाए हैं। सीएम ने वीरा और उसके शावकों की रिलीजिंग को ऐतिहासिक पल बताया और कहा कि यह संरक्षण प्रयासों की बड़ी उपलब्धि है।

चीता पुनर्वास परियोजना की सफलता का संकेत

सीएम ने बताया कि वीरा और उसके दोनों शावकों का खुले जंगल में शामिल होना भारत में चीता पुनर्वास परियोजना की सफलता का मजबूत संकेत है। वन अधिकारियों ने बताया कि वन्यजीव विशेषज्ञों की टीम 24 घंटे निगरानी में लगी है और चीतों का स्वास्थ्य व गतिविधियां लगातार मॉनिटर की जा रही हैं। चीता दिवस पर मिली यह उपलब्धि कूनो और मध्यप्रदेश के लिए गौरव का विषय बनी।

कूनो में कुल 29 चीते, गांधी सागर में 3

वर्तमान में कूनो में कुल 29 चीते मौजूद हैं, जबकि गांधी सागर अभयारण्य में भी 3 चीते सुरक्षित रूप से विचरण कर रहे हैं। वन विभाग के अनुसार, चीतों की निगरानी और सुरक्षा के लिए विशेष टीमें लगातार काम कर रही हैं।

प्रधानमंत्री मोदी ने दी बधाई

अंतरराष्ट्रीय चीता दिवस पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संदेश जारी कर संरक्षण कार्यों की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि प्रोजेक्ट चीता भारतीय जैव विविधता को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है और गर्व की बात है कि अब कई चीते भारत में जन्म ले रहे हैं। प्रधानमंत्री ने दुनिया भर के वन्यजीव प्रेमियों से भारत आकर चीतों को करीब से देखने का आग्रह भी किया।

पुस्तक विमोचन और शॉप का लोकार्पण किया

कार्यक्रम के दौरान क्लिनिकल मैनेजमेंट ऑफ फ्री रेंजिंग चीता इन कूनो नेशनल पार्क पुस्तक का विमोचन किया गया। इसके साथ ही कूनो शोवेनियर शॉप का लोकार्पण और वर्ष 2025 का विशेष कैलेंडर जारी किया गया। सीएम ने बताया कि इस पहल से पर्यटन और संरक्षण दोनों को नई दिशा मिलेगी।

टीकमगढ़ में किसानों ने ट्रक से यूरिया लूटी

बोरियां लेकर लगाई दौड़, जतारा मंडी में खड़े थे ट्रक

टीकमगढ़ (नप्र)। टीकमगढ़ जिले के जतारा में गुरुवार को किसानों ने यूरिया खाद से भरे एक ट्रक से बोरियां लूट लीं। यह घटना कृषि उपज मंडी परिसर में हुई, जहां किसानों ने लगभग 40-50 बोरी यूरिया खाद लूटी। खाद की बोरियां लूटने का वीडियो भी सामने आया है।

जानकारी के अनुसार, किसानों को बांटने के लिए यूरिया से भरे दो ट्रक मंडी परिसर में आए थे। किसान लंबे समय से यूरिया के लिए भटक रहे थे, जिसके कारण वहां भारी भीड़ जमा हो गई।

भीड़ में से कुछ लोगों ने जबरन ट्रक से यूरिया की बोरियां उठा लीं। इस दौरान अफरा-तफरी का माहौल बन गया। जिसमें कुछ महिलाएं और लड़कियां भी दिखाई दे रही हैं।

कई दिन से परेशान थे किसान- पता चला है कि किसान एक पखवाड़े से यूरिया के लिए परेशान हैं। हर दिन सोसायटी और वितरण केंद्र पर सैकड़ों की संख्या में किसान खाद लेने पहुंच रहे हैं। ऐसे में जब यूरिया से भरे 2 ट्रक पहुंचे तो भीड़ में शामिल कुछ लोग खुद बोरियां उठाकर ले गए। जिससे मौके पर अफरा तफरी का माहौल बन गया। हालांकि की बाद में स्थिति संभाल गई। इस मामले की शिकायत कृषि उपज मंडी के प्रबंधक रामकुमार सोनी ने जतारा थाने में दर्ज कराई है। जतारा थाना पुलिस ने घटना की जांच शुरू कर दी है।

राज्यपाल मंगुभाई पटेल से अपर मुख्य सचिव जनसंपर्क विभाग अनुपम राजन ने आज राजभवन में सौजन्य भेंट की।

कुबेरेश्वर धाम में रुद्राक्ष महोत्सव की सुरक्षा व्यवस्थाओं की समीक्षा

उप पुलिस महानिरीक्षक ने मार्ग, भीड़ नियंत्रण, पार्किंग और आपात सेवा के निर्देश दिए

सीहोर (नप्र)। आगामी रुद्राक्ष महोत्सव की तैयारियों को लेकर उप पुलिस महानिरीक्षक देहात रेंज राजेश चंदेल ने (गुरुवार) सीहोर में अधिकारियों की बैठक ली। उन्होंने कुबेरेश्वर धाम का भी दौरा कर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। यह महोत्सव 14 से 20 फरवरी तक आयोजित होगा।

पुलिस अधीक्षक कार्यालय में आयोजित इस बैठक में मार्ग व्यवस्था, यातायात प्रबंधन, पार्किंग योजना और रोड डायवर्जन प्लान पर विस्तृत चर्चा की गई। श्रद्धालुओं के रेल, बस और ऑटो से आने-जाने की स्थिति,

एलईडी व्यवस्था, भीड़ नियंत्रण, पानी, फायर, बिजली और पीए सिस्टम जैसी सुविधाओं की भी समीक्षा की गई। कुबेरेश्वर धाम में प्रवेश और निकासी की व्यवस्थाओं को भी विस्तार से समझा गया।

उप पुलिस महानिरीक्षक राजेश चंदेल ने पुलिस अधीक्षक सीहोर दीपक कुमार शुक्ला और अन्य अधिकारियों के साथ कुबेरेश्वर धाम का भ्रमण किया। उन्होंने पुलिस कंट्रोल रूम, पार्किंग स्थल, कथा स्थल, अस्पताल और भोजनशाला जैसे प्रमुख स्थानों का निरीक्षण किया। इस दौरान अधिकारियों और मंदिर समिति के सदस्यों को व्यवस्थाओं को सुचारु बनाने के लिए आवश्यक निर्देश दिए गए।

मंडी थाने का भी निरीक्षण किया

उप पुलिस महानिरीक्षक राजेश चंदेल ने थाना मंडी का भी निरीक्षण किया। उन्होंने आईसीजेएस, ई-साक्ष्य, ई-रक्षक और मेडलीपआर जैसे विभिन्न पोर्टलों की समीक्षा की। इसके अतिरिक्त, फरार अपराधियों, अपहरण के मामलों, खात्मा, खारजी, मर्ग, गुंडा, निगरानी बदमाश और माइक्रो बीट सिस्टम जैसे विषयों पर चर्चा कर लंबित अपराधों के त्वरित निराकरण के लिए निर्देश दिए।

इस अवसर पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सीहोर सुनीता रावत, नगर पुलिस अधीक्षक सीहोर डॉ. अभिनंदना शर्मा, रक्षित निरीक्षक सीहोर उपेंद्र यादव, निरीक्षक एसबी सत्येंद्र यादव, प्रभारी यातायात सूबेदार बृजमोहन धाकड़ और प्रभारी डीएसबी रेखा जोझा सहित अन्य अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

विधानसभा में कांग्रेस विधायकों ने खराब फसलों के मुआवजे का मुद्दा उठाया

विधायक बने बंदर...हाथ में उस्तरा, भाजपा विधायकों ने पुलिस को घेरा

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश विधानसभा के शीतकालीन सत्र का आज तीसरा दिन है। सदन की कार्यवाही शुरू होने से पहले कांग्रेस ने फसलों के मुआवजे समेत कई मुद्दों को लेकर अनोखा प्रदर्शन किया।

जुन्नारदेव से कांग्रेस विधायक सुनील उईके खाद समेत कई मुद्दों को लेकर हाथ में पोस्टर लेकर बंदर के वेश में विधानसभा पहुंचे। उनके हाथ में उस्तरा भी दिखा, जिसे उन्होंने सरकार और सिस्टम का प्रतीक बताया। इस दौरान नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार भी मौजूद रहे।

इसके बाद सदन की कार्यवाही शुरू हुई तो कांग्रेस विधायकों ने खराब फसलों के मुआवजे का मुद्दा उठाया। मंत्री के जवाब से असंतुष्ट होकर कांग्रेस विधायकों ने सदन से वॉकआउट कर दिया। इसके बाद वह बाहर नारेबाजी करने लगे।

कटनी में हुई आगजनी का मामला भी सदन में उठा। जिले के तीन भाजपा विधायकों ने इसको लेकर पुलिस की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाए।

पुलिस की कार्रवाई में गड़बड़ी का आरोप लगाया- भाजपा विधायक प्रणय प्रभात पांडे ने कटनी की हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी में व्यापारी की घर हुई आगजनी के मामले में गैर जमानती गलत धाराएं लगाने के मामले में मुख्यमंत्री का ध्यान आकृष्ट

किया। इसमें विधायक द्वारा शुभम त्रिपाठी के खिलाफ की गई कार्रवाई में गड़बड़ी का आरोप लगाया गया। कहा गया कि इससे ब्राह्मण समाज में आक्रोश है।

जवाब देते हुए मंत्री नरेंद्र शिवाजी पटेल ने कहा कि निष्पक्ष कार्रवाई की गई है। किसी भी समाज में कोई आक्रोश नहीं है। इसी मामले में विधायक अभिलाष पांडे ने कहा कि शुभम त्रिपाठी के परिजन की ओर से उन्हें भी शिकायत की गई है। थाने में बुलाकर शुभम त्रिपाठी और उनके परिजन को धमकाया गया है। इसकी विधिवत जांच कर दोषी लोगों पर कार्रवाई की जानी चाहिए।

इसके बाद मंत्री पटेल ने कहा कि अगर किसी तरह की गड़बड़ी हुई तो थाने से अलग स्टाफ बुलाकर जांच कराई जाएगी। इसी मामले में मुड़वारा विधायक संदीप जायसवाल ने कहा कि थाने के सीसीटीवी फुटेज और घटना के सीसीटीवी फुटेज से बहुत कुछ स्थिति साफ हो जाएगी।

कांग्रेस विधायक ने उठाया राहत राशि का मुद्दा

कांग्रेस विधायक बाबू जंडेल ने श्योपुर जिले के किसानों के खाते में राहत राशि नहीं डालने का मामला उठाया। जंडेल ने कहा कि किसानों के खाते में राशि नहीं पहुंची है और सरकार इस मामले में सही जवाब नहीं दे रही है। इस पर हंगामा शुरू हो गया।

उन्होंने कहा कि 16000 रुपए प्रति हेक्टेयर राहत राशि दी जानी थी, लेकिन किसानों के खाते में पैसा नहीं पहुंचा है। राजस्व मंत्री करण सिंह वर्मा इस मामले में सही जवाब नहीं दे पाए। उन्होंने कहा कि कुछ खातों में राशि नहीं पहुंची है, जिसे जल्दी पहुंचाया जाएगा।

10 बच्चों से कम वाले स्कूल मर्ज किए जाएंगे

10 से कम संख्या वाले सरकारी स्कूलों को 1 किलोमीटर के दायरे में बड़े स्कूल में मर्ज किया जाएगा। साथ ही इन स्कूलों में शिक्षकों की पद स्थापना दूरस्थ खाली पड़े स्कूलों में की जाएगी। सदन में यह घोषणा स्कूल शिक्षा मंत्री राव उदय प्रताप सिंह ने विधायक अमर सिंह यादव के एक सवाल के जवाब में की।

बता दें, आज विधानसभा में 13476 करोड़ 94 लाख रुपए के दूसरे अनुपूरक बजट पर चर्चा होगी। मंगलवार को वित्त मंत्री जगदीश देवड़ा ने विधानसभा में अनुपूरक बजट पेश किया था। आज इस पर बीजेपी और कांग्रेस के विधायक चर्चा करेंगे।

वीआईटी यूनिवर्सिटी को कारण बताओ नोटिस

उच्च शिक्षा मंत्री इंदर सिंह परमार ने कहा- वीआईटी यूनिवर्सिटी को कारण बताओ नोटिस देकर जवाब देने के लिए 7 दिन का समय दिया है। उसके बाद कार्रवाई करेंगे। छात्रों पर जो एफआईआर दर्ज हुई है, वो अज्ञात नामों पर हुई है। पुलिस उसकी जांच कर रही है।

विधानसभा परिसर से चंदन के पेड़ चोरी करने की कोशिश

अज्ञात बदमाशों ने एक पेड़ काटा, दो पर आरी चलाई ; हाई लेवल सिक्योरिटी जोन में वारदात

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश विधानसभा परिसर से चंदन के पेड़ों की चोरी की कोशिश की गई। चोरों ने तीन पेड़ों को निशाना बनाया। इस वारदात ने विधानसभा की सुरक्षा पर सवाल उठा दिए हैं क्योंकि इन दिनों शीतकालीन सत्र चल रहा है और विधानसभा के आसपास हाई लेवल सिक्योरिटी है।

शीतकालीन सत्र के चौथे दिन गुरुवार को सुबह जब अधिकारी-कर्मचारी विधानसभा पहुंचे तो पार्किंग में लगे चंदन के पेड़ों में से एक पेड़ पूरी तरह कटा मिला। परिसर में लगे दो और चंदन के पेड़ों पर भी आरी चलाने के निशान मिले हैं। इन पेड़ों को गंभीर नुकसान हुआ है।इससे पहले 17 नवंबर को चोर राजधानी के वीवीआईपी 74 बंगला इलाके स्थित डीएफओ ऑफिस के बाहर से चंदन का पेड़ काट ले गए थे।

काटे पेड़- विधानसभा परिसर में पेड़ों की कटाई और चोरी की कोशिश ने अधिकारियों के माथे पर बल ला दिया है।

सीसीटीवी फुटेज देखकर पता करेंगे कि किसने सुरक्षा अमला मामले की जांच में जुट गया है। अपराधियों की पहचान के लिए सीसीटीवी कैमरे खंगाले जा रहे हैं। सुरक्षा कर्मचारियों से पूछताछ की जा रही है।

कांग्रेस बोली- सरकार सत्ता के नशे में मदहोश- पूर्व गृह मंत्री बाला बच्चन ने कहा- भारतीय जनता पार्टी की सरकार पूरी तरह से सत्ता के नशे में मदहोश है। जब चंदन के पेड़ों की सुरक्षा विधानसभा में नहीं हो पा रही तो समझ सकते हैं कि सरकार कितनी गहरी नींद में सोई है। पुलिस अवैध वसूली और लोगों को ठगने में लगी है।

खुद मुख्यमंत्री मोहन यादव के पास गृह मंत्रालय का प्रभार है। विधानसभा मध्य प्रदेश की सर्वोच्च संस्था है। यहां पेड़ कट गए हैं तो प्रदेश में लॉ एंड ऑर्डर की स्थिति का अनुमान लगा लीजिए।